सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अक्टूबर, 2011 ★ आश्विन, 2068

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

अहिंसा तीर्थ
एक संस्कार केंद्र

"मांसाहार मानवजाति पर कलंक है।
मांस जमीनसे या झाड पर नहीं पैदा होता।
निर्दोष बेजबान प्राणियों की हत्या से
मांस तयार होता है। ऐसे पाप कार्य से
लोगों को बचाओ।"

शाकाहार प्रसारक एवं गोपालक मा. श्री. रतनलालजी बाफना द्वारा निर्मित जलगाँव का अहिंसा तीर्थ शाकाहार प्रचार-प्रसार के लिये समूचा समर्पित है। यहाँ का यूटर्न म्युझियम देखकर आजतक लाखों लोगोंने मांसांहार त्यागा है। यह प्राणियों की मुक भावनाओं तथा उनकी असीम यातनाओं को बखुबी प्रदर्शित करता है

आपका अहिंसा तीर्थ में स्वागत है।

आप जैन है, शाकाहार का प्रसार करो
सच्चे महावीर बनो, धर्म का नाम उँचा करो।

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रवर्तक

रतनलाल सी. बाफना
गो सेवा अनुसंधान केंद्र
गोशालाही नहीं एक संस्कार केंद्र

अहिंसा तीर्थ, कुसूंबा, जळगांव. फोन : 2213415, 2270125 • www.ahimsatirth.com

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,

जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड

जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर

डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11

ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अह जे संवुडे भिक्खू,
दोण्ह अन्नयरे सिया।
सव्वदुक्खप्पहीणे वा,
देवे वावि महिड्ढिए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.25

संवृत हैं जो साधु यहाँ,
दो गति में से (वे) कोई पाते।
होते हैं दुःखमुक्त सर्वथा,
या फिर ऋद्धिमान् वे सुर होते।।

अक्टूबर, 2011

वीर निर्वाण संवत्, 2537

आश्विन, 2068

वर्ष 68 अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	कीर्ति का सुख	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	संथारा साधक सागरमुनिजी : एक प्रेरणास्रोत	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	कहाँ जा रहे हो राही ?	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	24
	पुद्‌गल का सुख नहीं रहता स्थिर	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.	28
	सहनशीलता	-साध्वी श्री मुदितप्रभा जी म.सा.	33
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Some Reflection on the Samaṇasuttaṃ	*-Prof. Sagarmal Jain*	35
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (70)	-श्री धर्मचन्द जैन	43
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(8)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	47
युवा-स्तम्भ-	दिमाग को धीमा करता है झूठ	-श्री ऋषभ जैन	53
धर्मकथा -	धर्म का बाह्यरूप (2)	-श्रीमती पारसकंवर भण्डारी	55
नारी-स्तम्भ-	गृह-लक्ष्मी बने समाज-सरस्वती	-डॉ. दिलीप धींग	59
बाल-स्तम्भ -	सफलता का प्रथम सूत्र	-गणाधिपति तुलसी	63
कविता/गीत-	विजय पथिक	-श्री निलेश कुमार जैन	27
	प्रभु बन जाना है	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	34
	मस्ती ही मुक्ति	-श्री रणजीत सिंह कूमट	42
	गणी हीरा गुण गायें	-श्री मनमोहनचन्द बाफना	52
	गुरु वाणी : अमृत वाणी	-श्रीमती शशी बोहरा	54
विचार-	गुरु भक्ति का फल	-सौ. कमला सिंघवी	46
	Some Beautiful Pearls	*-Miss Meenakshi Surana*	51
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (19)	-संकलित	65
	पर्युषण रिपोर्ट	-संकलित	69
	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परीक्षा-परिणाम		77
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		87
	गुणी अभिनन्दन समारोह	-संकलित	98
	श्राविका मण्डल अधिवेशन	-संकलित	100
	युवक परिषद् सम्मान कार्यक्रम		101
	श्रद्धाञ्जलि		109
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		113

सम्पादकीय

कीर्ति का सुख

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

अनुकूलता का वेदन सुख है तथा प्रतिकूलता का वेदन दुःख है। सुख एवं दुःख वस्तुतः बाह्य वस्तुओं, व्यक्तियों या पदार्थों में नहीं होता, किन्तु जिन निमित्तों से हमें अनुकूलता का अनुभव होता है उन निमित्तों पर भी हम सुख का आरोप कर देते हैं। इसी प्रकार जिन निमित्तों से प्रतिकूलता का वेदन होता है उन पर हम दुःख का आरोप कर देते हैं।

लोक में मनुष्य को विभिन्न निमित्तों से अनुकूलता की प्रतीति होती है। इसी आधार पर हितोपदेश में छह प्रकार के सुख कहे गए हैं-

अर्थागमो नित्यमरोगिता व, प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या, षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।

(1) अर्थ (धन) की प्राप्ति, (2) आरोग्य, (3) प्रिय लगने वाली पत्नी, (4) प्रियवादिनी पत्नी, (5) आज्ञाकारी पुत्र एवं (6) अर्थकरी विद्या। ये मनुष्य लोक के छह सुख हैं। सामान्य रूप से मनुष्य की समस्याएँ इनके अभाव में उत्पन्न होती हैं, अतः कवि ने इनका उल्लेख सुख के रूप में किया है। मनुष्य को अपने जीवन के संचालन के लिए जिन साधनों की आवश्यकता होती है, वे अर्थ से प्राप्त होते हैं, अतः अर्थ की आय निरन्तर होनी चाहिए। अर्थ का होना मात्र भी पर्याप्त नहीं है, उसके साथ स्वस्थता भी होनी आवश्यक है। स्वास्थ्य के अभाव में धन का उपभोग ठीक से नहीं किया जा सकता। आरोग्य या स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक तीनों स्तरों पर होना आवश्यक है। अर्थागम भी हो एवं स्वास्थ्य भी हो, किन्तु पत्नी के प्रति मन में द्वेषभाव हो, उसमें सदैव कमियां ही नजर आती हों तो भी दुःख उत्पन्न होने लगेगा। पत्नी रंग-रूप की कैसी भी हो, वह प्रिय लगनी चाहिए, नहीं तो प्रतिदिन की खटपट प्रारम्भ हो जाएगी। पत्नी हमें प्रिय लगे, किन्तु वह कर्कशकारी वचन बोलती रहे तो भी कलह का कारण बन जाता है, इसलिए उसका मृदुभाषिणी होना आवश्यक है। पत्नी मृदुभाषिणी हो, किन्तु पुत्र ऐसा हो कि जो पिता का कहना नहीं मानता हो, अपनी मनमर्जी से चलता हो तो

भी समस्या खड़ी हो जाती है। पिता-पुत्र में विवाद उत्पन्न होने से सुख-शान्ति सुरक्षित नहीं रह सकती। इसलिए पुत्र के आज्ञाकारी होने को भी सुख कहा गया है। संस्कारों में पला-बढ़ा पुत्र प्रायः संस्कारी होता है। पुत्र या तो वह बिगड़ता है जिसे अधिक लाड़प्यार में रखा गया हो एवं उसकी उचित-अनुचित हर मांग को पूरा किया गया हो अथवा वह जो कुसंगति में पड़ गया हो। अधिक डांटने-फटकारने से भी पुत्र आज्ञाकारी नहीं होता। गुरु की भांति उसे उचित-अनुचित का बोध कराते रहने पर ही उसमें आज्ञापालन की योग्यता का विकास होता है। इन सबके साथ अर्थ की निरन्तर व्यवस्था के लिए यह भी कहा गया कि हमारी विद्या अर्थकारी होनी चाहिए। आय का स्रोत बने रहना चाहिए।

सुख के ये सभी साधन लौकिक दृष्टि से कहे गए हैं। स्थानांग सूत्र के दशम स्थान में भी आरोग्य, दीर्घायुष्य, आढ्यता (समृद्धि), काम, भोग आदि लौकिक सुख कहे गए हैं। मनुष्य जीवन स्वस्थ हो, आयु दीर्घ हो, सर्वविध समृद्धि हो, अभाव न हो, काम (शब्द एवं रूप) का सुख हो, भोग (गन्ध, रस एवं स्पर्श) का सुख हो आदि लौकिक दृष्टि से सुख हैं। कोई राजनीति में दखल होने एवं पड़ौसी अच्छा होने को भी सुख का कारण कहते हैं। कोई समस्त सुख-सुविधाओं से युक्त होने को सुख मानते हैं।

इन सब सुखों में व्यक्ति जब अर्थप्राप्ति को सर्वाधिक महत्त्व देता है तो सुख के अन्य लौकिक रूप गड़बड़ा जाते हैं। कभी स्वास्थ्य की हानि होती है तो कभी पत्नी असन्तुष्ट हो जाती है, कभी पुत्र या परिवार को यथोचित समय नहीं दिए जाने से समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। अतः इन सुखों में भी सन्तुलन की आवश्यकता है।

आज लौकिक सुख की प्राप्ति ही मनुष्य का लक्ष्य रह गया है। इनमें ही वह दिन-रात उलझा रहता है। कभी इनके प्राप्त न होने पर तनाव के कारण अथवा कुसंगति से विभिन्न व्यसनों में फंस जाता है। उसे करणीय एवं अकरणीय का विवेक नहीं रहता। विवेक से हीन व्यक्ति समस्याग्रस्त होता है। वह सुख एवं शान्ति से दूर हो जाता है। वह दुःख को ही आमन्त्रित करता है। इसलिए कहा गया है-

येनैव देहेन विवेकहीनाः संसारबीजं परिपोषयन्ति।
तेनैव देहेन विवेकभाजः संसारबीजं परिशोषयन्ति।।

विवेकहीन व्यक्ति जिस शरीर को प्राप्त कर संसार के बीज को पुष्ट करते हैं, उसी देह से विवेकी लोग संसार के बीज को सुखा देते हैं। संसार का बीज ही दुःख का बीज है। विवेकी जहां समस्याओं का समाधान निकालने में समर्थ होता है, वहाँ अविवेकी व्यक्ति समस्याओं को बढ़ाता है, घटाता नहीं। कहा गया है- **अविवेकःपरमापदां पदम्।** अविवेक अनेक आपदाओं का स्थान है।

अर्थार्थी को जब अर्थ संग्रह का नशा चढ़ता है तो वह नीति-अनीति को नहीं देखता। अर्थ के प्रलोभन के कारण वह ऐसे उपायों को अपनाने में भी तत्पर हो जाता है, जिन्हें भ्रष्टाचार कहा जाता है। आजकल दूरदर्शन एवं समाचारपत्रों में भ्रष्टाचार के वृत्तान्त सुर्खियों में छापे जाते हैं। अर्थार्थी का नाम जब भ्रष्टाचार के घोटालों में छपता है तो उसकी अपकीर्ति होती है और अपकीर्ति भी अपने आपमें एक बड़ा दुःख है, क्योंकि वह प्रतिकूल प्रतीत होती है। भारतीय वाङ्मय में कीर्त्ति को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। कीर्त्ति का भी एक सुख है जो व्यक्ति को धन, स्त्री एवं सुविधाओं के सुख से बढ़कर प्रतीत होता है। महाभारत में कीर्त्ति के सम्बन्ध में कहा गया है-

कीर्त्तिंरक्षणमातिष्ठ, कीर्त्तिर्हि परमं बलम्।
नष्टकीर्त्तेर्मनुष्यस्य, जीवितं ह्यफलं स्मृतम्।।

-महाभारत, आदि पर्व, 202.10

कीर्ति की रक्षा करो, कीर्ति परम बल है। जिस मनुष्य की कीर्ति नष्ट हो जाती है, उसका जीवन निष्फल कहा गया है। अपकीर्त्ति को मरण से भी बढ़कर कहा गया है- **अकीर्तिर्हि मनुष्याणां मरणादतिरिच्यते।**

महाभारत में ही अन्यत्र कहा गया है-

कीर्त्तिर्हि पुरुषं लोके, संजीवयति मातृवत्।
अकीर्त्तिं जीवितं हन्ति, जीवतोऽपि शरीरिणः।।

-महाभारत, वनपर्व, 200.22

मनुष्य का मरण हो जाने के पश्चात् भी वह अपनी कीर्त्ति के कारण जीवित रहता है। कीर्त्ति मनुष्य को संसार में माता के समान जीवित रखती है, जबकि अकीर्त्ति जीवित व्यक्ति को भी मार देती है। भगवान महावीर, गौतम गणधर, महात्मा गांधी की कीर्त्ति आज भी विद्यमान है।

भारतीय वाङ्मय में कीर्ति अथवा यश की इतनी महिमा गायी गई है

कि व्यक्ति इसे अर्जित करने एवं सुरक्षित रखने हेतु पुरुषार्थ करता रहता है। यशः कीर्ति का प्रलोभन धन के त्यागी को भी हो सकता है। संसार की धन-सम्पदा एवं परिवार जनों का त्यागकर आने वालों में भी यश एवं कीर्ति की लालसा उत्पन्न हो सकती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य के आचरण की पवित्रता रखने के लिए उसे यश एवं कीर्ति से भी जोड़ा गया है। उसमें कीर्त्ति, सम्मान, प्रतिष्ठा, यश आदि के प्रति लालसा उत्पन्न की जाती है। अच्छा आचरण मनुष्य को यशस्वी बनाता है। इसके विपरीत आचरण में भ्रष्टता मनुष्य को तिरस्कार का पात्र बना देती है। इसलिए अधिकाधिक लोगों की दृष्टि में अच्छा कहलाने का भाव मनुष्य के भीतर विद्यमान रहता है। एक छोटा सा बच्चा भी अच्छा कहलाना चाहता है, गन्दा नहीं। अच्छा कहलाने की भावना सबमें होती है, किन्तु अच्छा बनने का प्रयत्न सबका नहीं होता। व्यक्ति बुरा करता है एवं फल अच्छा चाहता है, यही उसकी विडम्बना है।

कोई अपने क्षेत्र में दक्षता, उत्कृष्टता के आधार पर भी कीर्ति का अर्जन कर लेता है, किन्तु आचरण की पवित्रता न हो तो उसकी कीर्ति में कभी भी बट्टा लग सकता है। इसलिए आचरण का पावन होना आवश्यक है।

कीर्त्ति तो हो, किन्तु कीर्त्ति का प्रलोभन न हो तो ऐसे व्यक्ति को आध्यात्मिक साधना का पथिक कहा जा सकता है। वह वीतरागता के मार्ग पर अग्रसर होता है। वह दुःख से पूर्ण मुक्ति के मार्ग पर चढ़ता चला जाता है। जो कीर्ति को ही लक्ष्य बनाकर जीवन जीते हैं, वे एक सीमा तक अच्छा जीवन जी सकते हैं, किन्तु पूर्ण सुख की अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। क्योंकि कीर्त्ति का सुख भी लौकिक सुख है, जो निमित्तों पर आधारित है। सच्चा आत्मिक सुख लौकिक वस्तुओं, परिस्थितियों एवं व्यक्तियों पर निर्भर नहीं करता। वह इनसे अतीत होता है जो अहंत्व, ममत्व, राग-द्वेष के त्याग से अभिव्यक्त होता है।

परम सुख की प्राप्ति के लिए धन, कीर्त्ति आदि से उत्पन्न सुख का प्रलोभन त्याज्य है। ये मिलें न मिलें, इनसे साधक को आबद्ध नहीं होना है। ऐसा साधक ही निर्वाण के सुख की ओर अग्रसर हो सकता है। स्थानांग सूत्र में इसे अनाबाध सुख कहा गया है। 卐

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

के ते जोई? के व ते जोइ-ठाणे?, का ते सुया? किं व ते कारिसंगं?
एहा य ते कयरा संति? भिक्खु! कयरेण होमेण हुणासि जोइं।।

तवो जोइ जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मेहा संजम जोग संती, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं।।

के ते हरए? के य ते संतितित्थे? कहिंसि ण्हाओ व रयं जहासि?
आइक्ख णे संजय! जक्खपूइआ! इच्छामो ज्ञातुं भवतः सगासे।।

धम्मे हरए बंभे संतितित्थे, अणाविले अत्तपसन्न-लेसे।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोसं।।

एयं सिणाणं कुसलेहिं दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ते।।

पद्यानुवादः-

है कौन ज्योति, क्या स्थान ज्योति का?, स्रुव कौन तथा कण्डे कैसे?
ईंधन है कौन, शान्ति कैसी, किस होम से हवन करो कैसे?

है तपोज्योति शुभस्थान जीव, है स्रुवा योग कण्डा है तन।
कर्मेन्धन संयम शान्तिपाठ, करता हूँ मुनि का श्रेष्ठ यजन।।

ह्रद और कौन है शान्ति तीर्थ, तुम कहाँ नहा रज हरते हो?
इच्छा मेरी जानूँ तुम से, हे यक्षपूज्य! क्या कहते हो?।।

ब्रह्म शान्ति का तीर्थ, धर्म ह्रद, स्वच्छ लेश्यावाला।
उसमें नहा, दोष को छोड़ूँ, विमल शीत शुचि गुण वाला।।

कुशलों ने देखा स्नान यही, ऋषियों का उत्तम स्नान महा।
पद पाया महा-ऋषीश्वर ने, विमल विशुद्धवर, जिसमें नहा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, बारहवाँ अध्ययन, हरिकेशीय, सूत्र-43-47

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

सहिष्णुता

- संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं, जो कहते हैं-''जो हमारे धर्म के विरोधी हैं, जो हमारी आराधना को, हमारी साधना को, हमारी भक्ति को और हमारे मन्तव्यों को नहीं मानने वाले हैं, उन लोगों को अगर मार दिया जाय तो कोई पाप नहीं होगा।'' ऐसी मान्यता वाले लोग संसार में बहुत हैं। ईसा को इसीलिए सूली पर चढ़ना पड़ा। लाखों लोग धर्म के नाम पर मानव के खून के प्यासे हैं। विदेशों में रंगभेद को लेकर आज भी आए दिन मानव द्वारा मानव का खून बहाने की अप्रिय घटनाएँ घटित होती हैं। लेकिन धर्म के नाम पर यह सब अनुचित होता है।
- आज के सार्वजनिक मत-भेद और झगड़ों का प्रधान कारण असहिष्णुता ही है। आज से पहले भी जैन, वैष्णव, मुसलमान आदि अनेक मत और वल्लभ, शाक्त, शैव, रामानुज आदि विविध सम्प्रदायें थीं, परन्तु उनमें विचार भेद होने पर भी सहिष्णुता थी। इसी से उनका जीवन शान्ति व आराम से व्यतीत होता था।
- गांधीजी ने अपने अनेक व्रतों में एक 'सर्वधर्म-समभाव' व्रत भी माना है। उसकी जगह 'सर्वधर्म सहिष्णुता' मान लिया जाय तो उनके मत से हमारी एक वाक्यता हो सकती है।
- विभिन्न धर्मों के मानने वाले अनेक मनुष्य प्रत्येक धर्म पर एकसा आदर भाव कभी नहीं रख सकते। कहने के लिये भले ही, हम सब धर्म पर सम-भाव रखते हैं, यह कहकर अपना उदार भाव प्रगट करें, किन्तु जब तक आप में अज्ञानता, मोह और राग-द्वेष हैं समभाव की प्राप्ति कोसों दूर है और तब ऐसी प्रौढ़ उक्ति भी सच्ची नहीं हो सकती है।
- आजकल लोग नेता ही बनना पसन्द करते हैं, चाहे नेतृत्व की शक्ति, गुण या क्षमता का लेश भी नहीं हो। सिपाही बनना कोई नहीं चाहता। बन्दूक धरने की अक्ल न रखते हुये भी सब जनरल ही बनना चाहते हैं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

संथारा साधक सागरमुनिजी : एक प्रेरणास्रोत

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा रविवार दिनाँक 28 जुलाई, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का लेखन श्री पुखराज जी मोहनोत, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

शाश्वत स्थान को पाने वाले सिद्ध भगवन्तों, आत्मतत्त्व से एकाकार बनने वाले अरिहन्त भगवन्तों, समर्पणशील जीवन से श्रद्धा व विश्वास का भाव जन-जन में जगाने वले संत-भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

तीर्थंकर भगवन्त प्रभु महावीर का यह जिनशासन ज्ञान से, श्रद्धा से, संयम व समर्पण की पावन भावना से आज भी जयवंत है। ज्ञान से शासन की प्रभावना वाले भी हैं आज, तो श्रद्धा से इस शासन की प्रभाावना करने वाले भी हैं और तप व संयम में समर्पण के साथ शासन की जाहोजहाली करने वाले भी हैं। जैन इतिहास के एक-एक पृष्ठ को ध्यान से देखें, चिन्तन-मनन करें तो ज्ञान से, श्रद्धा से, तप व संयम से, शासन व गुरु के प्रति समर्पण से धर्म व शासन के प्रति अश्रद्धा रखने वालों के अन्तर में श्रद्धा के भावों को जागृत कर, अनित्यता से उनके मन को हटा, नित्यता के भावों में स्थिर बनाने वाले अनेक आचार्यों के अनेक नाम आज भी मिल जायेंगे। हमारे समक्ष उनका शरीर तो नहीं है, पर जिनानुयायियों के ज्ञानादि गुणों की महक आज भी विद्यमान है और वर्तमान में जिनशासन के इस उद्यान को महका रही है। प्रभव, शय्यंभव, भद्रबाहु, हेमचन्द्राचार्य आदि एक-एक आचार्य ऐसे हैं, जिन्होंने संघ और शासन की महती प्रभावना की और हजारों-हजार को संघ व शासन के प्रति श्रद्धावान बनाया।

ज्ञानीजन इस जीवन को एक खेल बताते हैं और जीवों को खिलाड़ी। वे कहते हैं कि जीवन के इस खेल को इस तरह खेलें कि खेलने वाले खिलाड़ियों का जीवन तो आदर्श बने ही, पर साथ ही साथ इस खेल को देखने वाले हजारों-लाखों दर्शक इसे देखकर जागृत बनें, उनमें श्रद्धा व समर्पण का वैसा ही भाव जगे।

इस जीवन को नाटक भी कहा गया है। है भी यह जीवन एक नाटक ही। जीव को चाहिए कि वह इस नाटक को महावीर की तरह, राम और कृष्ण के तरह अभिनीत करें और इस मर्यादा के साथ नाटक खेलें कि उससे जन-जन कुछ सीखें। आपका वह नाटक युगों तक लोगों की स्मृति में रहे, पीढ़ियाँ उसे याद करे और याद कर-कर के कुछ न कुछ ग्रहण कर आगे बढ़े।

आज जिन महापुरुष की पुण्यतिथि आप और हम यहाँ पाप हटा अर्थात् पावटा के स्थानक में तप-त्याग सहित मना रहे हैं, उस महापुरूष ने भी ऐसा ही एक खेल खेला और जीवन को, जन्म को सार्थक बनाया। पत्थरों को परखने वाले जौहरी कुल में जन्म लेकर इस लाल ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र के रत्नों की परीक्षा करने में अत्यन्त कुशलता प्राप्त की। आचार्य भगवन्त फरमाते थे-कभी-कभी उच्च कुलों में ऐसे पुण्यशाली जीव जन्म लेते है, जिन्हें जरा-सा भी सत्संग मिल जाये, तनिक-सा भी सद्धर्म का रंग लग जाए तो उनके जीवन में बदलाव आ जाता है, आत्म-जागृति हो जाती है और वे पद-पदार्थ से सर्वथा मन हटा कर स्व में आसीन हो जाते हैं। इसके विपरीत कुछ ऐसे जीव भी अच्छे-अच्छे कुलों में आते हैं जिन्हें जीवनभर सत्संग मिलता है, श्रुतवाणी श्रवण का लाभ मिलता है, पर उनके जीवन में बदलाव नहीं आता, आत्मा जागृत नहीं बनता, धर्म-ध्यान में मन नहीं रहता।

जौहरी कुल के जिस लाल का यहाँ कथन चल रहा है, उसे सद्गुरुओं का संग मिला, श्रुतवाणी श्रवण का लाभ मिला तो ऐसा केशरिया रंग चढ़ा कि पूरा जीवन ही संयम-साधनामय बन गया। वे साधना के उच्च-उच्चतर उच्चतम-शिखर पर पहुँचे। उन्होंने उस पवित्रता को प्राप्त किया कि जीवन ही परम पावन बन गया। आज भी उनका वह पावन जीवन जन-जन को पवित्र बनने, जागृत बनने, धर्म से जुड़ने का सन्देश दे रहा है।

राजस्थान प्रान्त के किशनगढ़ नगर में पिताश्री फूलचन्दजी लोढ़ा और माताश्री पहपदेवीजी की रत्नकुक्षि से आषाढ़ शुक्ला द्वादशी संवत् 1944 की पावन वेला में उत्पन्न इस लाल की दीक्षा 28 वर्ष की आयु में आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के श्रीचरणों में जयपुर में पौष शुक्ला द्वितीया के शुभ दिन विक्रम संवत् 1972 में सम्पन्न हुई। संवत् 1972 की मार्गशीर्ष कृष्णा द्वादशी को आचार्यश्री के स्वर्गवास होने के पश्चात् इसी वर्ष फाल्गुन कृष्णा अष्टमी के पावन दिवस पर मुनिश्री शोभाचन्द्रजी म.सा. को अजमेर में आचार्य-पद प्रदान

किया गया।

आचार्य बनने के वर्षों बाद आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने अपने संयमी जीवन के संस्मरण सुनाते हुए मुनि श्री सागरमलजी म.सा. के लिए जो कुछ कहा, आपके समक्ष उनके भाव कह रहा हूँ:- बहुत दीक्षाएँ देखी, दीक्षित चारित्र भी अनेकानेक देखने के अवसर मिले, पर मुनि श्री सागर के संयमी जीवन में जो समर्पण का भाव देखा, वह अन्यत्र नही देखा। साधक अवस्था में कभी मैं भी उनके समीप चला जाता, सेवा में उनके निकट बैठ जाता तो वे कहते-मैं तो पापी जीव हूँ। मेरे पास नहीं आप पूज्य आचार्य भगवन्त श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के पास जाकर बैठो। उनके पारिवारिकजन आते, वंदन कर उनके निकट बैठते तो वे उन्हें भी यही कहते।

आगम में साधु के लिए 'काले कालं समाचरेत्' का विधान दिया गया है। यहाँ भी उनके समर्पण भाव की बात कहूँ। उनका संयमी-जीवन सम्बन्धी प्रत्येक कार्य निश्चित समय पर होता। प्रतिलेखना करते समय कोई भक्त आता तो हाथ ऊपर कर देते, पर मुख से कोई शब्द उच्चारित नहीं करते। प्रतिक्रमण के समय प्रतिक्रमण करते ही। प्रभु आज्ञा उन महापुरुष के लिए सर्वोपरि थी। नहीं था विशेष ज्ञान, पर जीवनचर्या अनूठी, अनुपम, असाधारण थी। सभी यह बात जानते थे कि यदि सागरमुनिजी स्थानक में विराज रहे हैं तो वे स्थानक के अन्य किसी स्थान पर नही मिलेंगे, वे मिलेंगे केवल और केवल गुरुचरणों में, गुरु भगवन्त के निकट, गुरुवर्य की सेवा में।

आगम-ग्रन्थों में मोक्ष के अनेक मार्ग बताए हैं, यथा-सत्रह प्रकार का संयम, दस प्रकार का यति धर्म, पंच महाव्रत पालन, ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप का आराधन। संक्षेप में कहूँ तो सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः, फिर कहूँ तो-ज्ञानक्रियाभ्याम् मोक्षमार्गः। मोक्ष के दो मार्ग-ज्ञान और क्रिया। पर महामुनि, महापुरूष सागरमलजी महाराज के लिए तो संसार-सागर से तिरने अर्थात् मोक्ष प्राप्ति का एक ही उपाय था-जो उत्तराध्ययन में कहा गया है-छंदं निरोहेण उवेइ मोक्खं। अपनी इच्छा से कुछ मत करो-गुरु आज्ञा से करो, अतः श्वास लेने और पलक झपकने के अतिरिक्त प्रत्येक कार्य में गुरु आज्ञा होनी चाहिए। ज्ञान की साधना करो चाहे तप की आराधना करो, स्वाध्याय में लगो या भिक्षाचरी के लिए प्रस्थान करो-कार्य कैसा भी, कोई भी हो, गुरु आज्ञा से करना है, गुरु की अनुज्ञा में करना है। आगम पढ़े जाते हैं, विवेचित किए जाते

हैं, पर क्या सब कुछ वैसा ही जीवन में उतारा जाता है ? सभी आचार्य, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाएँ बात कहते तो शास्त्रसम्मत हैं, पर तदनुसार करते कितने हैं ? वे महापुरुष बिरले ही होते हैं जो अपनी संयम-साधना की दिनचर्या प्रातः से संध्या और संध्या से प्रातः तक प्रतिदिन वीतराग भगवन्तों की वाणी के अनुरूप व्यतीत करते हैं। जो उसमें सजग नहीं हैं-उन्हें जीवन को सागरमुनि की तरह बनाना है, उनका अनुकरण करना है, उनकी तरह प्रवृत्तियाँ-क्रियाकलाप करने हैं। इतिहास ऐसे ही महनीय पुरुषों के गीत गाता है, जन-जन की जिह्वा पर उन्हीं की गाथा रहती है, कथाओं-व्याख्यानों-वाचनाओं में उदाहरण उन्हीं के दिए जाते हैं, जो पढ़ने-सुनने कहने के साथ-साथ अपने जीवन में वैसा ही परिवर्तन लाते हैं। दृष्टान्त के दावेदार वे ही होते हैं जो गुरु आज्ञा के अनुरूप अपने जीवन को ऐसे साँचे में ढालते हैं कि स्वयं किसी दिन गुरु सम जीवन बना लेते हैं।

सागरमुनि वैसे ही विरले महनीय पुरुष थे। गुरु ने जो कहा, वह उनके लिए ब्रह्मवाक्य बन जाता था। ऐसे समर्पित जीवन बनाने वाले ही गुरु के हृदय में स्थान बनाते हैं। यह कहा जाता है कि-संसार में वे पुरुष धन्य हैं जिनके अन्तर में गुरु का वास रहता है, पर वे महापुरूष धन्य-धन्य हैं, महान भाग्यशाली हैं जो शिष्य होकर भी अपनी श्रद्धा, अपने समर्पण, अपने विनय व सेवा-भाव के कारण गुरु के हृदय में स्थान बनाते हैं।। ऐसे विरले, निर्मल, सरल शिष्यों के लिए गुरुमुख से अनायास प्रशंसा के शब्द निकल जाते हैं। सम्पूर्ण जगत में भक्त अपने-अपने गुरु का गुणगान करते हैं, उनके गीत गाते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं। मैं भी अपने धर्माचार्य गुरु भगवन्त का स्मरण करता हूँ, उनके गुणों की महक को जन-जन तक पहुँचाता हूँ। आप भी अपने-अपने गुरु भगवन्तों की प्रशंसा करते हैं, गुणकीर्तन करते हैं पर बिरले वही होते हैं, जिनकी गुरु स्वयं अपने श्रीमुख से प्रशंसा करते हैं।

'काले कालं समाचरेत्'-सागरमुनिजी के जीवन का मुख्य सूत्र था। जिस समय जो काम करना, उसे उस समय ही करते। साधक का यह सर्वोपरि गुण माना जाता है। मुनिजी ब्रह्ममुहूर्त में उठते, स्वाध्याय करते, फिर प्रतिक्रमण होता और तब प्रतिलेखना। उसके बाद पुनः प्रातः का स्वाध्याय। यह सब था, पर स्वाध्याय आदि के साथ ही सेवा के किसी भी कार्य में वे पीछे नहीं रहते। वैयावृत्त्य तप ही उनके संयम जीवन का वास्तवित तप रहा।

सेवा, समर्पण, विनय, श्रद्धा-ये जहाँ हों, जिनमें हों, वे गुणी व्यक्ति दूसरों के गुणों को देखते हैं। गुण नहीं जिनमें, कमियाँ और दोष हों जिनमें, उनकी नज़र दूसरों के गुणों पर नहीं, उनकी कमियों, उनके अवगुणों और दोषों पर जाएगी। गुणी की नज़र अपने अवगुणों पर जाती है। सागरमलजी महाराज कहा करते थे-मुझसे न तप होता है, न ज्ञान-साधना। एक उपवास करता हूँ तो पित्त पड़ने लगते हैं, गले में काँटे पड़ जाते हैं। दूसरा उपवास तो कर ही नहीं पाता हूँ। तप शरीर की अनुकूलता से होता है, पर उनकी शारीरिक अवस्था तपाराधना के अनुकूल नहीं थी। ज्ञान साधना में भी क्षयोपशम मंद था। पाँच गाथा वे पूरी याद नहीं कर सकते थे, पर अपने एक गुण से ही उन्होंने जन्म व जीवन को सफल बना लिया और वह गुण था-गुरु के प्रति समर्पण का भाव।

गुरु आज्ञा में रहते-रहते और आज्ञानुरूप प्रवृत्तियाँ करते-करते उन्होंने अपने गुरु के हृदय में ही नहीं, अपितु जन-मन में, सर्वत्र सभी के हृदयों में एक विशिष्ट प्रकार का विश्वास उत्पन्न कर दिया था। इसी विश्वास के कारण संघ में स्वामीजी श्री सुजानमलजी म.सा. तथा स्वामीजी श्री भोजराजजी म.सा. जैसे अनेक बड़े-बड़े दिग्गज संतों के रहते हुए भी आचार्य भगवन्त ने सतारा के परम भक्त और संघसेवी श्री मोतीलालजी मूथा से कहा-संघ में जब कभी कोई समस्या आए तो सागरमलजी महाराज से पूछ लेना।

चिन्तन करिए-आचार्य कौन और संघ समस्या के लिए किनसे समाधान कराने का कहा गया ? क्यों कहा पूज्य भगवन्त ने ऐसा ? गुरुचरणों में समर्पण, श्रद्धा, विनय व सेवाभाव का प्रतिफल था यह।

उन महापुरुष के सम्बन्ध में गुरुदेव पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. ने जो कहा, उसे आपको सुना रहा हूँ-

गुण सागर के गा प्राणी, संथारे की दिल ठानी।।टेर।
लोढ़ा कुल का यह नन्दन, सौम्य, शान्त मल है चन्दन, रत्नों सम आतम ज्ञानी...संथारे
पलक प्रमाद नहीं तन में, थी भक्ति गुरु चरण में
सेवा में सब सुख मानी..............संथारे।।1।
तन बुद्धि बल सीमित था, ज्ञान-ध्यान भी परिमित था।
निरोध बने ज्ञानी, संथारे की दिल ठानी।।2।।
जन्म संवत् 1944 का, दीक्षा संवत् 1972 की। ग्यारह वर्ष की दीक्षा

पर्याय हुई होगी उनकी, तभी जोधपुर में वि. सं. 1983 की श्रावण कृष्णा अमावस्या के दिन आपके गुरु आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. का संथारे के साथ स्वर्गवास हो गया। गुरु का साया, गुरु का वरदहस्त मुनि सागरमलजी के सिर से उठ गया। चिन्तन किया-गुरु चरणों में कुछ भेंट करूँ। उसी समय संकल्प लिया-गुरुवर चले गये, अब मुझे जीवन पर्यन्त कैसी भी परिस्थिति में दवा नहीं लेनी है।

अपने संकल्प को जीवन की अन्तिम श्वास तक मुनिजी ने दृढ़ता से निभाया। उनके इस संकल्प से प्रभावित व्यक्तियों ने कहा-धन्य है सागरमुनि, संयम में इन्होंने दोष नहीं लगाया। अस्वस्थता कई बार आई होगी, पर संकल्प में दृढ़ता थी अतः कोई चिकित्सा, कोई डॉक्टरी, वैद्य परीक्षण नहीं, कोई दवा नहीं, दवा के निमित्त सौंठ, लोंग तक नहीं लिया। आज अस्वस्थता का कारण बनते ही क्या होता है ? हम भी जानते हैं और आप भी। अपनी अस्वस्थता से हम मुनि जितना परेशान नहीं होते, उससे अधिक परेशानी हमारे लिए आप लोग जताते हैं। हम शायद स्वास्थ्य के गिरने से जितने कमजोर बनते हैं उससे अधिक कमजोर हमें आप लोग बना देते हैं और फिर डॉक्टर, परीक्षण, दवाइयों का क्रम चलता है। बीमारी कैसी ? कोई विशेष नहीं। डॉक्टर की वहाँ कतई जरूरत नहीं पर-अमुक बीमार पड़े थे, ऐसी ही बीमारी थी, डॉक्टर आया था और अमुक के तो दो-दो डॉक्टर आते थे। मैं अभी डॉक्टर ले आता आदि बातें यहाँ-वहाँ सर्वत्र हो जाती हैं।

इस शरीर के प्रति स्वयं का राग यदि हो तो सोचता है- मैं बीमार, पर मेरे लिए डॉक्टर क्यों नहीं, दवा क्यों नहीं ? गुरु के शरीर के प्रति भक्तों के मन में राग-भाव हो तो भी और स्वयं के शरीर के प्रति अपना राग हो तो भी चिकित्सा का प्रश्न खड़ा होता है। बीमारी की बात एक तरफ कर दीजिए, आज तो ताकत बढ़ाने के लिए टॉनिक का सेवन किया जाता है, आप गृहस्थों में और हम साधु-साध्वी वर्ग में भी। विटामिन टेबलेट्स ली जाती हैं, च्यवनप्राश खाया जा रहा है, आँवले का मुरब्बा लिया जा रहा है, और भी चीजें हैं, किन-किन के नाम गिनाऊँ। यह सब हम साधु-साध्वी के लिए लिए शास्त्र सम्मत नहीं है। वर्जनीय हैं ये चीजें। साधुवर्ग तो शरीर चलाने के उद्देश्य से ही आहार करता है, पर ऐसा हो नहीं रहा है। गरिष्ठ और स्वादिष्ट भोजन को प्राथमिकता दी जा रही है।

उत्तराध्ययन सूत्र के 24 वें अध्ययन में अष्ट प्रवचन माताओं अर्थात् पाँच समितियों व तीन गुप्तियों का विवेचन है। साधु के लिए इनका पालन अनिवार्य है। पाँच समितियों में पहली है-ईर्या समिति। इसमें बताया गया है कि साधक को इस प्रकार सावधानी से गमनागमन करना चाहिये। गमनागमन का अर्थ यहाँ साधक की चर्या से है जिसमें साधक का उठना-बैठना, सोना-जागना आदि सभी चर्याएँ आ जाती हैं। साधक की ये चर्याएँ ऐसी हों कि किसी भी प्राणी को क्लेश न हो। वह निरुद्देश्य गमन न करे। ज्ञान-दर्शन-चारित्र के उद्देश्य से गमन करे। आवश्यकता होने पर विशेषकर रात्रि में प्रमार्जन करता हुआ गमन करे। मार्ग-मार्ग चले, उन्मार्ग से जाने में आत्मविराधना की संभावना रहती है। इसी तरह भाषा समिति में साधक क्रोधवश आवेश मे नहीं बोले, उसके बोलने में अहंकार का पुट न हो, छल-कपट की भाषा न बोले, लाभ-लालच के वशीभूत न बोले, उसके बोलने में हास्य, भय, मुखरता न हो, वह विकथा न करे।

इन दो समितियों में साधक अर्थात् हम स्वयं साधु और साध्वी सावधानी रखते हैं। इनमें सावधानी रखना हमारे स्वयं के वश की बात है, पर तीसरी ऐषणा समिति जिसमें साधु-साध्वी के लिए गृहस्थी के घरों से भिक्षादि लेने की निर्दोष प्रवृत्ति का कथन है, उसमें सावधान बने रहना हमारे अकेले के वश की बात नहीं है। वहाँ आपका साधु-साध्वी के प्रति राग-द्वेष, आग्रह और अपने को विशिष्ट स्तर का प्रदर्शित करने का भाव आपको और हमें दोनों को दोष लगाने में सक्षम है। उसमें भी अस्वस्थता के समय तो भक्तों के आग्रह में कुछ अधिक ही प्रबलता बन जाती है।

मुनि श्री सागरमलजी महाराज ने चिन्तन किया-साधु को तो समाधि भंग होने की स्थिति में ही दवा का सेवन करना चाहिये। गुरु भगवन्त के चले जाने पर इसी चिन्तन के कारण सागरमुनिजी महाराज ने औषधि सेवन का त्याग किया था। वे अपने इस संकल्प में आजीवन दृढ़ बने रहे। साधक अपने संकल्प में, नियम के प्रत्याख्यान में कमजोर कब होगा, ढीला कब बनेगा ? तब जब साधक की स्व-शरीर के प्रति आसक्ति हो, शरीर के प्रति अन्तर में राग-भाव की विद्यमानता हो, शारीरिक-सुखों के लिए मन जागृत बन गया हो। सागरमुनिजी महाराज के मन में स्व-शरीर के प्रति ममत्व भाव नहीं के बराबर हो गया था, अतः वे दवाओं के त्याग का संकल्प ले सके। शरीर तप-साधना

में अनुकूल नहीं था, पर उनका भोजन भी उतना ही होता था जितने से शरीर संयम साधना के लिए गुरु सेवा के लिए तत्पर बना रह सके।

संवत् 1944 का जन्म, संवत् 1972 की दीक्षा , संवत् 1983 में गुरु का स्वर्गगमन और सागरमुनिजी का दवाओं के त्याग का संकल्प, संवत् 1984 में शरीर ने अपने स्वभाव का प्रदर्शन प्रारम्भ किया। लगता था, उनका शरीर उनके संकल्प का परीक्षण लेने को तत्पर हो गया। अशक्ति व अस्वस्थता ने घेरना प्रारम्भ किया। आयु मात्र 40 की, शरीर को दवाओं की आवश्यकता है, आहार लेते, पर पचता नहीं। धीरे-धीरे स्थिति ऐसी आई कि थोड़ा-सा खाते और पेट फूल जाता, आफरा आ जाता, लगता जैसे पेट को भोजन की जरूरत नहीं।

चिन्तन चला-पेट में भोजन पचता ही नहीं, भोजन करने पर तकलीफ होती है तो भोजन करना ही क्यों ? जबरदस्ती पेट में उंड़ेलना अब बन्द कर देना चाहिये। संवत् 1985 में किशनगढ़ विराज रहे थे तब आहार की यह वेदना और बढ़ी और संथारे की भावना अन्तर में जाग उठी। आज तो नहीं खाएं तब सुना दिया जाता है-नहीं खाएंगे तो ताकत कैसे आएगी ? शरीर कमजोर हो जाएगा। खाने की इच्छा नहीं है, रुचता नहीं तो दो कौर ही खाएं, कुछ न कुछ तो पेट में डालना होगा। खाने का मन न करे तो पौष्टिक पेय ही पीओ। ऐसी ही अनेक बातें कही जाती हैं।

शायद उन्हें भी ये सब कहा गया होगा, पर मुनिजी ने तो संथारे का प्रबल मानस बना लिया था। अनन्त अनन्त पुण्य पुंज से आता है साधक का संथारा। हमारे इस शासन में, वर्तमान में कितने साधक ? प्रतिक्रमण में पाँच पदों की भावना में आप श्रावक-श्राविका कहते है-जघन्य दो हजार करोड़ और उत्कृष्ट नौ हजार करोड़ जयवन्ता विचरण करते हैं, पर संथारा कितनों को आता है? नहीं आता, हर किसी को। हजारों-लाखों में से किसी एक महान पुण्यशाली, भाग्यवान को ही आता है संथारा।

तीन मनोरथों में अन्तिम मनोरथ है-संथारे का आना। यह तीसरा मनोरथ किसी-किसी बिरले महापुरुष का ही पूर्ण होता है। आयु 41 वर्ष की। समय के अनुसार और-और बातें कहने के साथ अवस्था वाला कभी संथारे की बात कहे तो समझ में आती है, पर बिना अवस्था, बिना समय के जीवन की अनित्यता का बोधकर जो संथारे की बात कहे तो बड़े-बड़ों के दिल-दिमाग में

नहीं बैठती।

अपनी भावना साथ के संतों के समक्ष प्रकट की। पास में थे बड़े संत स्वामी श्री लाभचन्दजी म.सा., लालचन्दजी म.सा. आदि। उन्होंने कहा कि – हम इस विषय में कुछ कहने की स्थिति में नहीं हैं। संथारा कराना या नहीं ? इस विषयक निर्णय लेने में तो संघाचार्य या फिर व्यवस्थापक ही सक्षम हैं। आचार्य भगवन्त रीयाँ में विराजमान हैं और स्वामी श्री सुजानमलजी म.सा. जो संघ व्यवस्थापक हैं, वे नागौर में विराज रहे हैं। हम उनके पास संदेश भिजवा देते हैं फिर जैसा उनका आदेश, वैसा ही होगा।

सागरमुनिजी ने चिन्तन किया–शायद तब तक देर हो जाए। शरीर का क्या भरोसा ? काल तो किसी भी क्षण आ सकता है। आयुष्य समाप्ति के पश्चात् क्या ? इस साधक को खाली ही जाना पड़ेगा। वे बोले– आप लोग संथारा नहीं कराएंगे और आने वाले मेहमान के समय का कोई पता नहीं, जाने कब पधारे और ये चलने वाले श्वासें रुक जाएँ।

साथ के संतों ने असमर्थता बताकर समाचार नागौर व रीयाँ भिजवा दिए। सागरमुनिजी ने तब तक उपवास के प्रत्याख्यान लेकर उपवास करना प्रारम्भ कर दिया। जीवन भर तप से दूर रहने वाले मुनिजी ने तप–साधना का क्रम प्रारम्भ कर दिया। रीयाँ में समाचार पहुँचा। आचार्यश्री ने रीयाँ से विहार कर दिया। पीपाड़ पहुँचे वहाँ एक अच्छे ज्योतिषी थे–धूलचन्दजी सुराणा। वे अच्छे वैद्य, अच्छे घड़ीसाज एवं कवि भी थे। आचार्यश्री के साथ थे स्वामीजी श्री भोजराजजी महाराज। पीपाड़ में उन्होंने धूलचन्दजी से पूछा–सागरमलजी महाराज संथारा करना चाहते हैं। आपका ज्योतिष ज्ञान इस विषय में क्या कहता है ?

अपनी गणना से और नक्षत्रों की स्थिति देखकर वैद्य धूलचन्दजी ने कहा–संथारा लम्बा चलेगा। एक मास व्यतीत होने के बाद ही संथारा सीझेगा। नक्षत्र यही बताते हैं। आचार्यश्री की सेवा में स्वामीजी ने यह कह दिया। पीपाड़ से विहार कर आचार्यश्री व स्वामीजी आदि संत पच्चीस दिनों में किशनगढ़ पहुँच गए। मुनिजी के तप चालू था। आचार्य भगवन्त ने उनके चेहरे को पढ़ा वहाँ कोई उद्विग्नता नहीं थी, पूर्ण शांति थी और धैर्य विराजमान था। उन्होंने मुनिजी का संथारा करवा दिया।

तब आषाढ़ आ चुका था। भंयकर उष्णता से धरती, गगन, दिशाएँ

सभी तप्त-संतप्त बने हुए थे। समय व्यतीत होने लगा। संथारा आगे बढ़ने लगा फिर आषाढ़ भी उतरने लगा। कहीं पर वर्षा नहीं। बून्दा-बांदी भी नहीं। गगन में आषाढ़ी-मेघों का नामोनिशान तक नहीं। किशनगढ़ निवासी जैन व जैनेतर सभी लोगों तक मुनिश्री के तप, उनके संथारे की बात पहुँच गई थी। ''मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना'' लोगों में तरह-तरह की बातें होने लगी। जैनेतर व संयम-तप आदि में अश्रद्धा रखने वाले लोग तो संथारे के विरुद्ध बातें करते ही थे, पर श्रद्धावान भक्त भी ऐसा ही चिन्तन बनाने लगे। सर्वत्र काना-फूसी, स्थान-स्थान पर इस महातप के विरुद्ध वातावरण बनने लगा। किशनगढ़ के हर मौहल्ले में चर्चा चलने लगी कि-एक संत को भूखा रख कर मारा जा रहा है, यही कारण है कि अब तक वर्षा नहीं हुई।

भारत में तब अंग्रेजों का राज्य था और गाँवों-कस्बों में ठाकुरों-राजाओं का। एक दिन गुरुभक्त और धर्मनिष्ठ कहे जाने वाले श्रावक गंभीरमलजी सांड ने बग्घी पर खड़े होकर एकत्रित जनता के बीच कहा-यह उचित नहीं है। एक संत को मारा जा रहा है। गोपीचन्दजी, अमरचन्दजी छाजेड़ ने भी सुना, छाजेड़ों की हवेली के बाहर चौक में इसी बात को लेकर सभाएं हुई। लोग कहने लगे संत का संथारा तुड़वा देना चाहिये। महाराज को इस बात का पता चला। राज्य का दीवान अंग्रेज था। उसे स्थिति जानने के लिए भेजा गया। दीवान स्थानक पहुँचे और मुनिजी से प्रश्न किया-आपको ये लोग क्यों मौत के मुँह में पहुँचाना चाहते हैं ? इन सभी ने आपका आहार क्यों बंद कर दिया है?

अत्यन्त शांत स्वर में कहा गया-मुझे कोई नहीं मार रहा है। मैं स्वेच्छा से तपाराधन कर रहा हूँ, अत: मैंने आहार का त्याग कर दिया है।

सुनकर दीवान ने कहा-आप यह कहना चाहते हैं कि आप जान-बूझकर अपने-आप को मार रहे हैं। मुनिश्री मुस्कुराए। कुछ क्षण शान्त रहकर बोले -मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ-पूछिए-दीवान के यह कह देने पर सागरमुनिजी ने पूछा-आप जिस घर में रह रहे हैं, उस घर का मालिक आपको घर से निकाल देना चाहता है। उसका कहना है कि आप शीघ्रातिशीघ्र मकान खाली कर दें। वह आपको कुछ समय देता है घर खाली करने के लिए और यह कहता है कि अमुक अवधि में घर खाली नहीं हुआ तो सभी को धक्के मार-मार कर बाहर निकाल दिया जाएगा, ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे ?

दीवान ने प्रत्युत्तर में कहा-धक्के खाकर निकलना कौन पसन्द करेगा? मैं स्वयं ही उस मकान को छोड़ दूंगा। बस यही बात मेरे साथ है। मेरा शरीर अब काम नहीं करता, वह मुझे छोड़ देना चाहता है, ऐसी दशा में क्यों नहीं मैं स्वयं उसे छोड़ दूँ ? आहार त्याग मैंने अपनी इच्छा से किया है। मुझे भूखा रखकर मारा जा रहा है, यह सोचना पूर्णतः असत्य है।

दीवान समझ गया कि यह आत्महत्या का केस नहीं है। लोगों की सोच ही गलत है। ये मुनिजी जो कर रहे हैं, स्वेच्छा से कर रहे हैं, अपने शरीर में समाधि रहते हुए कर रहे हैं। मुनि को नमन कर दीवान चले गए। दरबार को वास्तविक स्थिति बता दी। आप सभी समझ गए होंगे, जानते हैं आप तो। आत्महत्या, हत्या और संथारे में रात-दिन का अन्तर होता है।

आत्महत्या भय, कामना, परेशानी, चिन्ता व घबराहट से की जाती है। हत्या प्रलोभन से या बदले की भावना से की जाती है। इच्छापूर्ति न होने पर या पाप के फल को भोगने के भय से होती है हत्या या आत्महत्या। संथारा मृत्यु-सन्निकट जानकर, अवस्था सम्पन्न होने पर, पूर्ण समाधि के रहते हुए स्वेच्छा से आत्मकल्याण की भावना के साथ किया जाता है। संथारे में कोई प्रलोभन, किसी तरह की कामना अथवा कोई भय नहीं होता। संथारा तो एक विशिष्ट साधना है, तप है, एक विशिष्ट योग है। शरीर से आसक्ति को पूर्णतः हटाकर मन की अशुभ भावनाओं की आहुति का नाम है संथारा। जीव को सबसे बड़ा भय मृत्यु होता है। संथारे द्वारा साधक मृत्यु पर विजय प्राप्त कर मृत्युञ्जयी बनता है।

आत्महत्या स्वयं व्यक्ति द्वारा जीवन से घबराकर, परेशान होकर नदी, तालाब, समुद्र में डूबने से अथवा ज़हर, रासायनिक कीटनाशक आदि के लेने से मरण प्राप्ति को कहते हैं। हत्या में कोई एक व्यक्ति, किसी अन्य को ईर्ष्या, द्वेष, बदले से मौत के घाट उतारता है। संथारा तो साधना है जो पूर्ण समाधि की स्थिति में शांत मन से इच्छा पूर्वक लोगों के व गुरु के समक्ष प्रकट कर ग्रहण किया जाता है। आत्महत्या आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा अपराध है और कानून सम्मत भी नहीं है। हत्या तो दण्डनीय अपराध है ही। संथारे द्वारा समाधिमरण कोई अपराध नहीं है, अपितु वह तो अपराधों के क्रियान्वयन की जड़ कषायों को काटने वाला होता है। आत्महत्या व हत्या में व्यक्ति अत्यन्त कष्ट पाता है, मन क्लान्त व त्रसित बनकर हाय-त्राय करता है, आर्त्त और रौद्र

ध्यान की उत्पत्ति होती है वहाँ समाधिमरण में तीव्र उज्ज्वल-समुज्ज्वल वेदना तो होती है, पर मन के हर कण में वीतराग-वाणी का आघोष गूँजता रहता है- देहदुक्खं महाफलं।

समाधि का अर्थ ही चित्त की एकाग्रता है। जिस मरण अर्थात् देह त्याग में चित्त अशांत न बने, आकुल-व्याकुल न बने, आत्मा के उत्थान के ध्यान में एकाग्रता रखे, वह है समाधिमरण। इसे मरण-महोत्सव भी माना जाता है। साधक तो इसे महा-महोत्सव भी कहते हैं। मरण को निकट देखकर साधक अन्तरात्मा से कहता है- "आहारमुवहिं देहं, सव्वं तिविहेण वोसिरामि", आप इसे इस तरह कहते हैं-आहार, शरीर, उपधि, पचखूँ पाप अठार। कैसी उत्कट तत्परता बन जाती है। रोम-रोम, मन का कण-कण, जीवन का क्षण-क्षण तब कहने लगता है-भंते! मैं हिंसा, झूठ, चोरी आदि अठारह पापों का तीन करण, तीन योग से त्याग करता हूँ। संथारे में तीन या चारों आहार के त्याग के साथ 18 पापों के त्याग से ही इस साधना की सफलता मानी जायेगी।

मृत्यु ही जीवन का अटल सत्य है। जीवन धारण किया है जिसने, उसे एक दिन मरना ही पड़ेगा। ठाणांग सूत्र में सात भय बताए गए हैं। सांसारिक जीवों के लिए उन सात भयों में मृत्यु ही सबसे बड़ा भय है। जिसके मन से मृत्यु भय मिट गया, वही साधना के उच्चतम शिखर तक पहुँचने का अधिकारी है। जैन-दर्शन में जीवन जीने की तरह ही मरण को भी एक कला माना गया है। व्यक्ति को चाहिये कि वह जीवन-मरण इन उभय कलाओं में पारगंत कलाकार बने। अमर कलाकार वही है जो जीवन जीना भी सीख गया और मरण की कला में भी पटु बन गया।

अणिस्सिओ इहलोगे, परलोगे वि अणिस्सिओ।
जीवियं नाभिकंखेज्जा, मरणं वि नो पत्थए।।

जिसके जीवन की आसक्ति मिट गई और मरण का भय भी हट गया, उसी का जीवन जीवन है और मरण समाधिमरण है।

यह शरीर जीव का घर है। इस घर में रहता हुआ जीव मरण के सत्य को जानकर भी यदि प्रतीक्षा करता है कि कोई उसे धक्के देकर घर से बाहर निकाले तो यही कहना होगा कि उसमें बुद्धिमत्ता नहीं, विवेक नहीं, चिन्तन शक्ति नहीं है। जैन-दर्शन में साधना के लिए-परिग्रह का त्याग, आरम्भ से निवृत्ति और तीसरा समाधिमरण, ये तीन कदम सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। तीसरे

कदम की पूर्ण सफलता से सिद्धि निश्चित है। अत: यह सत्य है कि समाधिमरण आत्महत्या नहीं, आत्म संजीवन है।

श्री सागरमलजी महाराज ने इस आत्म संजीवन का अवलम्बन लिया। मृत्युञ्जयी बनने की सफल साधना के लिए अग्रसर बन गए वे। एक दुर्धर योद्धा की तरह मृत्यु को आगे होकर ललकारा उन्होंने। अपने आपको समस्त विनाशी क्षणिक पौद्गलिक पदार्थों से हटाकर उस महासाधक ने शरीर के ममत्व का त्याग किया और केन्द्रीय तत्त्व पर आत्म-तत्त्व पर स्वयं को ऐसा केन्द्रित किया कि मृत्यु का भय होने की जगह, स्वयं मृत्यु को उनकी साधना से भय लगने लगा। परास्त कर दिया मृत्यु को उस महासाधक ने। संथारा चला, लम्बा चला। कामना और वासना सागरमुनिजी की तप की ज्योति में जलते रहे। यह महायज्ञ उनसठ (59) दिनों तक चला। आज के दिन अर्थात् श्रावण कृष्णा त्रयोदशी को संवत 1985 के दिन यह महायज्ञ पूर्ण हुआ। संथारा सींझ गया, पक गया। सफल हुआ तप, सिद्ध हुई साधना और वह महापुरुष बढ़ गया परम सिद्धि की तरफ।

जैन परम्परा में संथारा मरण नहीं, यह समाधिमरण है, निर्वाण है, मरण पर विजय यात्रा है। अमरता की यात्रा है। यह ऐसी यात्रा है जिसमें चित्त की एकाग्रता है, मन की शान्त स्थितवृत्ति है जिसमें अनुकूलता-व्याकुलता का सर्वथा अभाव है। मोक्ष प्राप्ति में विघ्न रूप और संसार वृद्धि तथा दुर्गति के कारण जो अठारह पाप हैं, उनका तीन करण, तीन योग से इसमें त्याग किया जाता है।

उनसठ दिन के लम्बे संथारे पूर्वक समाधिमरण प्राप्त करने वाले श्री सागरमुनिजी महाराज का नाम इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ बना और कहूँ कि यह संथारा मुनिजी के संयम जीवन का स्वर्णिम पृष्ठ बन गया।

हम और आप भी साधक हैं। उस महासाधक के महनीय जीवन से हमें कुछ सीखना है। मृत्युञ्जयी बनने के विषय पर चिन्तन है। जीवन में तीसरा मनोरथ अवश्य आए, ऐसा जीवन बनाना है। तत्पर बन जाइए, तपाराधन प्रारम्भ कर दीजिए, इच्छाओं के निरोध में आगे बढिए।

आप हम सभी जीवन को ऐसा ही सुन्दर, पावन, विशुद्ध बनायें और समाधिमरण के साथ जीवन का अन्तिम पृष्ठ लिखें। यही मंगलकामना है। ■

प्रवचन

कहाँ जा रहे हो राही?

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा ब्यावर वर्षावास के दौरान फरमाए गए प्रवचन का संकलन व संपादन श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली ने किया है। -**सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

आज का प्रवचन मैं एक घटना से प्रारम्भ करता हूँ। एक दिन सायंकाल के पहले एक गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिये गुरुदेव के साथ हमारी पदयात्रा शुरु हुई। कुछ श्रद्धालु भक्तजन भी विहार में हमारे साथ चल रहे थे। चलते-चलते रास्ता दो भागों में बंट गया। वहाँ पर हमें गन्तव्य स्थान की ओर जाने वाले सही रास्ते का पता नहीं चलने से हमने एक अनजान व्यक्ति से रास्ता पूछा। उसने कहा कि मुनिवर, इस ओर का रास्ता वहाँ सीधा जाता है, पर गाँव तक पहुँचने के लिये यह थोड़ा लम्बा है। दूसरी तरफ का रास्ता आगे जाकर टेढ़ा-मेढ़ा और ऊबड़-खाबड़ है, पर गाँव तक पहुँचने के लिये यह अपेक्षाकृत नज़दीक है। मैं नज़दीकता के लोभ में दो सन्तों के साथ दूसरी ओर के रास्ते से जाने लगा। उधर गुरुदेव अन्य संतों के साथ सीधे रास्ते पर ही चलते रहे। कुछ ही दूर जाने पर हमारा रास्ता मुड़ गया। गुरुदेव हमारी आँखों से ओझल हो गये। रास्ते में हमें बड़े-बड़े टीले मिलते गये जिन पर जगह-जगह कंटीली झाड़ियां थी। हम उन टीलों को पार करते गये। आगे जाकर वही रास्ता फिर कई भागों में बंट गया। उनमें से हमें सही रास्ते का पता नहीं चल पा रहा था। उस निर्जन वन में कोई रास्ता बतलाने वाला भी नहीं था। दुविधाग्रस्त हम कभी एक रास्ता पकड़ते तो कभी दूसरा, परन्तु जिस गाँव में हमें जाना था उसका तो कहीं दूर-दूर तक निशान ही नजर नहीं आ रहा था।

भटकते-भटकते हम थक कर चूर हो चुके थे। सूर्य ढलने वाला ही था। मैं उद्विगन हो गया। मन में बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि क्यों मैंने इस रास्ते को पकड़ा। मेरे साथ में आये सन्तों को भी नाहक परेशानी में डाल दिया। उधर

गुरुदेव भी हमारी चिन्ता कर रहे होंगे कि अभी तक गाँव क्यों नहीं पहुँचे? हम एकदम सुनसान जंगल के बीच में थे। न हमें आगे जाने का रास्ता मिल रहा था और न ही पीछे जाने का। रात ढ़ल रही थी, पर बीच में रात्रि प्रवास के लिये न तो कोई बना हुआ मकान दिख रहा था और न ही कोई घना वृक्ष, जिसके तले हम आश्रय लेकर रात बिता सकें। मेरे मन की धड़कन पल-पल बढ़ रही थी, पर कुछ भी नहीं सूझ रहा था कि क्या करूँ?

रात्रि का अंधकार प्रगाढ़ होने लगा। सांय-सांय करती हवा चल रही थी। उस हवा में झाड़ियों के पत्तों के खड़-खड़ाने की आवाज आ रही थी। हम लोगों को उस घने अंधकार में कुछ भी नहीं दिख रहा था। इतने में मुझे अचानक ही किसी की आवाज सुनाई दी- "कहाँ जा रहे हो राही?" उसी के साथ मेरी आँख खुल गई और देखा कि सभी सन्त तो हमारे पास ही शयन कर रहे हैं। ख्याल आया कि यह तो एक स्वप्न था। आँखें खुलने के साथ ही मैं भयानक पीड़ा से मुक्त होने का अनुभव कर रहा था। धीरे-धीरे मेरी उद्विग्नता शांत होने लगी। स्वप्न की सभी पीड़ाएँ लुप्त होने लगी और मैं जागने पर प्रसन्नता का अनुभव करने लगा।

बन्धुओं, जैसे ही मेरा स्वप्न भंग हुआ और आँखे खुली, पीड़ाएँ समाप्त हो गईं और मैं सुख का अनुभव करने लगा। इसी तरह से अज्ञान भी तो एक गहरी नींद ही है जिसमें व्यक्ति सुख-दुःख में निरन्तर डोलता रहता है। कभी हंसता हुआ खिलखिलाता है तो कभी आर्त्तनाद करता है। परन्तु ज्योंही उसके अन्तर्चक्षु खुल जाते हैं, अज्ञान का अन्धेरा दूर हो जाता है तब उसे ज्ञान के प्रकाश में सत्य का साक्षात्कार हो जाता है। सत्य की प्रतीति में दुःख भी वरदान बनकर निर्जरा के कारण बन जाते हैं। समत्व का प्रकाश मिलने पर साधक कष्टों को समतापूर्वक सहन कर लेता है। इस तरह वह दुःखों से आने वाले आर्त्त और रौद्र भावों से बच जाता है जो कर्मबन्ध के कारण होते हैं। कर्मबन्ध के कारणों से मुक्त होकर वह महती निर्जरा के मार्ग पर बढ़कर अपने कर्मों के भार को हल्का कर लेता है।

सोना शव है तो जागना शिव है। सोना समाप्ति है तो जागना प्राप्ति है। सोना मरण है तो जागना जीवन है। जयंती नाम की श्राविका ने प्रभु महावीर से पृच्छा की-'हे भगवन्! जीव का सोना अच्छा या जागना अच्छा?" भगवान

ने कहा-"जीव का सोना भी अच्छा और जागना भी अच्छा।" तब जयंती ने कहा-"यह कैसे? भगवन्!" भगवान ने प्रत्युत्तर में कहा-"अज्ञानी, अधर्मी एवं असंयमी का सोना अच्छा है और ज्ञानी, धर्मी और संयमी का जागना अच्छा है।" अर्थात् अज्ञानी जगा रहेगा तो पापमयी प्रवृत्तियाँ करता रहेगा और ज्ञानी जगा रहेगा तो स्व-पर के कल्याण का कार्य करता रहेगा।

इसी तरह से आचारांग सूत्र में भी कहा है- "सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरन्ति" अर्थात् जो सोये हैं वे अमुनि है, मुनि सदा जाग्रत रहते हैं। कहने का तात्पर्य है कि शयन अज्ञान दशा का द्योतक है। मिथ्यात्व और मूर्छा की दशा अज्ञान दशा है। इस दशा में जीव दिशाहीन होकर भटकता रहता है और दुःख पाता रहता है। ऐसी दशा में कोई हमारे अन्तर्मन पर दस्तक देकर हमें जगा दे तो हमारे ज्ञान-चक्षु खुल सकते हैं। इन ज्ञान चक्षुओं का खुलना ही तो जागरण है। इसलिए कहा गया है कि मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति करने वाला मुनि द्रव्य रूप से शयन करते हुए भी भाव से सदा जाग्रत रहता है। निद्रा रूप शयन द्रव्य शयन है और अज्ञान दशा भाव शयन है। यह भाव शयन ही मुख्य रूप से हमारे दुःखों का कारण है। यही हमें भटकाता है, दुःख देता है और हमारे कर्मों की परम्परा को बढ़ाता रहता है। यदि अन्तर्मन की आँखें खुल गई तो मिथ्यात्व के बादल छंट जायेंगे, मूर्च्छा हट जायेगी। फिर आपको ज्ञान का प्रकाश मिलेगा जिसमें आप यह जान पायेंगे कि जीव क्या है, पुद्गल क्या है? आपको यह प्रतीति होगी कि मेरी आत्मा अलग है और यह शरीर अलग है। इस भेदज्ञान द्वारा बाह्य वस्तुओं से आपका मोह छूटने लगेगा। इस शरीर में भी आसक्ति नहीं रहेगी। आपको लगेगा कि यह मानव शरीर तो आत्मा को प्राप्त करने का साधन है। आत्मा को हम अनादि काल से भूले हुए हैं। यदि आत्मा को पा लिया तो फिर शरीर रूपी साधन की उपयोगिता भी नहीं रहेगी। ऐसे में शरीर रहे तो आनन्द , नहीं रहे तो आनन्द।

बन्धुओं, वर्तमान में अधिकांश व्यक्ति सपने में ही जी रहे हैं- कोई, बंद आँखों के सपने में, तो कोई खुली आँखों के सपने में। लेकिन सपना तो सपना ही होता है, सत्य नहीं। बंद आँखों का सपना द्रव्य सपना है तो खुली आँखों का सपना अज्ञान दशा का सपना है। बंद आँखों के सपने से द्रव्य जागरण तो हम अनादिकाल से करते आ रहे हैं। इस द्रव्य जागरण में तो हम

संसार से ही जुड़े रहते हैं। द्रव्य जागरण कभी सत्ता के लिये होता है, कभी संपत्ति के लिये, कभी प्रतिष्ठा के लिये तो कभी अन्य भोगोपभोगों के लिये। इससे दुःखों की परम्परा चलती ही रहती है। मानव जीवन इस परम्परा को समाप्त करने का अपूर्व अवसर है। इसलिये भगवान् बार-बार जगा रहे हैं कि तुम सोते क्यों हो, जागते क्यों नहीं? संबोधि क्यों नहीं प्राप्त करते? ज्ञान से ज्ञानी बन जाओगे, आत्मा की अनुभूति से विभूति बन जाओगे और साधना से सिद्ध बन जाओगे। दुःख विलीन हो जायेंगे और आनन्द का महासंगीत गूंजने लगेगा। अतः अब उठिये और जागिये। आनन्द का राजमार्ग आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। ■

विजय-पथिक

श्री नीलेश कुमार जैन

आसमां की उस डगर पर, पर्वतों के उच्च शिखर पर
चरम शिखा का लक्ष्य लखकर, आरूढ़ हो कर्मरथ पर
बढ़ता चल हे, विजय पथिक! तू बढ़ता चल।।

प्रयाण किया है, तो अवसान भी होगा, पूरा शुभ अरमान भी होगा
बस मत कर तू कर्म शैथिल्य, कर्म-विजय का कर तादात्म्य
त्याग कर पराजय कुंठा, लक्ष्य पताका को उठाकर
बढ़ता चल हे, विजय पथिक! तू बढ़ता चल।।

फिर पवन चली है पुरवाई, सूरज करता है अगुवाई
सफलता की राह में, जीवन-विजय की चाह में
राह दुविधा को न लखकर, भर डग आलोकित पथ पर
बढ़ता चल हे, विजय पथिक! तू बढ़ता चल।।

नरवर से ईश्वर बन जा, अब मानसरोवर को तर जा
मनुज जीवन को सफल कर, परम पद को वर कर
बढ़ता चल हे, विजय पथिक! तू बढ़ता चल।।

-सुपुत्र श्री पारसचंद जी जैन,
116/170, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

प्रवचन

पुद्गल का सुख नहीं रहता स्थिर

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा दिनाँक 5 सितम्बर, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

अनन्त उपकारी वीतराग परमात्मा ने संसार के भव्य प्राणियों पर उपकार करके उन्हें अपनी वाणी के द्वारा सन्देश प्रदान किया। वीतराग भगवन्तों की वाणी में रंचमात्र भी सन्देह नहीं होना चाहिये, क्योंकि वीतरागों का सन्देश संदेह करने के लिए नहीं, अपितु संयम को प्राप्त होने के लिए है। वीतराग भगवन्तों का सन्देश सिद्धत्व का वरण करने को प्राप्त हुआ है। आप अंग शास्त्रों में प्रथम अंग शास्त्र के माध्यम से श्रवण कर रहे हैं। प्रथम अंग शास्त्र कौनसा?

(सभा में से)- आचारांग!

ठीक है आचारांग यानी जो हमारे आचार की रक्षा करता है वह आचारांग। हम मर्यादापूर्वक जीवन का निर्वहन कर सकें इसके सूत्र बताने वाला है आचारांग। अभी मुनिश्री (यशवन्त मुनि जी महाराज) अग्निकाय के बारे में कह रहे थे। ज्ञानियों ने कुछ अग्नियाँ बताई हैं। पहली अग्नि का नाम दिया-**दावाग्नि**। दावाग्नि यानी जंगल में लगने वाली आग। जंगल की आग को दावानल कहते हैं। आप 15 कर्मादान में भी इसको बोलते हैं। जंगल में आग लगती है और आग लगाई भी जाती है। जंगल में आग लगाने वाला महापापी होता है। आग लगती है वह बांस के आपस में रगड़ने के कारण लग सकती है। आज जैसे वर्षा का मौसम है तो जंगल में आग नहीं लग सकती। आपको ज्ञात होगा- जो बहिनें लकड़ियों पर खाना बनाती हैं, वर्षा में लकड़िएं गीली होने से आग तो नहीं लगती पर धुँआ होता रहता है। गृहिणियाँ

फूँक-फूँक कर परेशान हो जाती हैं। इसी तरह वर्षा के मौसम में दावाग्नि लगे या नहीं, पर धुँआ उठता है।

दावाग्नि के आगे वाली दो अग्नियाँ बहुत खतरनाक हैं। एक है **कषायाग्नि** और दूसरी है **कामाग्नि**। कषाय की अग्नि से संसार का प्रत्येक प्राणी पीड़ा पाता है। तप-दिवस पर आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी महाराज) ने फरमाया था कि यह तप हमारा संताप घटाने वाला और प्रताप बढ़ाने वाला है। प्रताप को बढ़ाना हो तो कषाय-अग्नि और काम अग्नि से हटना होगा।

संसार में सबसे ज्यादा जरूरत अग्नि की है। अग्नि नहीं हो तो मनुष्य का एक दिन निकलना कठिन हो जाता है। आज अष्टमी है। स्थानक में दया-पौषध कर लो कहा जाय तो वापस जवाब मिलता है। मौसम साथ नहीं दे रहा है। उमस हो रही है, गर्मी बहुत है। ज्ञानी कहते हैं तीन चीजें कभी स्थिर नहीं रहती। तीन चीजें कौनसी?

आप नहीं बता रहे हैं। कोई बात नहीं। मैं ही बता देता हूँ। पहली चीज है- **हवा का रुख**। हवा स्थिर नहीं रहती। कभी इधर, कभी उधर हवा चलती रहती है। मौसम के अनुसार बदलती रहती है। पहली बात हुई हवा का रुख। दूसरे में कहा- **वाचाल का मुख**। वाचाल जो कोई है उसकी जुबान चलती रहती है, चुप रहना वाचाल के लिए बहुत कठिन होता है। जो आदमी सज्जन होता है उसके लिए रामायण में कहा गया है- रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाई।

जो शूरवीर होता है वह जुबान देने के बाद मुकरता नहीं। पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज के समान शूरवीर बात नहीं बदलता। आचार्य भगवन्त के शब्द निकल गये तो फिर बदलने का सवाल ही नहीं। आचार्य भगवन्त बोलने के साथ संभावना जरूर लगाते थे। पर "निमाज का ध्यान है" शब्द निकल गया इस कारण आचार्य भगवन्त जोधपुर के बजाय निमाज पधारे। महापुरुष वचन देने के बाद कभी पीछे नहीं हटते। अपना प्रसंग चल रहा था। हवा का रुख और वाचाल का मुख स्थिर नहीं रहता। वाचाल बार-बार अपना स्टेटमेंट चेंज करता रहता है। आज राजनेता सुबह कुछ कहते हैं, दोपहर में कुछ और तो शाम को कुछ दूसरा ही कह जायेंगे। वाचाल

की जबान रथ के चक्र के समान घूमती रहती है।

तीसरी चीज जो कभी स्थिर नहीं रहती, वह है **पुद्गल का सुख**। आज जो पुद्गल सुख दे रहे हैं, कल वे ही दुःख दे सकते हैं। यह वर्षा जो कल तक सुख दे रही थी आज......? जो साधन कल सुख दे रहे थे आज वे ही दुःख के कारण बन रहे हैं। उपानत् (जूते) कल अच्छे लग रहे थे आज फफोला हो गया। इस कारण वह ही पीड़ा का कारण बन गया। पुद्गल का सुख स्थिर नहीं रहता। भगवान कहते हैं- हे मानव! तू कषायाग्नि और कामाग्नि में भव-भव सुलगता रहा है, पीड़ा प्राप्त करता रहा है, दुःख उठाता रहा है, इसलिये संत भगवन्त अग्नियों से दूर रहने की प्रेरणा करते हैं।

अभी शासन प्रभाविका महासती जी महाराज ने फरमाया- क्रोध में आदमी गौरा होते हुए भी लाल-पीला-काला हो जाता है। कषाय ऐसी अग्नि है जो आदमी को अन्दर ही अन्दर जलाती रहती है। आज का प्राणी ज्यादा से ज्यादा अग्निकाय की विराधना करता है। तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनि जी महाराज फरमाते हैं- जो जीव जिस काया की ज्यादा विराधना करता है उसी में जाकर उत्पन्न होता है। हम तेउकाय को समझें। हमारा तैजस शरीर भोजन को पचाने के काम आता है। जठराग्नि है तब तक सही है। वह अग्नि बढ़कर लब्धि में परिवर्तित हो जाय तो तेजो लेश्या में बदल जाती है।

अग्नि सीमा में है तो काम करती है। सीमा के बाहर हो गई तो वह महाविनाश का कारण बन सकती है। भगवान हमें यही कह रहे हैं कि संसार का प्रत्येक प्राणी दुःख क्यों पाता है? आचारांग में कहा- आरंभजं दुक्खमिणं। दुःख का मूल कारण है- आरम्भ। हमें आरम्भ-समारम्भ से बचना होगा। आरम्भ-समारम्भ से बचे रहेंगे तो व्यक्ति को सुख-प्राप्ति के लिए भागना नहीं पड़ेगा। आपने रामायण सुनी होगी। रामायण का मूल हार्द कहाँ रहा हुआ है? सीता हरिण के पीछे और सीता के पीछे राम। यदि वह प्रसंग नहीं होता तो रामायण नहीं होती। चौदह वर्ष का वनवास पूरा होता और राम अयोध्या लौट आते। सीता का हरिण के पीछे ललचाना तो आपको याद है, पर हमारे भीतर की रामायण क्या है? प्रभु हमारे पीछे हैं, हम पदार्थों के पीछे। यह सच्चाई भीतर की रामायण है? हम प्रभु के पीछे पागल हो जायं तो संसार पार हो सकता है। इसलिये कहते हैं पदार्थ के पीछे मत भागो, भागना

ही हो तो परमार्थ के पीछे भागो। परमार्थ को मिलाने के लिए महापुरुष कहते हैं- ''सुख दियां सुख होत है।'' आप सुख दोगे तो सुख मिलेगा। प्रभु ने फरमाया 'सव्वे पाणा पियाउया सुहसाया दुक्खपडिकूला'' सभी प्राणियों को सुख प्रिय एवं दुःख अप्रिय है।

संसार का प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है। दुःख किसी को इष्ट नहीं, चाहे वह कीड़ी हो या कुंजर। सब सुख चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता, तो फिर प्रश्न रहता है दुःख से मुक्ति कैसे मिले ?

आज का मानव प्रमाद कर रहा है। वह पुद्गलों के सुख के पीछे दिन-रात भागता है। पुद्गलों के सुख की सत्ता दुःख में रही हुई है। संसार में तीन तरह के आदमी हैं। एक अमीर है, वह किसमें सुख मानता है? आराम में। एक गरीब है वह किसमें सुख खोजता है? तो संपत्ति में। एक धर्मात्मा है उसे किसमें सुख नज़र आता है? तो प्रसन्नता में। जीवन का अर्थ समझाने के लिए भगवान कह रहे हैं- प्राणी! तू संसार में आया है तो आरम्भ-समारम्भ का त्याग कर दे। आरम्भ-समारम्भ का पूर्णतः त्याग करने वाला साधु होता है, पर भगवान कहते हैं- अगर तुझे अणगार धर्म प्राप्त नहीं हो रहा है तो आगार धर्म स्वीकार कर। मुनि नहीं बन सकता, कोई बात नहीं, मुनीम तो बन।

सेठ और मुनीम में क्या अन्तर है? सेठ का पैसे पर अधिकार होता है, मुनीम का तनख्वाह पर अधिकार है। मुनीम को जितनी पगार मिल रही है वह उतना ही खर्च कर सकता है, किन्तु मुनीम बैठता तो गादी पर है। लाखों का व्यापार करता, किन्तु उसका नफे-नुकसान से कोई सम्बन्ध नहीं। यही बात है आप संसार में भले ही रहो, संसार आपके भीतर नहीं रहना चाहिए। जिसके भीतर में संसार रहता है वह संयम में नहीं रह सकता। संसार हमारे भीतर रहता है तो चाहना में बढ़ोतरी होती रहती है।

जिसको कुछ चाहिये उसको कुछ करना पड़ता है। जिसे कुछ नहीं चाहिये उसे कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। चाहना, याचना समाप्त हो जानी चाहिये। जिसकी चाहना और याचना खत्म हो गई तो प्रार्थना प्रकट होती है। सुख को सब चाहते हैं। हम सुख की चाहना करते हैं। मैं पहले पढ़ाई कर लूँ, फिर नौकरी लग जायेगी। नौकरी लग गई तो छोकरी आ जाय। छोकरी आ जाय तो साधन-व्यवस्था की चिंता रहती है। उसकी चाहना

बढ़ती जाती है। जिसकी कोई चाहना नहीं, वह फकीर होता है। फकीर के लिए बोलते हैं- फीकर का फाका करे उसका नाम फकीर।

वास्तविक सुख-प्राप्ति के लिए सन्त भगवन्त देशना दे रहे हैं। आज अष्टमी है, आज के दिन आठ कर्मों का नाश कर दें। शासन प्रभाविका महासती जी फरमा रहे थे- आज दूबली आठम है। हमारे यहाँ तो सात वार नौ त्यौहार कहे जाते हैं। हमारे कई भाई कोपाविष्ट हो कहते हैं- थांरो सत्यानाश होइजो। भगवान कह रहे हैं- नाश ही करना हो तो अष्टानाश कर। आठ कर्मों में एक कर्म है मोहनीय। मोहनीय कर्म का नाश हो गया तो शेष कर्म भी रहने वाले नहीं हैं। एक क्यूं नहीं छोड़ता है? एक रह गया तो सब वापस आ जाएँगे। इसलिए मोह का नाश करें।

हम आग से दूर हटकर राग को समझेंगे उतना हम वैराग्य के पास पहुँचेंगे। आग-राग दोनों समान हैं। दोनों खतरनाक हैं। इस लोक के लिए व्यसन खतरा है। जिसके व्यसन हैं उसके शरीर में बीमारी पहुँच जायेगी। बीमारी ही नहीं, आयुष्य भी क्षीण करने वाला है व्यसन। इस लोक के लिए व्यसन खतरा है तो परलोक के लिए पाप खतरा है। और तीसरा है- सिद्धत्व प्राप्त करने के लिए प्रमाद सबसे बड़ा खतरा है। भगवान ने इसीलिये कहा- समयं गोयम मा! पमायए। हम अनन्त सुख प्राप्ति के लिए द्रुतगति से कदम बढ़ाते हुए चलेंगे तो हमारा कल्याण हो सकेगा। 卐

अभिमत

श्री सुनितकुमार जैन

सितम्बर 2011 की जिनवाणी में प्रकाशित आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.साहब का प्रवचन "जीवों के रक्षण में बनें सजग" पढ़कर प्रेरणा मिली कि हम अगर जिन्दगी में अहिंसा और दया जैसे गुणों को शामिल कर लें तो कोई समस्या ही उत्पन्न नहीं होगी। कोटि-कोटि नमन गुरुदेव को। सम्पादक धर्मचन्द जी लिखित सम्पादकीय आलेख "न्यायपूर्ण व्यवहार" सबक देता है कि अगर हम अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हों तो अधिकार तो अपने आप ही प्राप्त हो जाते हैं।

-जैनविहार कॉलोनी, अलीगढ़-304023, टोंक (राज.)

प्रवचनांश

सहनशीलता

साध्वी श्री मुदितप्रभा जी म.सा.

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा. के द्वारा 26 जुलाई, 2011 को फरमाए गए प्रवचन का प्रस्तुत अंश सवाईमाधोपुर से श्री पारसमलजी बोहरा ने संकलित कर प्रेषित किया है।-सम्पादक

जो व्यक्ति सहन करना सीख जाता है वह जीवन में कभी ठोकर नहीं खा सकता। सहनशीलता का गुण मानव को आगे बढ़ाता है बशर्ते वह अपनी सोच को स्वार्थी न बनाये। यदि वह मात्र यह मनोकामना रखे कि मेरा कार्य सिद्ध हो जाए तो वह व्यक्ति कभी भी सहनशील नहीं हो सकता। सहनशील व्यक्ति में निम्नांकित गुण होते हैं-

1. वह संकुचित दृष्टिकोण से कभी निर्णय नहीं लेता।
2. कारण जाने बिना क्रोध नहीं करता, आग बबूला नहीं होता।
3. सामने वाले व्यक्ति के गुणों को माइक्रोस्कोप की तरह बड़ा करके प्रदर्शित करता है।
4. अपने में रहे दोषों के प्रति सजग रहता है, गलती हो जाने पर सहज भाव से विनम्रतापूर्वक गलती स्वीकार कर तुरन्त क्षमा याचना कर लेता है।

सहनशील व्यक्ति किसी व्यक्ति के द्वारा की गयी गलती(भूल) को बताने के लिये सुधार करवाते समय ध्यान रखे कि उसे सीधे उसकी गलती को नहीं बताये, मधुर भाषा का प्रयोग करते हुए विवेक पूर्वक गलती को बताये, इसके लिये तीन सूत्र बताये गये हैं-

A= **Appreciate-** गलती करने वाले में रहे गुणों की प्रशंसा करना। उसकी बढ़ाई करना।

C= **Complaint-** फिर उसके द्वारा हुई गलती को बताना।

E= **Encourage-** गलती बताने के बाद उसके सुधार हेतु उत्साहवर्धन करना। उत्साह से नया कार्य करने के लिये प्रेरित करना।

यदि हमने गलती करने वाले को शुरू में ही नीचे दिखाने का प्रयास कर दिया तो उसे भी बुरा लगेगा।

प्रंशसा के दो शब्द बोलने से सामने वाला झुक जाता है। रिश्ते के धागे भले ही बहुत पतले हों, पर होते बहुत मजबूत हैं। एक दूसरे की बढ़ाई करते हुए

रिश्तों को मजबूत बनाया जा सकता है।

सहनशील व्यक्ति बहुत गम्भीर होता है। वह जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेता। दूसरे के द्वारा की गयी गलतियों को सुधारने का अवसर देता है। उसका मानना है कि-

''फूलों को खिलने का अवसर देना चाहिये।
हमें यह हक नहीं कि खिलने से पहले काट लिया जाए।।''

सहनशील व्यक्ति उपकारियों के प्रति क्षमा का भाव रखते हुए अपने पर किये उपकारों को कभी नहीं भूलता। उपकारी तीन प्रकार के होते हैं-

1. माता-पिता, 2. गुरु और 3. ऋणकर्त्ता।

-प्रवचन से संकलनः-श्री पारसचन्द जैन बोहरा, सवाईमाधोपुर (राज.)

प्रभु बन जाना है

श्री त्रिलोकचन्द जैन

श्वास के अभाव से पूर्व, सार्थक जीवन करना है।
साधना विदेही की करूँ, तभी जाके मरना है।।

रग-रग से राग का करूँ विसर्जन,
निकाल द्वेष का करूँ गुण वर्णन,
रम जाए मेरे रोम-रोम में भगवन्,
सत्त्वेषु मैत्री से करुणा बहाऊँ हर क्षण,

मुझे चेतन की जड़ से भिन्नता को समझना है।
मुझे ज्ञान गुण की अभिन्नता को वरना है।।
क्रोधादि अरिओं के संग को तजना है।
मुझे समकित में जीकर आराधक बनना है।।

असम्भव नहीं क्योंकि धर्म मिला है उत्कृष्ट।
कर्म विदारक-आत्मगुण धारक, देव हैं श्रेष्ठ।।
जीवन्त प्रभु रूप समक्ष, गुरु मिले हैं ज्येष्ठ।
कृपा इतनी बरस रही कि, नहीं रहूँगा मैं धृष्ट।।

अब तो प्रेरणा गुरुदेव की अपनाना है।
तजकर घर माधुकरी में रम जाना है।।
सिंहवत् साधना करते गुरुकृपा पाना है।
प्रभु जैसे गुरु पाकर अब तो, प्रभु बन जाना है।।

-शान्ति सदन, 37/67, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

English-Section

Some Reflections on the Samaṇasuttaṃ

Prof. Sagarmal Jain

Except the religions of Indian origin, each and every religion of the world possesses a divine book, which prescribes their religious duties and moral code for their followers. But it does not mean that the religions of Indian origin do not have their own religious books, only problem is that among the somatic religions, each and every religion have only and the only one book, which is considered as divine and authentic, while the religions of Indian origin possesses many books and they consider all of them as divine and authentic. But among the religions of Indian origin in due course of time Hinduism accepted *Gītā* their authentic and divine book. Similarly the Buddhist Accepted *Dhammapada* as their authentic religious book. But there was a problem to Jainas, because of their different sects. *Śvetāmbaras* accept the *Uttarādhyayana* as their authentic religious book, where as Digambaras do not accept it as an authentic book. Thus there was no any common authentic book which was accepted to both the sects. Though in Śvetāmbara tradition Muni Chauthamalji has prepared a book "*Nirgrantha Pravacana*" containing eighteen chapters, just like *Gītā*. Similarly one more book was also prepared in the name of *Mahāvīra Gītā* by Achārya Shree Buddhisagaraji. Pt. Bechardasji Doshi compiled a book in the name of *Mahāvīravani*. Similarly other more Svetāmbara Scholars made their efforts in this direc but these efforts were not agreeable to Digambaras.

In this situation Vinobaji Suggested Jinen to compile a work which is to be based on the text sects and can cover all important aspects of J

and philosophy. On the suggestions of Vinobaji, Jinendra Varniji prepared a book named "*Jainadharmasāra*". The book was circulated to all the important Jaina scholars and Jaina saints, but it was not acceptable to all of them, because of it contains some Sanskrit verses of later jaina Ācāryas so Jinendravarniji compiled a second work with only prākrta gāthās and which was named as "*Jinadhamma*", but in which most of the gāthās are from Digambara text and so it was also rejected. As a result a convention was held at Delhi wherein prominent Jaina Achāryas and Munis along with some scholars were assembled. Finally all agreed to the revised edition of the previous works and named it as "*Samaṇasuttaṃ*". It contains 756 Prākrta gāthās, 378 from the works of each sect. Though it was accepted by both the sects, but till date none of them accepted it in true spirit, because both consider that it was not based on our scriptures.

While compiling the text Vinobaji was not agreed to give the original sources or the gāthās, but on the request of Pravinbhai Shah (U.S.A.), Dr Geeta Mehata (Mumbai) and Prof. Kanti Mardia (U.K.), I tried to sort out the original sources of the gāthās with the help of Shri Jamnalalji Jain and checked all of them with the original texts. (List of original sources of the verses of *Samaṇasuttaṃ* may be obtained from me directly)

This text covers all the aspects of Jaina religion and philosophy in the following four parts and 44 chapters. The four parts are:- (1) Source of illumination (2) Path of liberation (3) Metaphysics and (4) Theory of relativity. These four parts are further divided into following 44 chapters.

1. Precepts on the Auspicious, 2. Precepts on the Jina's Teachings, 3. Precepts on the Religious Order, 4. Precepts on the Scriptural Exposition, 5. Precepts on the Transmigratory-Cycle, 6. Precepts on the Karmas, 7. Precepts on the Wrong Faith, 8. Precepts on the Renunciation

of attachment, 9. Precepts on the Religion, 10. Precepts on Self-Restraint, 11. Precepts on Non-Possessiveness, 12. Precepts on Non-Violence, 13. Precepts on Vigilance, 14. Precepts on Education, 15. Precepts of Soul, 16. Precepts on the Path of Liberation, 17. Precepts on Three Jewels, 18. Precepts on Right Faith, 19. Precepts on Right Knowledge, 20. Precepts on Right Conduct, 21. Precepts on Spiritual Realization, 22. Precepts on the Two Paths of Religion, 23. Precepts on House-holder's Religion. 24. Precepts on Religion of Monks, 25. Precepts on Vows, 26. Precepts on Carefulness and Self-Control, 27. Precepts on Obligatory duties, 28. Precepts on Penance, 29. Precepts on Mediation. 30. Precepts on Reflection, 31. Precepts on Soul-Colouring, 32. Precepts on Spiritual Progress, 33. Precepts on Passionless Death, 34. Precepts on Fundamental, 35. Precepts on the Substance, 36. Precepts on Universe, 37. Precepts on Non-Absolutism, 38. Precepts on Valid Knowledge, 39. Precepts on View-Point, 40 Precepts on theory of Relativity and seven Predications, 41. Precepts on Reconciliation. 42. Conclusion, 43. Hymn to Mahavira.

Thus it contains Jain religious preachings along with its metaphysics, ethics and epistemology.

So far as its Translation is concerned first of all Pt. Bechardasji translated its Prakrit Gāthās in to Sanskrit verses, after that it's Hindi translation Has been done by Pt. Kailash chandraji. After that Gujrati and Marathi translations were done. Marathi translation by muni Vidyanandji. Acārya Vidyāsāgarji translated it into Hindi. So far as its English translation is concerned, First of all Dr. K.K. Dixit translated it into English. He was entrusted with this task on the advice of Pt. Dalsukhbhai Malvania. Mr. Justice T.K. Tukol also translated in into English, on the suggestion of Honourable Vice-President of India Sri B.D. Jatti. Both the drafts were handed over to me (Dr. Sagarmal Jain) in accordance with recommendation of Late

Chimanbhai Chikubhai Shah. On that basis both the drafts were corrected by me. I also re-translated some of the gathas and prepared final draft, which was published by Sarva Seva Sangha.

Universal Values of Samaṇasuttaṃ

Here I would like to discuss some universal values, which are mentioned in *Samaṇasuttaṃ*. First of all it mentions five auspicious, they are above personalism, they are only qualitative posts and not individual beings, because personalism is the cause of religious conflicts. Though *Samaṇasuttaṃ* also propounds that the religion is also supreme auspicious but non-violence, temperance or self control and penance. Further while defining religion *Samaṇasuttaṃ* gives four definition of religion. First the essential nature of a things is called dharma the secondly ten virtues of forgiveness etc are also called dharma. Alongwith these two, the three fold path of liberation i.e. right vision, right knowledge and right conduct are maintained as religion and at last the non-violence has been also called as religion. Thus *Samaṇasuttaṃ* propounds the universal values as religion an supports religious harmony and fellowship of faiths.

First of all we are human beings then any thing else i.e. Hindu, Muslim, Christian, Jain or Buddha. Thus humanity is a true form of religion, because it is our true nature and this true human nature is reasonableness, self awareness and temperance, which are mentioned in *Samaṇasuttaṃ* as right knowledge, right perception and right conduct. *Samaṇasuttaṃ* also explains that the true religion is nothing but the equanimity (धम्मो जो सो समो त्ति निद्दिठो *Samaṇasuttaṃ* 274). It also explains right knowledge is that which helps to understand the truth. It controls our mental activity and purify our soul. As well as true knowledge is that which frees one self from attachment, and aversion, along with four passions i.e. anger, pride, deceit and

possessiveness. It also discusses the Jaina theories of the 'Anekantavāda' and Nayavāda and through these theories show that we can reconcile the opposite views and live with harmony. *Samaṇasuttaṃ* also represents three basic principles of Jainism i.e. non-violence, non-possession and non-absolutism (Anekanta)

which represents those universal values, which are necessary of harmonious living of humanrace.

Rational Foundation of Non-violence-

Samaṇasuttaṃ explains a rational foundation of non-violence. Mackenzi, an eminent Western scholar, believes that the ideal of non-violence is an outcome of fear. But Indian thinkers in general and Jainas in particular never accepted this view. For them the basis of nonviolence is the concept of equality of all beings. This idea was based not on the emotional basis but on the firm footings of reason. *Samaṇasuttaṃ* mentions that every one wants to live and not to die. For this simple reason Nigganthas prohibit the violence (*Samaṇasuttaṃ*-148). It is also mentioned that just as pain is not dear to oneself, having known this regarding all other beings, one should treat all the beings equally and should keep sympathy with all of them on the simple basis of equality (*Samaṇasuttaṃ*-150). The simplest rule of our behavior, towards the others is whatever you desire for yourself and whatever you do not desire for yourself, desire that or do not desire that for others. This experience of likeness of all beings and the regard for the right of all to live are the basement for the practice of non-violence is not only in Jainism, but in Buddhism and Hindusim also non-violence is supported on the rational ground of equality of all beings.

Non-Possession to resolve economic inequality-

According to *Samaṇasuttaṃ* non-possession is the only way to resolve economic inequality. The attachment gives birth to desire for possession, occupation and hoarding, which is nothing but an expression of one's greedy

attitude. It is told in *Samaṇasuttaṃ* that greed the root of all sins. It is the destroyer of all the good qualities. Anger, pride, deceit etc. all are the offshoots of attachment or mineness or greed. Violence, which disturbs our social and environmental peace, is due to the will for possession. In *Samaṇasuttaṃ* it is mentioned that those having possession of whatever sort, great of small, living or non-living, can not get rid of sufferings and conflicts (*Samaṇasuttaṃ*-141). Possession and hoarding lead to economic inequality, which cause wars. Thus, to achieve social equality and the norm of non-violence is social life, the prime need is to restrict the will for possession, mental as well as physical also (*Samaṇasuttaṃ*-142-145), that is why Māhavīra propounded the vow of complete non-possession for the monks and nuns, while for laity, he propounded the vow of limitation of possession (Parigraha Parimāna) and vow of control over consumption (Bhogopabhoga Parimāna). *Samaṇasuttaṃ* holds that if we want to establish peace on the earth then economic inequality and vast differences in the mode of consumptions should be at least minimized. Among the cause of wars and conflicts, which disturb our social equality, the will for possession is the prime, because it causes economic misbalance. Due to economic misbalance or inequality, classes of poor and rich came into existence and resulted in class conflicts. According to *Samaṇasuttaṃ*, it is only through the self-imposed limitation of possession and simple living; we can restore peace and prosperity on the earth (*Samaṇasuttaṃ*-315-316).

Problem of Conflicts in Ideologies and Faiths

To solve the conflicts of faiths and ideologies as well as philosphical and religious conflicts Samaṇasuttaṃ also propound the theory of Anekantavāda. Jainism holds that reality is complex. It can be looked at from various view-points or angles. For example, we can have hundreds of photographs of tree from different angles. Though all of

them give a true picture of it from a certain angle, yet they differ from each other. Not only this but neither each of them, nor the whole of them give us a complete picture of that tree. They, individually as well as jointly, will give only a partial picture of it. So is the case with human knowledge and understanding also, we can have only a partial and relative picture of reality. We can know and describe the reality only from a certain angle or viewpoint. Though every angle or viewpoint can claim that it gives a true picture of reality, yet it gives only a partial and relative picture of reality. In fact, we cannot challenge its validity or truth-value, but at the same time we must not forget that it is only a partial truth or one-side view. One who knows only partial truth or has a one-sided picture of reality, has no right to discard the views of his opponents as totally false, we must accept that the views of our opponents may also be true from some other angles. The theory of Anekāntavāda emphasises that the apporaches to understand the reality give partial but true picture of reality, and due to their truth-value from a certain angle we should have regard for other's ideologies and faiths. The Anekāntavāda forbids to dogmatic and one-sided in our approach. It preaches us a broader outlook and open mindedness, which is more essential to solve the conflicts, taking place due to the differences is ideologies and faiths (Samaṇasuttaṃ 732-736). Prof. T.G. Kalghatg rightly observes: "The spirit of Anekānta is very much necessary in society, especially in the present days, when conflicting ideologies are trying to assert supremacy aggressively, Anekanta brings the spirit of intellectual and social tolerance."

For the Present-day society what is awfully needed. is the virtue of tolerance. This virtue of tolerance i.e. regards for others ideologies and faiths have been maintained in Jainism from the very beginning. *Samaṇasuttaṃ* mentions, those who praise their own faiths and ideologies and blame

those of their opponents and thus distort the truth, will remain confined to the cycle of birth and death (Samaṇasuttaṃ 734).

Thus we can say that Samaṇasuttaṃ propounds the universal values of non-violence, non-attachment and non-absolutism (अहिंसा, अपरिग्रह और अनाग्रह या अनेकांत) through which human race can live a harmonious life and can establish peace on the earth.

मस्ती ही मुक्ति

रणजीतसिंह कुमट

पंछी तू उड़ मस्त गगन में
पंख पसारे,
बिना भय या आतुरता के,
मंजिल क्या है, पड़ाव कहाँ है,
इसकी परवाह मत कर,
उड़ना ही मस्ती है,
मस्ती ही मुक्ति है,
मुक्ति ही मंजिल है.
क्या रोक रहा है तुझे उड़ने से
भय, शंका या अनिश्चिंतता ?
पर भय या शंका कैसी?
अपने मन की या दूसरों के हँसने की ?
या उड़ते ही गिर जाने की ?
जो उड़ते हैं वे ही गिरते हैं
जो गिरे नहीं वे क्या उड़ेंगे ?
मस्ती पानी है तो भय छोड़ो
शंकामुक्त हो उड़ो मुक्त गगन में
पंख पसारे बिना भय या आतुरता के
मिलेगी मस्ती और मुक्ति
उड़ना ही मुक्ति है,
मुक्ति ही मंजिल है.

-सी 1703, लेक कॉसल, हीरानन्दानी गार्डन, पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 70)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(कषाय कुशील)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- कषाय कुशील साधु में कितनी लेश्याएँ होती हैं?

समाधान- कषाय कुशील साधु में छहों लेश्याएँ हो सकती हैं। कषाय कुशील में छठे से दसवें तक पाँच गुणस्थान मिलते हैं। छठे गुणस्थान में छहों लेश्या, सातवें गुणस्थान में तीन प्रशस्त लेश्या तथा आठवें से दसवें गुणस्थान में एकमात्र शुक्ल लेश्या पाई जाती हैं। यद्यपि टीकाकार कृष्णादि तीन अशुभ भाव लेश्याओं में संयम नहीं मानते है, किन्तु यह बात संगत नहीं लगती।

जिज्ञासा- छठे गुणस्थान में तीन अशुभ भाव लेश्याओं में संयम नहीं मानने की टीकाकार की बात संगत क्यों नहीं लगती?

समाधान- क्योंकि जब कोई जीव सम्यग्ज्ञान दर्शन पूर्वक सम्यक् चारित्र (महाव्रतादि) को स्वीकार करते हैं तो उस समय सातवाँ गुणस्थान आता है। फिर वह साधक सातवें से छठे गुणस्थान में आ सकता है। सातवें गुणस्थान में तेजो, पद्म और शुक्ल ये तीनों लेश्याएँ ही होती हैं और छठे में आने पर छहों लेश्याएँ हो सकती हैं। यदि उनमें भाव कृष्णादि लेश्या न मानी जाय तो कृष्णादि तीन द्रव्य लेश्याएँ कैसे मानी जा सकती हैं? क्योंकि उन भाव लेश्याओं के बिना वे द्रव्य लेश्याएँ प्राप्त नहीं हो सकती।

हाँ, यह हो सकता है कि भाव लेश्या हट जाने के बाद भी द्रव्य लेश्या कुछ समय तक रह सकती है, किन्तु भाव लेश्या के बिना द्रव्य लेश्या नहीं आ सकती।

दूसरी अपेक्षा से विचार करें तो कृष्णादि अशुभ लेश्याओं के भी असंख्य-असंख्य दर्जे हैं। उनमें से नीचे के ज्यादा खराब

अशुभ दर्जों को छोड़कर ऊपर के कम अशुभ दर्जे वाले परिणाम थोड़ी देर के लिए किसी-किसी प्रमादी साधु के हो जाते हैं। वैसे भी संघ-व्यवस्था के लिए, अनुशासन के लिए, शासन-रक्षा के लिए कदाचित् अशुभ लेश्याएँ भी प्रमादी साधु में आ सकने में बाधा नहीं लगती है।

जिज्ञासा– क्या कृष्णादि तीन अशुभ लेश्याओं में चारित्र की प्राप्ति होती है?

समाधान– कृष्णादि तीन अशुभ लेश्याओं में चारित्र की प्राप्ति नहीं होती है, किन्तु चारित्र प्राप्त हो जाने के बाद कृष्णादि तीन अशुभ लेश्याएँ आ सकती हैं। जैसाकि आवश्यक निर्युक्ति की उपोद्घात निर्युक्ति में कहा है-

'पुव्वपडिवण्णओ पुण अण्णयरीए उ लेस्साए' अर्थात् चारित्र प्राप्ति के बाद छठे गुणस्थान में आने पर साधु में कोई भी लेश्या हो सकती है। जैसे कि मनःपर्यवज्ञान अप्रमत्त संयत को ही प्राप्त होता है, किन्तु मनःपर्यवज्ञान प्राप्त हो जाने के पश्चात् वह प्रमत्त संयत में भी रह सकता है। जब कृष्णादि अशुभ लेश्या में मनःपर्यवज्ञान है, तो वह भाव लेश्या ही हो सकती है। द्रव्य लेश्या तो पुद्गल है, अतः चारित्र प्राप्ति के बाद इन प्रमत्त संयत जीवों में कृष्णादि लेश्या भी हो सकती है।

जिज्ञासा– कषाय कुशील साधु कषाय कुशीलपन को छोड़कर किस-किस अवस्था को प्राप्त हो सकते हैं?

समाधान– कषाय कुशील साधु कषाय कुशीलपन को छोड़कर निम्न अवस्थाओं को प्राप्त कर सकते हैं- 1. पुलाकपन, 2. बकुशपन, 3. प्रतिसेवना कुशीलपन, 4. निर्ग्रन्थपन, 5. असंयम, 6. संयमासंयम (श्रावकपन)

जब कषाय कुशील साधु पुलाकपन को प्राप्त करने वाले होते हैं, तब अन्तर्मुहूर्त पहले परिणामों में मलिनता आ जाती है, इसी कारण से कषायकुशील और पुलाक के सर्व जघन्य संयम स्थान सबसे नीचे व आपस में तुल्य बतलाये गये हैं।

जब कषायकुशील साधु अपने मूल गुण उत्तर गुणों में दोष लगाते हैं तब वे बकुशपन, प्रतिसेवना कुशीलपन, असंयम तथा

संयमासंयम, इन अवस्थाओं को प्राप्त कर लेते हैं। जब परिणाम में विशेष शुद्धि होती है तो उपशम श्रेणि अथवा क्षपक श्रेणि करके निर्ग्रन्थपन को प्राप्त कर लेते हैं।

जिज्ञासा– कषाय कुशील में कौन–कौन से परिणाम होते हैं?

समाधान– कषाय कुशील में वर्धमान, हीयमान और अवस्थित ये तीनों ही प्रकार के परिणाम होते हैं। जब चारित्र मोहनीय कर्म के क्षय अथवा क्षपोपशम से परिणामों में निरन्तर विशुद्धि बढ़ती है तो वे वर्धमान परिणाम कहलाते हैं। जब चारित्र मोहनीय कर्म के उदय के प्रभाव से परिणामों में मलिनता बढ़ती है तो वे हीयमान परिणाम कहलाते हैं। जब परिणामों में न तो मलिनता हो और न विशुद्धि हो, उस अवस्था में अवस्थित परिणाम कहलाते हैं।

जिज्ञासा– कषाय कुशील में कौन–कौन से परिणाम कितने–कितने काल तक रहते हैं?

समाधान– कषाय कुशील में वर्धमान व हीयमान परिणाम जघन्य एक समय तथा उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं। अवस्थित परिणाम जघन्य एक समय तथा उत्कृष्ट सात समय तक रहते हैं। एक समय की स्थिति काल (मरण) करने की अपेक्षा से समझनी चाहिए। उत्कृष्ट स्थिति पूर्ण होने पर परिणामों में अवश्य बदलाव आ जाता है।

जिज्ञासा– कषाय कुशील साधुपन कितने भवों में प्राप्त होता है?

समाधान– कषाय कुशील साधुपन कम से कम एक भव में तथा अधिक से अधिक आठ भवों में प्राप्त हो सकता है। आठवें भव में वह साधु अवश्य ही मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

कषाय कुशील साधुपन एक भव में पृथक्त्व सौ बार तथा अनेक भवों में (8 भवों में) पृथक्त्व हजार बार (900x8= 7200 बार) प्राप्त हो सकता है।

जिज्ञासा– कषाय कुशील साधु संज्ञा वाले होते हैं अथवा नोसंज्ञा वाले?

समाधान– कषाय कुशील साधु संज्ञा वाले भी होते हैं तथा नो संज्ञा वाले भी होते हैं। क्योंकि छठे गुणस्थान तक संज्ञा रहती है। छठे गुणस्थान में जो शुभ योगी हैं, अप्रमत्तता की ओर उन्मुख हैं वे

नो संज्ञा वाले होते हैं तथा जो अशुभ योगी हैं वे संज्ञा वाले होते हैं। सातवें से दसवें गुणस्थान वाले कषाय कुशील साधु नो संज्ञा वाले ही होते हैं।

आहारादि की अभिलाषा (आसक्ति) वाले साधु संज्ञा वाले तथा आहारादि की अभिलाषा (आसक्ति) रहित साधु नो संज्ञा वाले कहलाते हैं। (क्रमशः)

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

गुरु-भक्ति का फल

सौ. कमला सिंघवी

अपार इस संसार में गुरु कृपा है नाव।
श्रद्धा युक्त वन्दन करूँ, धरूँ हृदय में ध्यान।।

गुरु एक छोटा सा शब्द है, जो अपने में काफी गहरा अर्थ समेटे हुए है। जो हमें सन्मार्ग दिखावे वह गुरु है। सद्गुरु की महिमा अपरम्पार है। जिसने भी गुरु की महिमा को पहचाना है उसका उद्धार हुआ है।

गुरु कारीगर सारिखा, टाँची वचन विचार।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार।।

गुरु ज्ञान दृष्टि खोलकर दिव्य दृष्टि प्रदान करते हैं। अज्ञान दूर करके ज्ञान से विभूषित करते हैं। जैसे हरे वृक्ष की जड़ों में पानी सींचने से सब शाखाएँ हरी-भरी हो जाती हैं। इसी तरह सद्गुरु की भक्ति करने से आध्यात्मिक मार्ग के सब मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। गुरुदेव भव्य जीवों को करुणाबुद्धि से उपदेश देते हैं। गुरु स्वयं अहिंसादि महाव्रतों का पालन करते हुए शिष्य एवं भक्तों को भी धर्म आराधना में आगे बढ़ने की सतत प्रेरणा करते हैं। गुरु के महान उपकार होते हैं। गुरु सम्यग्दर्शन रूपी रत्न को सदा सुरक्षित रखते हैं तथा अन्य जीवों को भी सम्यग्दर्शन का महत्त्व समझाकर विविध प्रकार के शासन की प्रभावना करते हैं। गुरु पतितों का उद्धार करते हैं। सद्गुरु हमारे चलते-फिरते तीर्थ हैं। ऐसे पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा-भक्ति-नमन-विनय-सेवा से कर्मों की महती निर्जरा होती है।

जैसे जहाज के बिना समुद्र को पार नहीं किया जा सकता, वैसे ही गुरु के मार्गदर्शन के बिना संसार सागर को पार करना अति ही कठिन है। सद्गुरु असीम ज्ञान एवं आत्म-शक्ति के स्वामी होते हैं। गुरुदेव की भक्ति का फल सिद्धि-प्राप्ति होता है।

-अध्यापिका, जैन पाठशाला, ज्ञान मंदिर, भड़गांव (महा.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (8)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-**सम्पादक**

महाराज साहब,

बड़े भैया का गला भर आया।
बोलते बोलते वे रुक गए हों ऐसा मुझे लगा।
मैं काँप उठा।
कमरे में जाकर बड़े भैया के पाँवों में गिरकर उनसे
माफी मांग लेने की मुझे इच्छा हुई, परंतु
मैं कमरे में जाने के लिए कदम उठाऊँ उसके पहले
मुझे भाभी की आवाज सुनाई दी।
''आप ऐसे हिम्मत हार जाओगे तो कैसे चलेगा?
यश आपका छोटा भाई है तो मेरा लाड़ला देवर भी है।
अपनी पत्नी की बात वह न माने यह एकबार संभव है, पर
मैं उससे कुछ कहूँ और मेरी बात वह न माने यह कभी नहीं हो सकता।
आप एक दिन के लिए रुक जाइए।
मैं खुद यश के पास जाकर उसे कहूँगी कि
इस घर में उसे जो भी अधिकार चाहिए वह मांग ले।
परंतु उसे अपने चेहरे पर मुस्कराहट लानी ही होगी।
उसे इस घर में प्रसन्नता के वातावरण का सृजन करना ही होगा।
मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह मेरी बात अवश्य मान लेगा।
मेरा हृदय कहता है कि

यह घर आज ही नंदनवन बन जायेगा।''
महाराज साहब,
मैं आगे सुन न सका।
मेरा दिल भर आया।
मेरी आँखों से आँसू बहने लगे और
पल का भी विलम्ब किये बिना मैंने बड़े भैया के कमरे में प्रवेश किया।
मुझे अचानक आया हुआ देख भाई-भाभी दंग से रह गए।
''यश तुम?''
बड़े भैया कुछ बोलते उसके पहले ही मैं
उन्हें गले लगाकर रोने लगा।
मुझे रोता हुआ देख उन्हें आश्चर्य हुआ।
भाभी भी मेरी यह हालत देखकर आश्चर्यचकित हो गईं।
''यश, तुम्हें क्या हुआ है यह तो बताओ।''
मैं कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं था।
आँख में आँसू,
सिसकियाँ और व्यथित हृदय!
बड़े भैया का वात्सल्यपूर्ण हाथ मेरे सिर पर फिरने लगा।
''यश,
कहाँ खो गए थे तुम?''
''भैया,
मैं खो गया था बुद्धि के जंगल में,
डूब गया था हिसाब-किताब के गंदे जल में,
भ्रमित हो गया था गलत मान्यताओं के चक्रव्यूह में।
पर आज मेरा दिमाग ठिकाने आ गया।
आपने मुझे कितना प्यार दिया था?
परंतु मैंने कभी उस पर ध्यान नहीं दिया।
मेरी गलतियों के लिए आपने कितनी बार मुझे माफ कर दिया था?
परंतु मैंने आपकी उस उदारता को कभी याद नहीं रखा।
व्यापार में मैंने कितनी गलतियाँ की हैं?

परंतु, आपने कभी मुझ पर क्रोध किया ही नहीं।
और बदले में मैंने आपको क्या दिया?
उद्विग्नता और पीड़ा!
वेदना और व्यथा!
उपेक्षा और अवहेलना!
बड़े भैया,
मुझे माफ कर दीजिए।
भाभी, मुझे अपना लीजिए।
मुझे इस घर में आपके प्रेम के सिवाय और कुछ भी नहीं चाहिए।''
महाराज साहब,
भाभी मेरे निकट आई। उन्होंने मुझे वात्सल्य की वर्षा में भिगो दिया। मुझे लगा जैसे मेरी माँ पुनर्जीवित होकर मेरे पास आ गई है।
महाराज साहब,
मेरी आँखें अभी भी अश्रुओं से छलछल हैं।
दो बेटों के बाप-मुझे
उस वक्त भैया-भाभी का जो प्यार मिला,
वात्सल्य और स्नेह मिला
उसकी अनुभूति ने मुझे पागल बना दिया है।
इस अनुभव ने मुझे एक बात अच्छी तरह समझा दी है
जगत् के समस्त पदार्थों की प्राप्ति का आनंद एक तराजू में रखो
और दूसरे तराजू में निःस्वार्थ,
निर्मल,
निश्चल प्रेमप्राप्ति की अनुभूति का आनंद रखो,
प्रेम के आनंद की अनुभूति के सामने
पदार्थप्राप्ति के आनंद की अनुभूति की कीमत एक फूटी कौडी की भी नहीं है।
बीते हुए जीवन पर दृष्टिपात करता हूँ और
हृदय से आह निकल जाती है।
प्रेमजन्य आनंद का अनुभव इतना सुलभ,

सुगम और सरल था और इसके बावजूद क्षणभंगुर पदार्थों की खातिर,
अहंकारजन्य बुद्धि के कुतर्कों को पुष्ट करने की खातिर
और तुच्छ मान्यताओं को सिद्ध करने की खातिर
उस आनंद के अनुभव से मैं कितना दूर हो गया था?
केवल उस पवित्र अनुभव से ही दूर हुआ होता तो
बहुत दिक्कत नहीं थी, परंतु मेरी नकारात्मक, आवेशात्मक
एवं दोषदर्शनात्मक मनोवृत्ति के कारण
मैंने घर को नरक में बदल दिया।
बड़े-भैया के साथ मेरे संबंधों में मैंने खुद आग लगा दी।
मेरे अपने मन को मैंने क्लेश के कीचड़ में लोटने के लिए मजबूर कर दिया।
ओह! जीवन को समझने में तथा संबंधों को बनाए रखने में
मैं कितनी बड़ी गलती कर बैठा?
आज लगता है कि आप सही हैं।
संसार के व्यवहार सुचारु रूप से चलते रहें उसके लिए
व्यावहारिक सत्य का चलन और अमल ठीक है, परन्तु
वह सत्य जब पारमार्थिक सत्य को ही हानि पहुँचाने लगे,
पारमार्थिक सत्य का ही बलिदान लेने लगे तब
उस व्यावहारिक सत्य को छोड़ देने में
एक पल का भी विलम्ब नहीं करना चाहिए।
यह बात मुझे मेरे अनुभवों से अच्छी तरह समझ में आ गई है।
अरे! एक बात तो मैं आपको बताना भूल ही गया!
बड़े भैया के प्रति मेरे संबंध में
आत्मीयता उत्पन्न होने के बाद दूसरे दिन बड़े-भैया ने
मुझे अपने पास बुलाया था।
उन्होंने मेरे समक्ष जो प्रस्ताव रखा उसे सुनकर मैं हैरान हो गया।
"देखो यश, काफी समय से मैं चाहता था कि व्यापार की
जिम्मेदारियों से मैं निवृत्त होकर सभी जिम्मेदारियाँ तुम्हें सौंप दूँ।
आखिर तो यह व्यापार तुम्हें ही संभालना है और तुम्हें ही बढ़ाना है।
इसमें तुम्हें स्वतंत्र रूप से काम करने का मौका तभी मिल सकता है

जब सम्पूर्ण व्यापार तुम्हारे ही जिम्मे हो।
हाँ, तुम्हें जब-जब आवश्यकता हो तब-तब तुम मेरी सलाह लेने
अवश्य आ सकते हो! ऐसा होगा तो मैं खुद आगे चलकर
तुम्हें उस विषय में सुझाव दूँगा, परंतु कल से
यह व्यापार तुम्हें ही संभालना है।"
बड़े-भैया की इस बात का मैं कुछ जवाब दूँ इसके पहले तो
पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार भाभी हाथ में
थाली लेकर आई। उस थाली में कुमकुम- और मिठाई भी थी।
भाभी ने मुझे तिलक किया। अपने हाथों से मुझे मिठाई खिलाई और
मंगल आशीर्वाद दिये।

"देखो यश, फूलकर कुप्पा मत हो जाना!
आज से व्यापार में मैं तुम्हारी मानूँगा यह बात सच है,
परन्तु घर में तो तुम्हें मेरी बात ही माननी होगी।
व्यापार में तुम मेरे "बॉस" और घर में मैं तुम्हारा "बॉस"।
महाराज साहब, बड़े भैया की ये बातें सुनकर और उनके हृदय में बसे इस 'स्वर्ग' को देखकर मेरी आँखों से आंसुओं की झड़ी लग गई।

(क्रमशः)

Some Beautiful Pearls

-Miss Minakshi Surana 'Advocate'

1. Never hate people who are jealous of you. Instead love them, Because they are the one who think you are better than them.
2. Being Silent is a very powerful tool for making others to feel for their mistakes. Because it speaks more than the words.
3. Never try to go back and repair the past which is IMPOSSIBLE, but be prepared to construct the future which is POSSIBLE.
4. Yesterday I was clever, so I wanted to change the world, Today I am wise, so I am changing myself.

-Surana Ki Badi Pole,Nagaur-341001 (Raj.)

दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला 6

गणी हीरा गुण गायें

श्री मनमोहनचन्द बाफना

(तर्जः- आओ भगवन् आओ........।)

आओ सब मिल आओ, गणी हीरा के गुण गाओ।
सत्य, अहिंसा, दया, प्रेम की, जग में ज्योति जगाओ।।

माँ मोहनी के हैं नंदन, मोतीलाल कुल अभिनन्दन।
यौवन वय में पा चिंतन, हस्ती गणी करके कुंदन।
शुद्ध मन से संयम धारा, रतन वंश हीरा प्यारा।
दीप्त है मुखड़ा ज्ञान निधि, वो हीरा गुरुवर पाओ।। आओ।।

हस्ती गुरु का शरण मिला, शुभ संयम प्रतिबोध बढ़ा।
आगम का बहु ज्ञान बढ़ा, क्रिया कठिन पर जोर दिया।
विश्व को व्यसन मुक्ति आह्वान, मानव मन को दे पैगाम।
स्वाध्याय का अलख जगाकर, आत्मिक तिमिर हटाओ।। आओ।।

सामायिक का बोध दिला, क्षमा, शांति, समता को बढ़ा।
ज्ञान का अमृत नित्य दिया, पुण्यवान साधक को मिला।
गांव शहर और महानगर में, जीवन बोध दिलाया।
नाविक, नैया, भवसागर से पार है हमको लगाओ।। आओ।।

कलयुग में सतयुग गुरु पा, ध्यान मौन तप क्रिया बढ़ा।
स्वचिंतन प्रतिबोध जगा, आत्म नियंत्रण बढ़ा बढ़ा।
प्रबल पराक्रम धारक हो, निर्मल संयम साधक हो।
गणीवर जीवन, मेरा दर्शन, मन अर्पित कर आओ।। आओ।।

रुका नां जो तूफानों में, झुका नां जो उफानों में।
श्रावक व्रत दिलवाने में जिन शासन चमकाने में।
ऐसा पारस पाया प्रभु, चरणों में आपके आया गुरु।
हम भक्तों को हीरा शरण दो, विनय भाव गुण गाओ।। आओ।।

-प्रमोद दाल मिल, 112/109, पोखरपुर, कानपुर-208010 (उ.प्र.)

युवा-स्तम्भ

दिमाग को धीमा करता है झूठ

श्री ऋषभ जैन

कई लोगों के दिमाग में बिलकुल जगह नहीं होती। चाहे छोटी बात हो या बड़ी वे अक्सर भूल जाया करते हैं। अगर हम दिमाग को कम्प्यूटर की तरह लें तो उसकी भी एक मेमोरी कैपेसिटी होती है। कम्प्यूटर में कई ऊलजलूल फाइलें डाल दी जाएँ तो जैसे उसकी रफ्तार धीमी हो जाती है, वैसा ही दिमाग के साथ भी होता है। आपके दिमाग में अगर बहुत सारी बातें ऐसी हों, जिनका आपके लिए कोई उपयोग ही नहीं, तो यकीनन आपकी याददाश्त आपका साथ छोड़ती नज़र आएगी।

जानते हैं, हम अपने दिमाग पर किस बात का फिजूल दबाव डालते हैं? अपने झूठों का। दिनभर में हम कितने ज्यादा झूठ बोलते हैं और मज़े की बात है कि उन सारे झूठों को हमें लम्बे समय तक याद रखना पड़ता है। मान लीजिए आपने किसी को मोबाइल पर कह दिया कि आप दिल्ली में हैं और सात दिन तक वहीं रहेंगे। अब आपको यह बात सात दिन तक याद रखना है। कहीं ऐसा न हो जाए कि शाम को फिर उसका फोन आ जाए और आप कहें कि यार अभी तो घर से निकला हूँ, तो वह क्या सोचेगा? जब भी आप झूठ बोलते हैं, अपना उस वक्त का काम तो निकाल लेते हैं, लेकिन अपने दिमाग पर भारी वज़न डाल देते हैं।

उसका बोझ सहते-सहते हमारा दिमाग इतना थक जाता है कि हम और बातों की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दे पातें।

एक कर्मचारी था। उसे कोई भी काम बताया जाए, वह भूल जाया करता था। जब उससे काम के बारे में पूछा जाए तो उसके पास कोई न कोई बहाना तैयार रहता था। अगर उसका कोई बहाना फेल हो जाया करता था तो वह तुरन्त दूसरा बहाना बना लिया करता था। उसके पास बहानों के कई फार्मूले थे। ऐसा कर्मचारी किसी एक दफ्तर में नहीं लगभग हर दफ्तर में पाया जाता है। उसके सोचने का ज्यादातर वक्त इन्हीं बहानों की खोज में जाता था। उस कर्मचारी जैसी प्रवृत्ति अधिकतर व्यक्तियों में होती है। लोग एक बार झूठ बोलते

हैं और लंबे समय तक उसे पालकर रखते हैं। वह झूठ आपकी स्मृति का हिस्सा बन जाती है। आप भले ही उस झूठ के जैसे नहीं हो जाते, लेकिन आपका दिमाग उसके जैसा हो जाता है, जबकि आप पायेंगे कि उस झूठ से आपको कोई लंबा फायदा नहीं होता। सामने वाला भी जानता है कि आप झूठ बोल रहे हैं, फिर भी वह आपको माफ कर देता है तो आपको और छूट मिल जाती है। आप और ज्यादा झूठ बोलने लग जाते हैं।

अगर आप झूठ बोलने के बजाय अपने कामों या काम की बातों पर ध्यान दें तो आपके दिमाग को एक बड़ा स्पेस मिल जाता है, जिसमें वह काम की बातों को दर्ज करता रहेगा। आप जिस बात को कहने में सबसे ज्यादा सोचते हैं वह काम आपके दिमाग में सबसे ज्यादा स्पेस भी घेरता है, आप दस दिनों तक प्रैक्टिस करें कि झूठ न ब्रोला जाए। आप सच ही बोलेंगे तो आप पायेंगे कि आप पहले के मुकाबले काम भी ज्यादा करने लगे हैं, क्योंकि आप कोई भी काम टाल नहीं पायेंगे।

आप सच बोलेंगे तोआपको दोहरा फायदा होगा- आपकी याददाश्त भी अच्छी रहेगी और सारे काम भी निपटाते रहेंगे। (संकलित)

-फलौदी क्वारीज, सवाईमाधोपुर-322006 (राज.)

गुरु वाणी : अमृत वाणी

शशी बोहरा

सुनते रहो गुरुवाणी,
आपके मुख से बरसेगी अमृतवाणी।
पीओ धोवण पानी और पढ़ो जिनवाणी,
तो आप हमेशा बोलते रहोगे शीतलवाणी।
हकीकत है, जिनवाणी पढ़ेंगे,
तो बन जायेंगे ज्ञानी।
ज्ञानी से बन जायेंगे दानी,
तो जिन्दगी में आयेगी नहीं कभी परेशानी।
सुनते रहो हमेशा गुरुवाणी,
पीओ धोवण पानी और पढ़ो जिनवाणी।

-608, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.)

धर्मकथा

धर्म का बाह्यरूप (2)

श्रीमती पारसकंवर भण्डारी

(सितम्बर, 2011 के अंक से क्रमशः)

समय की रफ्तार तेजी से चलती है, दो-तीन वर्ष निकल गये, कुछ पता नहीं पड़ा। अचानक नारदजी को भक्त की याद आई और सोचा अब तक तो उसका सारा काम निपट गया होगा। अब चलूँ और उसको लेकर विष्णु जी के पास पहुँचा दूँ। विष्णु जी का रथ लिया और चले भक्त के पास। जैसे ही नारद जी को देखा तो सेठजी का खून जम गया और मन में सोचा, क्या इनको कोई दूसरा काम नहीं है? ये मेरे पीछे ही क्यों पड़े हैं? नारद जी ने पूछा निपट गया आपका काम? अरे? कहाँ नारद जी, अभी तो सिर्फ लड़कों का विवाह किया है, अभी तो बहुत काम बाकी पड़े हैं। ''और कौनसा काम बाकी है भाई!'' ''नारद जी! अभी तो पुत्र को व्यापार में होशियार करना है, फिर पोता होगा उसकी बधाइयाँ बाँटूँगा, बिरादरी वालों को जिमाऊँगा, पोते को खिलाऊँगा। उसका लाड करूँगा। कितना सारा काम बाकी है, इसके बाद जरूर आपके साथ चलूँगा।''

नारद जी ठीक है, मैं फिर आऊँगा, कह कर चले गये। विष्णु जी ने पूछा- ''क्या हुआ? आया नहीं आपका भक्त?'' नहीं भगवन्! अभी उसका काम अधूरा है वह पूरा करते ही मेरे साथ चला आएगा। विष्णुजी सुन कर मुस्कराने लगे। कुछ महीनों के बाद नारदजी फिर सेठजी की दुकान पर पहुँचे। वहाँ पहुँच कर नारदजी ने देखा, आज सेठजी की दुकान बदली-बदली सी लग रही है। सेठजी भी कहीं नज़र नहीं आए। उनके स्थान पर कोई नवयुवक गद्दी पर बैठा दिखाई दिया। नारदजी गुमसुम खड़े रहे, इतने में नवयुवक ने आकर पूछा- ''क्या बात है? आप किसे ढूँढ रहे हो?'' नारदजी ने कहा- ''मैं इस दुकान के मालिक सेठजी से मिलना चाहता हूँ। कहाँ हैं सेठजी?'' उस युवक ने कहा- ''सेठजी तो कालधर्म को प्राप्त हो गये। उनके देहावसान को आज 15 दिन हो गये। मैं उनका पुत्र हूँ अब दुकान मैं ही सम्भालता हूँ।'' नारद जी सुन कर वापस मुड़ गये और सीधा विष्णु जी के पास पहुँचे और जाते ही कहने लगे-''भगवन् भक्त आपके पास पहुँच गया, पर आपने मुझे बताया ही नहीं। मैं तो उसे लेने गया था।'' विष्णुजी ने कहा- ''मेरे पास आपका भक्त नहीं आया है।'' तब

नारदजी ने कहा- ''फिर वह कहाँ गया? उसकी मृत्यु को तो 15 दिन हो गये।'' विष्णु जी ने कहा- नारदजी! वह कहीं नहीं गया। उसी गाँव में बिलाव (बिल्ला) के रूप में जन्म लेकर अपने पुत्र के गोदाम में बैठा है।'' नारद जी उसी समय वापस गाँव पहुँचे और सेठ के पुत्र से कहने लगे- ''बेटा, मैं तुम्हारा धान्य रखने वाला गोदाम देखना चाहता हूँ। आपके पिताजी ने बहुत कहा था गोदाम देखने के लिए, पर मुझे समय नहीं था, इसलिए नहीं देख पाया। पर अब सोचता हूँ कि गोदाम देख ही लूँ।'' सेठ के पुत्र ने कहा- ''चलिए मैं दिखाता हूँ।'' दोनों गोदाम में पहुँचे। युवक तो अपना काम करने बैठ गया, और नारद जी घूम-घूम कर बिलाव को ढूँढते रहे। बोरियों के बीच में दुबका हुआ बैठा था बिलाव। नारद जी झट से उसके पास आए और बोले- ''अरे भक्त जी! आप बैकुंठ में क्यों नहीं आए, यहाँ बिलाव के रूप में आकर क्यों बैठ गये? खैर कोई बात नहीं, अभी भी मैं आपको लेने ही आया हूँ चलिए आप मेरे साथ।'' बिलाव ने उत्तर दिया- ''नारद जी! मैं आपके साथ कैसे चल सकता हूँ? गोदाम में धान से भरे इतने बोरे पड़े हैं, और यहाँ चूहे बहुत हैं, मैं चूहों से धान की रक्षा करता हूँ। अगर मैं यहाँ नहीं रहूँगा तो चूहे सारा धान खा जायेंगे। गोदाम को धान्य से शून्य कर देंगे। उस समय मेरे पुत्र को काफी नुकसान उठाना पड़ेगा, व्यापार ठप्प हो जायेगा। इसलिये में गोदाम की रखवाली करता हूँ। आप मुझे माफ कर दें, मैं आपके साथ नहीं चल सकता।''

नारद जी निराश होकर लौट आए। पर नारद जी भी धुन के पक्के थे, वे कोई बात ठान लेते तो उसे पूरा किए बिना चुप नहीं बैठते थे। थोड़े दिनों बाद नारद जी वापस गांव में आए और सेठ पुत्र से बोले- बेटा! उस दिन मैं गोदाम में गया था तो अचानक वहाँ बिलाव को देखकर मैं जल्दी से बाहर निकल आया, पर जल्दी के कारण मेरी अमुक वस्तु वहीं कहीं गिर गई है। वह वस्तु मैं लेने आया हूँ। अगर तुम गोदाम में जाने की इजाजत दो तो मैं ले आऊँ। हाँ-हाँ जरूर जाइये और ले आइए अपनी वस्तु। मैं मुनीम जी को आपके साथ भेज देता हूँ। नारद जी मुनीम के साथ गोदाम में पहुँचे, और वहाँ बिलाव को ढूँढने लगे, पर कहीं भी बिलाव नज़र नहीं आया। नारद जी काफी देर तक उसे ढूँढते रहे, पर वह नहीं मिला। थक हार कर दुकान पर आये और सेठ पुत्र से कहने लगे, जब मैं पहले आया था तब गोदाम में बिलाव को देखा था, पर आज वह दिखाई नहीं दिया, क्या वह कहीं चला गया? नहीं नारद जी! अभी चार दिन पहले ही

उसकी मृत्यु हो गई। हमने उसे बाहर फिंकवा दिया। नारदजी वहाँ से रवाना हो गये। चलते-चलते विचार करते हैं, देखो संसार का चक्र? पिता की योनि बदल जाने से पुत्र पिता को पहचानने में असमर्थ बन जाता है। उस पुत्र को क्या पता कि यह बिलाव के रूप में उसके पिता हैं। नारदजी विष्णु जी के पास आये और पूछने लगे- ''भगवन्! वह बिलाव बना हुआ भक्त अब कहाँ उत्पन्न हुआ है? क्योंकि बिलाव की योनि तो उसकी पूरी हो गयी।'' विष्णुजी ने कहा- ''अब वह उसी गांव के अन्दर एक गन्दा नाला है, उस नाले में एक कीड़े के रूप में उत्पन्न हुआ है।'' नारद जी जाने के लिए उद्यत हुए तो, विष्णुजी ने कहा- ''अब कहाँ जा रहे हो? क्यों आप उसके पीछे अपना समय बरबाद कर रहे हो? वह अब भी आपके साथ आने वाला नहीं है।'' नहीं भगवन्! अब क्यों नही आयेगा? अब वहाँ पर कौन उसके रिश्तेदार हैं? अब वह जरूर आयेगा। नारद जी चल पड़े उस नाले के पास, लगे कीड़े को ढूँढने। जैसे ही नज़र आया तो कहने लगे, ऐ कीड़े! तूं मनुष्य से बिलाव बना और बिलाव से अब गन्दे नाले का कीड़ा बन गया। अभी भी तुझे साथ चलने में दिक्कत है? चल अभी भी मैं तुझे लेने आया हूँ। तुझे बैकुंठ में ले जाकर सुखी बना दूँगा। चल अब देर मत कर। इतना सुनना था कि कीड़ा तमक कर बोला- ''नारद जी क्यों मेरे पीछे पड़े हो? अब तो मेरा पीछा छोड़ दो। मैं यहाँ बहुत खुश हूँ और सुखी भी। मुझे नहीं जाना बैकुंठ में, मेरा बैकुंठ तो यहीं है। आप बार-बार आकर मुझे तंग मत करो।''

कीड़े की बात सुनकर नारदजी को भी तैश आ गया और गुस्से से बोले- ''अरे कीड़े! तेरे पीछे मैंने इतने चक्कर काटे, और चाहा कि तुझे दुःखों से छुटकारा दिला दूँ, सुखी बना दूँ, किन्तु आज तू मुझे ही भला-बुरा कह रहा है। जा-जा तूँ नाली का कीड़ा नाली में खुश रह। तुझे कोई सुखी नहीं बना सकता। मैं पागल था जो तेरे पीछे-पीछे इतने चक्कर लगाता रहा और विष्णु जी के हंसी का पात्र बना।''

आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो हमें विदित होता है कि आज वर्तमान में सबके साथ यही घटित होता है। हमें नारदजी के स्थान पर साधु-सन्त भिन्न-भिन्न प्रकार से समझाते हैं, पर हम उनकी बात को गहराई से नहीं सोचते। नियम की बात पर आना-कानी करते रहते हैं। ज्यादा जोर देने पर उनको खुश रखने के लिए कुछ छोटा-मोटा नियम ग्रहण कर लेते हैं। पर मन से नहीं, दबाव के

कारण। धर्म मन से होता है दबाव में नहीं। हमें मनुष्य भव मिला है मोक्ष में जाने के लिए, पर हम मोक्ष तो क्या, अभी सम्यक्त्व भी प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। धर्म दिखावे के रूप में नहीं होता, यह तो अन्तर्मन से किया जाता है। समुद्र की सतह पर चलने वालों को सांप और शंख ही मिल सकते हैं, मोती नहीं। समुद्र के गहरे पानी में जो उतरेगा, उसे मोती, मूंगा, माणक आदि बहुमूल्य वस्तुएँ प्राप्त हो जाती हैं। इसी तरह आत्मा की तह तक पहुँचने के लिए शुद्ध भावों में रमण कर धर्म के गहरे समुद्र में उतरेंगे तब ही हमारा कल्याण होगा। नहीं तो उस भक्त के समान मनुष्य भव खोकर, तिर्यंच में जाने से कोई नहीं रोक सकता।

चिन्तन-मनन करके सोचिये कि हम कौन हैं, कहाँ से आए हैं? अब कहाँ जाने की तैयारी है? (समाप्त)

-128, मिन्ट स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-19

अभिमत

(1)

अभी-अभी जिनवाणी मिली है। इसके 130 पृष्ठ देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। यह तो एक महीने की खुराक है। जिनवाणी में एक भी पृष्ठ अनुपयोगी नहीं है, ऐसा प्रयास प्रंशसनीय है।

-बंशीलाल कोचेटा, शिवाजी नगर,
मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राज.)

(2)

युवा स्तम्भ, जिनवाणी, जून-2011 में प्रकाशित श्री सलमान अर्शद का लेख, "विकास की अवधारणा में आध्यात्मिक मूल्यों का महत्त्व" पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ। आज के युग में विकास का मापदण्ड पैसा, विलासिता की सामग्री, खाद्य सामग्री एवं अन्य उपभोग की वस्तुओं से माना जाता है। क्यों नहीं विकास का मापदण्ड सत्य, अहिंसा, करुणा दया से हो। आज विश्व में ऐसे व्यक्तियों की ही आवश्यकता है जो अपनी मेधा शक्ति से विज्ञान एवं तकनीक का ज्ञान रखें, साथ ही आत्मिक शक्ति से उनका हृदय, प्रेम, शान्ति, दया, करुणा आदि से ओत-प्रोत हो। श्रीमती कमला सिंघवी का "मौन का महत्त्व" बहुत प्रेरणा-पद है। जिनवाणी आध्यात्मिक उन्नति की ओर बढ़ती रहे, बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

-डॉ. श्रीमती निर्मल तातेड़, ए 29 ए, महावीरनगर, जयपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

गृह-लक्ष्मी बने समाज-सरस्वती

डॉ. दिलीप धींग

पिछली सदी में हुई वैज्ञानिक और तकनीकी क्रान्ति के परिणामों और प्रभावों से जीवन का कोई भी पक्ष, वर्ग और क्षेत्र अछूता नहीं रहा। इन क्रान्तिकारी परिवर्तनों के साथ ही लोकतन्त्र और शिक्षा के समर्थन में व्यापक जन जागरण हुए। परिवर्तन की इस हवा से समाज के सभी वर्ग लाभान्वित हुए। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि इस परिवर्तित नई व्यवस्था में महिलाओं को सर्वाधिक लाभ हुआ।

एक-दो पीढ़ी पूर्व की निम्न-मध्यमवर्गीय घरेलू महिलाओं तथा ग्रामीण महिलाओं की जिन्दगी और दिनचर्या देखें तो पता चलता है कि उनके जीवन में परिश्रम ही परिश्रम था। परिवार बड़े होते थे, संयुक्त या अर्द्ध-संयुक्त होते थे तथा घर में काम भी बहुत होता था। सारे छोटे और बड़े घरेलू कार्यों का निष्पादन महिलाओं द्वारा ही किया जाता था। ग्रामीण जीवन में तो घर पर गाय-भैंस भी रखी जाती थीं। उन मवेशियों का बहुत सारा काम होता था। सुबह-सुबह छाछ बिलोना, घट्टी में अनाज पीसना, ओखली में मूसल से रवा, गाट, दालें आदि तैयार करना, कुएँ पर पानी लेने जाना, चूल्हे में लकड़ी जलाकर रसोई तैयार करना, ऐसे चूल्हे पर चढ़ाये गये काले-कलूटे बर्तनों को बड़ी मेहनत से साफ करना, पापड़-पापड़ी, बड़ी, छावड़ी, खरावड़ी आदि पारम्परिक व स्थानीय व्यंजन बनाना, धोवणे से कूट-कूट कर कपड़े धोना जैसे अनेक प्रकार के घरेलू कार्य हुआ करते थे; जिन्हें महिलाएँ बड़ी निष्ठा और मेहनत से किया करती थीं। मैंने बचपन में मेरे घर में इन कार्यों में-से अधिकांश कार्यों को मेरी माताजी के हाथों करते हुए देखा है। वैसी व्यस्त जीवनचर्या में भी उन्होंने हम भाई-बहिनों को शारीरिक श्रम, पढ़ाई-लिखाई (बौद्धिक श्रम) तथा धर्म-ध्यान (आध्यात्मिक श्रम) में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और आज भी देती हैं। जीवन के सन्तुलित व समग्र विकास के लिए इस श्रम-त्रयी की बहुत आवश्यकता है।

अब जमाना बहुत बदल गया है। यह बेहद खुशी की बात है कि

वैज्ञानिक प्रगति, शिक्षा और अनेक प्रकार के घरेलू इलेक्ट्रोनिक उपकरणों तथा अन्य अनेक सुविधाओं ने महिलाओं को जबरदस्त राहत प्रदान की है। फिर भी छोटे-छोटे परिवारों में नई पीढ़ी की पढ़ी-लिखी महिलाओं के मुँह से घर के कामकाज को लेकर शिकायतें सुनाई पड़ती हैं, तो हैरानी होती है। इतना आराम होने के बावजूद कई महिलाओं के सिर, कमर आदि दुखते हैं। शायद कुछ महिलाएँ 'अधिक आराम' से थक जाती हैं और कुछ प्रकार के रोग उन्हें डॉक्टरों से फीस के एवज में उपहार स्वरूप मिल जाते हैं। सन्तों, साहित्यकारों, शिक्षाविदों और विशेष रूप से समर्थ व जागरूक महिलाओं का यह फर्ज है कि वे इस विडम्बनापूर्ण स्थिति से महिलाओं को बाहर निकालें तथा उन्हें अपने परिवार और समाज के लिए वरदानस्वरूप बनाएँ।

परिवर्तित उत्साहवर्द्धक माहौल में महिलाओं ने अनेक भूमिकाओं को अपनाया है। गृहस्थ जीवन की गाड़ी को बढ़िया तरीके से आगे बढ़ाने के लिए महिलाएँ धनार्जन में आगे बढ़ी हैं। इससे एक ओर निम्न-मध्यम परिवारों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी है तो दूसरी ओर स्त्री और पुरुष के बीच अनावश्यक आर्थिक होड़ा-होड़ी के उदाहरण भी देखने-सुनने को मिलते हैं। महिलाओं के द्वारा धनार्जन के दो मुख्य उद्देश्य हैं- आवश्यकता तथा शिक्षा/योग्यता का उपयोग। हालांकि दोनों ही उद्देश्य जीवन का विकास करने वाले हैं, लेकिन प्रथम उद्देश्य अधिक आवश्यक है। यदि आवश्यकता नहीं है अथवा पर्याप्त से सन्तोष है तो दूसरे उद्देश्य को ज्ञानार्जन और ज्ञान-विसर्जन (ज्ञान-प्रचार) की ओर मोड़ा जाना चाहिये। समाज में ऐसे अवसर भी मौजूद हैं, जहाँ ज्ञानार्जन के साथ धनार्जन भी हो जाता है। ऐसा अवसर मिलने पर विनम्रता के साथ जीवन को ज्ञान के लिए समर्पित कर देना चाहिये।

मौजूदा समय में शिक्षा का प्रसार तो तेजी से हुआ है, लेकिन आत्म-ज्ञान और जीवन-विज्ञान के अभाव में शिक्षा के जो सुफल परिवार और समाज को मिलने चाहिये थे, वे पर्याप्त रूप से नहीं मिल पा रहे हैं। समाज में यहाँ-वहाँ आत्मानुशासन और सुसंस्कारों का संकट नजर आता है। परिवार टूट रहे हैं और समाज दिशाहीन होता जा रहा है। अनेक पारिवारिक झगड़े अदालतों में लम्बित पड़े हैं।

बड़े अरमान से माता-पिता अपनी लाड़ली को पढ़ाते-लिखाते और होशियार बनाते हैं। बेटी की काबिलियत पर वे गर्व करते हैं और पता ही नहीं

चलता कब डाल पर बैठी चिड़िया की तरह बेटी फुर्र उड़ जाती हैं। वह अपने माता-पिता के उपकार, अपने कुल का गौरव न जाने कैसे एकाएक बिल्कुल भूल जाती है। शिक्षा का यह एक निराशाजनक पक्ष है। दूसरा निराशाजनक पक्ष यह है कि पढ़ी-लिखी महिलाओं में सहनशक्ति व निभाने की शक्ति का अभाव नज़र आता है। लम्बा समय व्यतीत होने के बावजूद वे न तो अपने ससुराल को अपना घर समझ पाती हैं और न ही ससुराल वालों को अपने घर का सदस्य। बड़े अरमान से बहुओं को अपने घर की सदस्य बनाने वाले सास-ससुर उन्हीं बहुओं के प्रत्यक्ष-परोक्ष रवैये से उपेक्षित जीवन जीने को मजबूर हो जाते हैं। महिलाओं के इस मनमाने रवैये से घर का सौभाग्य कम होता है। ऐसे माहौल में पुरुष सदस्य प्रायः निरुपाय नजर आते हैं और वे सही-गलत के भेद को नज़रअन्दाज करते हुए घर की गाड़ी को हाँकते रहते हैं, जीवन का भार ढोते रहते हैं। अथवा कुछ पुरुष सदस्य सही-गलत के भेद को विस्मृत करके अपने ही परिजनों के साथ पराया व्यवहार करने लग जाते हैं। इससे न स्त्री को लाभ होता है, न पुरुष को, बल्कि परिवार तथा समाज की आन्तरिक शक्ति क्षीण होती है।

सूत्रकृतांग में कहा गया है कि ज्ञानी होने का सार यह है कि किसी जीव की हिंसा न की जाए। मौजूदा शैक्षणिक माहौल में इसे यूँ कह सकते हैं कि शिक्षित होने का सार यह है कि परिवार के बड़े-बुजुर्गों का अनादर नहीं किया जाए और ज़रूरत के मुताबिक उनकी सेवा-सुश्रूषा की जाए। परिवारजनों के बीच मधुर व स्नेहपूर्ण व्यवहार किया जाए। यह भी अहिंसा का ही एक रूप है।

यह तो तय है कि सबका स्वभाव, व्यवहार, योग्यता और क्षमता समान नहीं होते हैं। परिवार के विकास में सबका अपना-अपना योगदान होता है। प्रेम और मैत्री के आंगन में एक साथ बैठकर सबको अपना एकात्मभाव प्रदर्शित करना चाहिये। तब एक और एक दो नहीं, ग्यारह हो जाते हैं। परिवार की ऐसी शक्ति को सत्ता के रूप में नहीं, अपितु सत्य की साधना और मैत्री के विस्तार के रूप में बहुगुणित किया जाना चाहिये। ऐसे परिवार और परिवार के सदस्य समाज व देश के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होते हैं।

भारतीय समाज में परिवार एक मजबूत संस्था के रूप में स्थापित है। इस संस्था की केन्द्रिय इकाई महिला है। महिला की समझदारी से परिवार अधिक शक्तिशाली बनता है। इससे स्वयं महिला भी अधिक सन्तुष्ट व प्रसन्न

बनती है। स्त्री-पुरुष के पारस्परिक सहयोग से परिवार और परिवार के सदस्य समर्थ और योग्य बनते हैं। आज जीवन और समाज के हर क्षेत्र में नारी अपनी सफलता का परचम फहरा रही है। वह शिक्षार्जन और धनार्जन में भी काफी आगे बढ़ी और बढ़ रही है। अब समय की पुकार है कि वह ज्ञानार्जन में भी आगे बढ़े। धनार्जन और ज्ञानार्जन में से यदि किसी एक का चयन करना पड़े तो उसे ज्ञान की उपासना का अधिक हितकर मार्ग चुनकर अपने और दूसरों के जीवन को आलोकित करना चाहिये।

'गृह-लक्ष्मी' की उपाधि धारण किये हुए सदियाँ बीत गई, मेरी भावना है अब महिलाएँ 'गृह-सरस्वती' का विरुद धारण करें। वे स्वयं ज्ञान-ध्यान सीखें, परिवार के सदस्यों को सिखाएँ और समय व सामर्थ्य के अनुसार समाज में भी ज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान करें। उनके इस उपकार से सदियों तक पीढ़ियाँ लाभान्वित होती रहेंगी। ज्ञान की दीपशिखाएँ बनकर महिलाएँ 'गृह-सरस्वती' से 'समाज-सरस्वती' बनें।

ज्ञान की उपासना में एक बात उल्लेखनीय है कि ज्ञान को कण्ठस्थीकरण तक सीमित नहीं रखा जाए, बल्कि ज्ञान के अर्थ और भाव को भी आत्मसात् किया जाए। सीखे हुए ज्ञान का प्रभाव जीवन-व्यवहार में परिलक्षित होना चाहिये। हृदय और आत्मा से जुड़कर ज्ञान सम्यक् बनता है। सीखे हुए को तथा जो सीखा जा रहा है उसे सतत साधना की आँच में तपाया-पकाया जाना चाहिये। ज्ञानी असीम है, उसकी महिमा का कोई पार नहीं है। उसे सम्यक् दर्शन से जोड़ा जाना चाहिये। सम्यक् दर्शन से जुड़कर शिक्षा भी अधिक फलदायी तथा सार्थक बन जाती है। तब लौकिक ज्ञान (शिक्षा) और लोकोत्तर ज्ञान एक दूसरे के पूरक और सहयोगी बन जाते हैं।

ज्ञान में मन रमाने से प्रमाद, प्रपंच, क्लेश और अनावश्यक बातों से ध्यान स्वतः ही हट जाता है। स्वयं और परिवार के लिए यह प्रथम और प्रत्यक्ष लाभ होता है। इसके अलावा ज्ञान से जीवन में समझ, सद्विवेक तथा समग्रता का विकास होता है। ज्ञान का फल मैत्री है। मैत्री-विहीन ज्ञान शुष्क ज्ञान होता है। मैत्री की साधना के लिए क्षमा, त्याग, मर्यादा, कर्तव्यपरायणता जैसे मूल्यों को अपने जीवन में स्थान देना पड़ता है। आज ऐसे ही मूल्यों को परिवार और समाज में अधिकाधिक संक्रमित करने की जरूरत है।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

बाल-स्तम्भ

सफलता का प्रथम सूत्र

गणाधिपति तुलसी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित आलेख को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 नवम्बर 2011 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

निष्ठा सफलता का प्रथम सूत्र है। व्यक्ति जो कुछ करना चाहता है, जो कुछ बनना चाहता है या किसी को कुछ बनाना चाहता है, उस काम में उसकी निष्ठा जितनी सघन होती है, सफलता की संभावना उतनी ही तीव्र बनती है। निष्ठा एक खूंटी है। उस पर व्यक्ति अपने संकल्प-विकल्पों की पोटली टांग कर निश्चिन्त हो जाता है। जब तक निष्ठा निश्छिद्र नहीं होती, संकल्प-विकल्पों का प्रवाह बहता रहता है। इस प्रवाह को रोके बिना कोई भी व्यक्ति पूर्णता के बिन्दु तक नहीं पहुँच सकता।

निष्ठा और बाधाओं में सहानवस्थान नहीं है। निष्ठाहीन व्यक्ति के जीवन में जितनी कठिनाइयाँ आती हैं, निष्ठावान् के मार्ग में उससे अधिक मुसीबतें खड़ी हो सकती हैं। निष्ठा-हीन व्यक्ति कठिनाइयों को देखकर अपनी गति को मोड़ देता है। पर निष्ठाशील व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में पीछे नहीं देखता। वह जीवन में आए उतार-चढ़ावों की मीमांसा करता है, उनके कारणों को खोजता है, कारणों का निवारण करता है और निर्बाध रूप में मंजिल की ओर प्रस्थान कर देता है।

संसार में जितने व्यक्ति अच्छे, बड़े और महत्त्वपूर्ण काम करने वाले हुए हैं, वे संकल्प की शक्ति के सहारे ही शिखर पर आरूढ़ हुए हैं। निष्ठा हो और वांछित सफलता न मिले, यह कभी संभव नहीं है। वर्षा के

लिए प्रार्थना करने वाले बड़े व्यक्ति संदेह से भरे थे। पर एक छोटे बालक का आत्मविश्वास इतना प्रबल था कि उसकी प्रार्थना सच्ची होगी तो वर्षा होकर रहेगी। इसी विश्वास के आधार पर वह अपने साथ छाता लेकर गया। कुछ लोगों ने उसका उपहास किया। किन्तु जब वह प्रार्थना सभा से बाहर आया तो वर्षा प्रारम्भ हो चुकी थी। बालक की निष्ठा ने सबको आश्चर्य में डाल दिया।

बीसवीं (अब इक्कीसवीं) सदी की कुछ विशेष समस्याएँ हैं। उनमें एक बड़ी समस्या है निष्ठा का अभाव। निष्ठा चुक जाने का अर्थ है जीवन का रसातल की ओर प्रयाण। जिस व्यक्ति के पांवों के नीचे से धरातल ही खिसक जाए, वह भला खड़ा कैसे रह पाएगा? इस सदी के लोग अनैतिक आचरण कर रहे हैं, यह कोई बड़ी त्रासदी नहीं है। चिन्ता का विषय है आस्थाहीनता। मनुष्य यह मान बैठा है कि नैतिकता के सहारे जीवन नहीं चल सकता। यह एक ऐसा संक्रामक रोग है, जो दूर से ही व्यक्ति को पकड़ लेता है।

नैतिक लोगों को नीति का आचरण करते देखकर भी कोई व्यक्ति शायद ही यह संकल्प स्वीकार करे कि वह आचार को उज्ज्वल बनाए रखने के लिए अनैतिक आचरण नहीं करेगा। नैतिक मूल्यों की बात तो ऊपर से ऊपर उड़ जाती है। ऐसी परिस्थिति में संसार भर की नैतिक शक्तियाँ कुछ सार्वभौम मुद्दे उठाकर नैतिकता के आलोक को घर-घर पहुँचा सकती हैं। पर यह काम भी गहरी निष्ठा के द्वारा ही संभव है। वह निष्ठा अपने प्रति, अपने सिद्धान्तों के प्रति और अपने कार्य के प्रति समन्वित रूप से हो तो उसके परिणाम को रोका नहीं जा सकेगा।

-*"बैसाखियां विश्वास की" से संकलित*

प्रश्नः-

1. निष्ठा को सफलता का सूत्र क्यों कहा गया है?
2. "संकल्प शक्ति शिखर तक पहुँचाती है।" वाक्य का अभिप्राय समझाइये।
3. बच्चे अनैतिक आचरण कैसे सीखते हैं?
4. अर्थ बताइये- मीमांसा, शिखर, रसातल, त्रासदी, संक्रामक, सार्वभौम।
5. सन्धि-विच्छेद कीजिए- सहानवस्थान, निश्छिद्र, निर्बाध, उज्ज्वल।

(माह अगस्त-2011 का परिणाम आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (19)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह सातवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 नवम्बर 2011 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2

(पृष्ठ 301 से 350 तक से प्रश्न)

यहाँ 40 शब्द दिये हैं, उनमें से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करें:-

1. कुबेरदत्त की अंगूठी उतार कर कुबेरदत्ता की .... में पहना दी।
2. कोढ़ियों के लोभ में .... की सम्पत्ति गंवा देने वाला।
3. माता और पुत्र घोर .... से बचे गये।
4. मेरा भविष्य बड़ा ही भीषण दुःखदायी और .... है।
5. यह .... मेरे पास कहाँ से आई?
6. जो सच्ची लगन होती है वह ...... पूरी होकर ही रहती है।
7. .... के कारण इस मानव ने शत्रु को तो गोद में ले रखा है, मां को पीट रहा है।
8. जैन श्रमण किसी भी दशा में .... भाषण नहीं करते।
9. कुबेरदत्ता को .... की उपलब्धि हो गई।

10. प्रभव! मुक्ति का सुख .... और निरुपम है।
11. बालर्षि की आयु केवल 6 मास की ही ... रह गई है।
12. बारह वर्ष पर्यन्त .... भीषण दुष्काल पड़ेगा।
13. उसने उन्हीं अवधिज्ञानी मुनि के पास .... ग्रहण कर अपना उद्धार किया।
14. .... कृतियों के कारण आप ज्योतिर्धर के रूप में विख्यात रहे।
15. .... ने ठीक ही कहा है कि भोग में रोग का भय है।
16. चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को राजराजेश्वर के पद पर .... किया।
17. .... भगवान् द्वारा प्ररूपित धर्म ही वास्तविक तत्त्व और सही धर्म है।
18. संसार का यह .... नियम है कि एक आता है और एक चला जाता है।
19. उस समय मध्यप्रदेश में भयंकर .... के कारण दुष्काल पड़ा।
20. आचार्य भद्रबाहु उज्जयिनी के .... भाद्रपद नामक स्थान में ठहरे।
21. आपके कथनानुसार .... से न होकर आगल से हुई है।
22. जक्खा आदि सातों ही आर्य .... की बहनें थी।
23. अब इस प्रकार के .... कठोर आचरण का कौन पालन कर सकता है?
24. .... के चार कारण बतलाये हैं।
25. प्रभव का मस्तक श्रद्धा से .... हो गया।

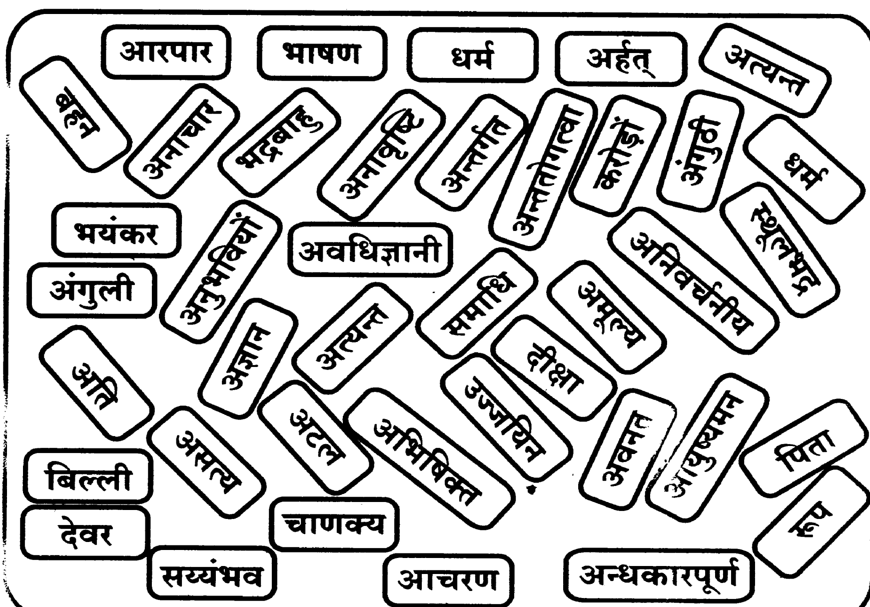

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (17) का परिणाम

जिनवाणी अगस्त, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 225 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्री रोहित ओसवाल-जयपुर

द्वितीय पुरस्कार- भारती सुनील जी सुरपुरे-कोल्हापुर

तृतीय पुरस्कार- आशा राजेन्द्र जी कोठारी-बैंगलोर

सान्त्वना पुरस्कार-

1. सुभाष एम. धाड़ीवाल-भायन्दर पूर्व, मुम्बई (महा.)
2. प्रेमलता सांड-पाली (राज.)
3. मंजु देवी उमेश जी सुराणा-गंगाशहर, बीकानेर (राज.)
4. संगीता जैन-फरीदाबाद (हरियाणा)
5. कल्पना कटारिया-बागलकोट (कर्नाटक)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता-Aditya Jain-Nagpur, Akhilesh-Jodhpur, Amisha Jain-Ajmer, Anil kumar Jain-Kota, Anita A Khivasara-Mumbai, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Anjana Rajendraji Jain-Dewas (M.P), Anu Jain-Hoshiarpur, Aruna Jain-Hosiarpur Punjab, Asha Dosi-Jaipur, Babulal Jain-Mansarovar Jaipur, Babulal Katariya-Hyderabad, Basanta Madanlalji Sanklecha-Dhulia (M.H), Bharti Sunil Surpure-Ichalkaranji, Bhavika Shah -Belgaum, Chandan Mal Gugalia-Pali Marwar, Chandan Mal Parlecha-Jodhpur, Chandni Jain-Indore, Chandra Pokharna-Ajmer, Chandralata mehta-Dudu, Jaipur, Chetana B Bothra-Mumbai, Chirag Jain-Sawai Madhopur, Deepmala Singhvi-Pali Marwar, Devendra Nath Modi-Jodhpur, ·Dharmesh Punamiya-Pali Marwar, Divya Daga-Jaipur, G.C.Kothari-Ajmer, Gunmala Jain-Chittorgarh, Hans Raj Mohnot-Jaipur, Hansa Devi Surana-Bikaner, Harshita Jain-Pali Marwar, Heera Rameshji karnawat-Ahamadnagar, Hem Raj Surana-Jaipur, Hema Kishore Bagmar-Secundrabad, Hemlata Jain-Beawar, Hemlata Kherada-Bhilwara, Indu Bohra-Ajmer, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Janesh Surana-Pali Marwar, Javer Narendra Shah-Belgaum, Jaya Bhandari-Beawar, Jaymala Kankariya-Pali Marwar, Jyoti Ashokji Gandhi-Ichalkaranji, Jyoti Bhansali-Bangalore, Jyoti Lodha-Nagpur, Kalpana Dhakad-Gurgoan, Kalpana I Kathariya-Bagalkot, Kamala Devi Sa+B430tia-Ajmer, Kamala Modi-Jodhpur, Kamla Singhvi-Jaipur, Kamla Surana-Jodhpur, Kamla Surana-Pali Marwar, Kamlesh Gelada-Ajmer, Kanak Bader-Delhi, kanchan Lodha-Nasik, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Kapil Kothari-Jaipur, Kavita Dani-Chittorgarh, Kiran Jain-Hoshiarpur, Kiran Kothari-Jaipur, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Kishore Munisa-Bikaner, Komal Ankur Kothari-Baroda, Krishna Agarwal-Jaipur, Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Kusum Pareshji Punamiya-Ichalkaranji, Lalita Devi Runwal, Lalitha Gadiya-Hyderabad, Leelabai A Kothari-Ahmednagar, Madhu Bala Jain-Bundi, Malliga Nirmal-Vellore, Mamta Bhandari-Nagaur, Mamta Jain-Sawai Madhopur, Manila Parakh-Jaipur, Manju Bhandari-Beawar, Manju Devi Surana-Bikaner, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju Jain-Karauli, Manju Jain -Hoshiarpur, Manju Kanstiya-Kolkata, Manjula Vasant

kumarji Jain-Mumbai, Manoj Kothari-Udaipur, Maya Alijar-Secundrabad, Meena Vijay Bora-Mumbai, Meenu Jain-Chennai, Monika Jain-Kapurthala, Mridula Kumbhat-Jodhpur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Narendra Gopichand Bamb-Bhayandar, Nathmal kothari-Durg (C.G), Naurat Mal Changailiya-Ajmer, Neelam Chipad-Dudu, Jaipur, Neelam Jain-Ajmer, Neelu Jain-Ludhiana, Punjab, Neha Jain-Sawai Madhopur, Nilima Yograjji Chopda-Ichalkaranji, Nirmala Chopra-Jabalpur M.P, Nirmala Kothari-Dudu, Jaipur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Kolhapur, Nisha Jain-Aligarh, Tonk, Nutan Ajit Bhandari-Ichalkaranji, Padam Chand Agarwal-Jaipur, Padam Chand munot-Jaipur, Parasmal D Baghmar-Barmer, Pinky Jain-Jaipur, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Poonam Jain-Faridkot, Punjab, Prabha Gulecha-Bangalore, Prabha Kishan Kataria-Mumbai, Prakash Chand Gadiya-Hyderabad, Prakashbai Bhurawat-Bhandara, Pramila Bohra-Jaitaran, Pramila Kothari-Jodhpur, Pramila Mehta-Dudu, Jaipur, Pramila Mehta-Ajmer, Pramila Sajjanrajsa Mehta-Bangalore, Prasan Gang-Mumbai, Prasan Kothari-Jodhpur, Praveena Kothari-Jaipur, Preeti Jain-Bundi, Preeti khincha-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Prem kanta kothari-Jaipur, Premlata Lodha-Jaipur, Premlata Sand-Pali Marwar, Priti Jain-Ujjain, Priyanka Jain-Jaipur, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa M Golecha-Ajmer, Pushpa Navlakha-Jaipur, Pushpa Prakashchand Kankariya-Raichur, Rajendra Kumar Chopra-Jabalpur M.P, Ranulal Kocchar-Nasik, Reema Jain-Ludhiana, Punjab, Rekha Kothari-Ajmer, Renu Heerawat-Jaipur, Rikab Raj Bohra-Delhi, Rishabh Jain-Bundi, Rohit Oswal-Jaipur, Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Sagar mal Nahar-Chittorgarh, Sangeeta Jain-Sawai Madhopur, Sangeetha P Baid-Chennai, Sangita A Singavi-Nasik, Sangita Nainsukhji Aligar-Jalgaon, Sangita Rameshji Chordiya-Nasik, Sangita Ravindra Chhajed-Jalgaon, Sarita Manoj Babel-Ichalkaranji, Sarla Golecha-Beawar, Sarla Kankariya-Jalgaon, Saroj Nahar-Delhi, Saroj Parasmalji Runwal-Dhulia (M.H), Seema Dhing-Udaipur, isha-Aligarh, Tonk, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shakuntala Hansrajji Bohra-Ichalkaranji, Shakuntala Khushalchand Khivasara-Jalgaon, Shanta Chumnji Pitaliya-Amravati (M.H), Shashank Choudhary-Jaipur, Shashikala Sakhlecha-Bangalore, Sheelu Hirawat-Jaipur, Siddhi Bafna-Jodhpur, Subhash M Dhadiwal-Mumbai, Sudarshan Surana-Bikaner, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sudha Daga-Bikaner, Sugan Chand Chajjer-Jodhpur, Suman Jain-Pali Marwar, Sunayana Gelra-Borawar, Sunita Doshi-Beawar, Sunita Dulaj-Jaipur, Sunita Kankariya-Ahemdabad, Sunitha Y Singhvi-Chennai, Surekha Nemichandji Nahar-Jaipur, Suresh Chand Jain-Alwar, Suresh Kumar Sand-Pali Marwar, Surya Kala Bagmar-Chennai, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Gang-Jodhpur, Sushila Ranka-Jalgaon, Suvarna Nitin Bora-Ichalkaranji, Ugma Devi Duggar-Bangalore, Urmila Mehta-Jaipur, Usha Lunawat-Ajmer, Usha Surana-Jaipur, Vandana Anil khicha-Surat, Vandana Punamiya-Pali Marwar, Varsha Dosi-Nagaur, Veena Tarunkumar Kimati-Neemuch M.P, Vidhya Sanghvi-Badnawar, Vijaimal Mehta-Jodhpur, Vijay Laxmi Mohnot-Jaipur, Vijaya devi Bagmar, Vikas Bamb-Mumbai, Vimla Ranulal Kocchar-Nasik, Yugal Nemichand Ranka-Ahmedabad, Neelam Jain-Agra, Hemant Jain-Jaipur, Vijay Kothari-Ajmer, Neelam Jain-Gurgoan, Savitri Jain-Baran, Neeta Jain-Ajmer, Asha Rajendraji Kothari-Bangalore, Nirmla Bafna-Jodhpur, Sangeeta Jain-Haryana, Dal Chand Jain-Jaipur, kamala Jain-Jaipur, Mitali Gandhi-Bhilwara, Parasmal Kataria-Bhilwara, Shanta Kataria-Bhilwara, Padma R Bohra-Raichur.

24 या इससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Milap Parasmal Lunawat-Ahmedabad, Neetu Gulecha-Hyderabad, Nirmala Hamirmal Surana-Bikaner, Priya Dhammani-Ahmedabad, Shobha Nahar-Secundrabad, Smita Nileshji Muthiyan-Ichalkaranji, Ugama Bai Dosi-Secundrabad, Vimla Bohra-Jaipur, Sapna Jain-Sawai Madhopur, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Chandrakala Dilipji ranka-Jalgaon.

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 400 स्वाध्यायियों द्वारा 160 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 65 वर्षों से, जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के लगभग 1200 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए इस संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं जो व्यावाहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड, एल.एल.बी., पी-एच.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी विशिष्ट उपाधियों से अलंकृत हैं।

इस वर्ष पर्युषण पर्व दिनाँक 25 अगस्त से 01 सितम्बर 2011 तक मनाए गए। पर्वाराधन में उत्तरप्रदेश पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में मेवाड़-मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े, दूर व निकट के 160 क्षेत्रों में लगभग 400 स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की। **जिनवाणी के प्रस्तुत अंक में महाराष्ट्र एवं दक्षिण क्षेत्रों की रिपोर्ट प्रकाशित की जा रही है। शेष क्षेत्रों की रिपोर्ट आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।**

महाराष्ट्र क्षेत्र

01	सिल्लोड़	-	श्री रतनलाल जी बाफना-जलगांव
			सौ. नयनतारा जी बाफना-जलगांव
			श्री अशोक जी कांकरिया-जलगांव
			सुश्री चित्रा जी धाडिवाल-जलगांव
02	मुम्बई	-	श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर
			श्रीमती शान्ता जी मोदी-जयपुर
			श्री इन्द्रप्रकाश जी जैन-जयपुर
			श्री प्रदीप जी धारीवाल-मुम्बई
03	जामनेर	-	श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव
			श्री कंवलराज जी सिंघवी-जलगांव
			श्री अनिल जी कोठारी-जलगांव

			श्री अजय जी राखेचा-जलगांव
04	डोम्बिवली	-	सौ. विजया जी मल्हारा-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी सांखला-जलगांव
			सौ. मंगला जी राखेचा-जलगांव
05	मुक्ताईनगर	-	श्री मनोज जी संचेती-जलगांव
			सुश्री सुजाता जी तालेरा-फत्तेपुर
			सुश्री पूनम जी संचेती-सिल्लोड़
06	विटनेर	-	सौ. शकुन्तला जी कटारिया-जलगांव
			सौ. कान्ता जी भंसाली-जलगांव
			सौ. सरोज जी बाफना-जलगांव
07	चांदुर रेलवे	-	श्रीमती कमला जी पगारिया-धरणगांव
			सुश्री स्नेहा जी छाजेड़-बांबरूड
			सुश्री नूतन जी चोरडिया-पारोला
08	वरणगांव	-	सौ. छाया जी भण्डारी-जलगांव
			सौ. सुनीता जी बरडिया-जलगांव
			श्रीमती कान्ता जी लुंकड़-जलगांव
09	लासुर	-	श्रीमती विमला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी नवलखा-जलगांव
			सौ. कल्पना जी पगारिया-जलगांव
10	कासारे	-	सौ. बसन्ता जी संकलेचा-नरडाणा
			सुश्री भारती जी छाजेड़-मुकटी
11	बुरहानपुर	-	सौ. सरला जी बम्ब-भड़गांव
			सौ. योगिता जी खिंवसरा-मुकटी
			सुश्री प्रिंयका जी छाजेड़-बांबरूड
12	न्यायडोंगरी	-	श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर
			श्री हितेश जी जैन-जयपुर
			श्री अमित जी जैन-जयपुर
13	वरखेड़ी	-	श्री कमलेश जी मेहता-जोधपुर
			श्री राजेश जी चौपड़ा-जोधपुर
14	सतारा	-	सौ. ललिता जी कटारिया-जलगांव
			सौ. पुष्पा जी बनवट-जलगांव
			सौ. कंचन जी भंसाली-जलगांव
15	फागणा	-	सौ. ज्योति जी गादिया-भुसावल
			सौ. कान्ता जी जैन-जलगांव

			सुश्री प्रियंका जी गादिया–भुसावल
16	भण्डारा	–	श्री सुभाष जी सुराणा–वाशिम
			सुश्री विनिया जी छाजेड़–जलगांव
			सुश्री आयुषी कांकरिया–जलगांव
17	तोंड़ापुर	–	सुश्री दीपिका जी दुग्गड़–नरडाणा
			सुश्री पूजा जी भण्डारी–शिरूड
			सौ. मंगला जी पारख–कासारे
18	वाकोद	–	सौ. शोभा जी लुणावत–भड़गांव
			सुश्री भाग्यश्री जी लुंकड़–जलगांव
			सौ. मोनाली जी भण्डारी–जलगांव
19	हरसुद	–	सौ. तिलोत्तमा जी ओस्तवाल–भड़गांव
			सौ. माया जी श्रीश्रीमाल–भड़गांव
			सौ. मंजुला जी लुणावत–भड़गांव
20	कजगांव	–	श्रीमती लीला जी सालेचा–जलगांव
			श्रीमती विमला जी सिंगी–धुलिया
			सौ. चेतना जी छाजेड़–बांबरूड
21	चिंचाला	–	श्रीमती मोहनीदेवीजी कच्छवाहा–जोधपुर
			सुश्री अंकिता जी छाजेड़–बांबरूड
			सुश्री रश्मि जी वेदमुथा–नागद
22	सौंदाणा	–	श्री हीरालाल जी मंडलेचा–जलगांव
			सुश्री खुशबु जी जैन–जलगांव
			सुश्री राखी जी कर्णावट–सौंदाणे
23	देऊरबुद्रक	–	सुश्री राखी जी संकलेचा–नरडाणा
			सुश्री पूजा जी मुथा–देऊर
24	कामठी	–	श्री रितेश जी सुराणा–जलगांव
			श्री नरेश जी हुण्डीवाल–जलगांव
25	वाकड़ी	–	सौ. निर्मला जी छोरिया–जलगांव
			सौ. लीला जी तोडरवाल–जलगांव
			सौ. पारसबाई जी बोहरा–जलगांव
26	शिरूड	–	सौ. सुरेखा जी चोरडिया–पाचोरा
			सुश्री शीतल जी छाजेड़–वाकड़ी
			सुश्री रश्मि जी छाजेड़–जलगांव
27	जायखेड़ा	–	सौ. अनिता जी लुंकड़–जलगांव
			सौ. कुसुम जी लुंकड़–जलगांव

			सुश्री स्नेहा जी लुंकड़-जलगांव
28	उम्ब्रखेड़	-	श्रीमती निर्मला जी जैन-जलगांव
			सौ. कंचन बाई जी सांड-जलगांव
29	कासमपुरा	-	सुश्री निधि जी सुराणा-जोधपुर
			सुश्री चेतना जी बोहरा-जोधपुर
30	दुसरबीड़	-	श्री रमेश जी भंसाली-फत्तेपुर
			श्री विजय जी रांका-फतेपुर
31	अम्बेजोगाई	-	सौ. मनीषा जी भंडारी-शिरूड
			श्री महावीर जी धोका-बीड़
			सौ. मंगला जी ललवाणी-शिरूड
32	तासगांव	-	श्री महावीर जी गुलेच्छा-वाकोद
			श्री विलास जी कोचर-फत्तेपुर
			श्री तुषार जी संकेलचा-पूना
33	बड़वानी	-	मधुबालाजी मनन-जलगांव
			श्रीमती दर्शना जी अजमेरा-जलगांव
34	वालुज	-	श्रीमती सायरबाई जी सुराणा-शिरपुर
			सौ. चन्द्रकला जी बाफना-शिरपुर
35	रत्नागिरी	-	श्री अतुल जी मुणोत-चेन्नई
			श्री महावीर जी आंचलिया-मुम्बई
36	नरडाणा	-	डॉ. वर्धमान जी लोढ़ा-मालेगांव
			सौ. कंचन जी मुथा-भोपालगढ
			श्री मनोज जी बुरड़-मालेगांव
			सुश्री सेजल जी कोचर-चौपड़ा
37	केलसी	-	सौ. हेमलता जी सांखला-मुम्बई
			सौ. प्रसन्ना जी जैन-मुम्बई
			सौ. इन्द्रा जी जैन-मुम्बई
38	आलेगांव	-	श्री चेनकरण जी कटारिया-जलगांव
39	चिखली	-	श्रीमती उषा जी चोरडिया-भड़गांव
			सुश्री कोमल जी आंचलिया-चालीसगांव
			सुश्री सरिता जी चोरडिया-वाकड़ी
40	बोरकुण्ड	-	श्री मुकेश जी चोरडिया-पारोला
			डॉ. निलेश जी चोरडिया-पारोला
			सुश्री स्वाति जी लोढ़ा-पारोला
41	चिपलुन	-	श्री जिनेन्द्र जी जैन-मुम्बई

			श्री चन्द्रकान्त जी हीरण–कजगांव
			श्री धमेन्द्र जी मुणोत–अमरावती
42	दापोली	–	श्री लविश जी जैन–जयपुर
			श्री गजेन्द्र जी जैन–जयपुर
43	हीरापुर	–	श्री अशोक जी पीतलिया–भोपाल
			सुश्री प्रियंका जी संचेती–हीरापुर
44	शेलवड़	–	श्रीमती सरला जी मेहर–जलगांव
			सौ. विजया जी सिंघवी–जलगांव
			सौ. लीला जी आंचलिया–जलगांव
45	मांगलादेवी	–	श्री दिपचन्द जी बोथरा–पाचोरा
			श्री निलेश जी वेदमुथा–नागद
46	धामणगांव	–	सौ. सुशीला जी समदडिया–जलगांव
			सौ. पूजा जी खिंवसरा–सिन्नर
			सौ. निर्मला जी डोसी–जलगांव
47	खलना	–	श्री सागरमल जी सर्राफ–उदयपुर
			श्री जगदीशमल जी कुम्भट–जोधपुर
			श्रीमती विमला जी चौपड़ा–जोधपुर
48	वाघली	–	श्रीमती सुशीला जी गुलेछा–जोधपुर
			श्रीमती शांति जी मेहता–जोधपुर
			सुश्री खुशबु जी पारख–पीपाड़
49	नसीराबाद	–	सुश्री दिपीका जी कांकरिया–जोधपुर
			श्रीमती कंचन जी रांका–जोधपुर
			सुश्री सपना जी मुथा–पीपाड़
50	लौहारा	–	श्री पंकज जी डोसी–जोधपुर
			श्री धर्मेश जी चौपड़ा–जोधपुर
51	बेटावद	–	श्री निर्मल जी मुथा–पीपाड़
			श्री धीरज जी जैन–जोधपुर
52	भराड़ी	–	श्री राजमल जी संचेती–अमलनेर
			श्री पुखराज जी कोठारी–लासुर
53	खेड़	–	श्री अंकित जी जैन–जयपुर
			श्री सचिन जी जैन–जयपुर
54	मंडनगढ़	–	श्री राजेश जी भण्डारी–जोधपुर
			श्रीमती सरला जी भण्डारी–जोधपुर
55	मेहकर	–	श्रीमती ताराबाई जी डाकलिया–जलगांव

			श्रीमती गीता बाई पगारिया-जलगांव
			सौ. उषा जी कटारिया-जलगांव
			श्रीमती लीला जी बागरेचा-मुक्ताई नगर
56	पीलखोड़	-	श्री माणकचद जी गादिया-चालीसगांव
			श्री सुधा जी आंचलिया-चालीसगांव
57	किनगांवराजा	-	सौ. सन्तोषबाई जी सिसोदिया-चिखली

दक्षिण क्षेत्र

58	टी. नगर	-	श्री फुलचन्द जी जैन-उदयपुर
			श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा
			श्रीमती प्रेमदेवी जी जैन-चेन्नई
59	ऊटी	-	डॉ. जीवराज जी जैन-जमशेदपुर
			डॉ. अशोक जी कवाड़-चेन्नई
			श्रीमती जीवराज जी जैन-जमशेदपुर
60	मिरसाहीबपेठ	-	श्री मुन्नालाल जी भण्डारी-जोधपुर
			श्री विनयचन्द जी जैन-आलनपुर
			श्री गौतमचन्द जी मोहनोत-चेन्नई
61	नुगम्बाकम	-	श्री पवन जी जैन-चेन्नई
			श्री जितेश जी जैन-जयपुर
62	वेलाचेरी	-	श्री रतनलाल जी जैन-बजरिया
			सुश्री प्रतिभा जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री किरण जी जैन-अलीगढ़
63	आरकाट	-	श्री शान्तिलाल जी गाँधी-सिंगोली
			श्री संतोष जी गाँधी-सिंगोली
			श्रीमती सौरभदेवी जी गाँधी-चेन्नई
			सुश्री श्वेता जी चौधरी-चेन्नई
64	तिरूतनी	-	श्री दिनेश जी नाहटा-नगरी
			श्री अनिल जी ढेलडिया-नगरी
65	कालीकट	-	श्री चम्पालाल जी बोथरा-चेन्नई
			श्री हस्तीमल जी बोहरा-पीपाड़
			श्री ललीत जी जैन-जयपुर
66	क्रोमपेट	-	श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री तरूण जी बोहरा-चेन्नई
			श्री सुपारस जी चोरडिया-चेन्नई

			सुश्री भाविका जी जैन-अलीगढ़
67	छेयर	-	श्री मनीष जी जैन-चेन्नई
			सुश्री ममता जी जैन-अलीगढ़
			सुश्री अंकिता जी जैन-आलनपुर
68	चिदम्बरम	-	श्रीमती मोहिनीदेवी जी जैन-आलनपुर
			सुश्री जयमाला जी जैन-सवाईमाधोपुर
			सुश्री रचना जी जैन-सवाईमाधोपुर
69	गुडवानचेरी	-	श्रीमती शकुन्तला जी तातेड़-बैतुल
			श्रीमती कमला जी गोठी-बैतुल
			श्रीमती ज्योति जी चौपड़ा-बैतुल
			सुश्री डिम्पल जी डुंगरवाल-चेन्नई
70	कावेरीपाकम	-	श्री पदमचन्द जी जैन-चेन्नई
71	कोलीडम	-	श्री धर्मचन्द जी जैन-खेरली
			सुश्री लवली जी जैन-खेरली
			सुश्री आभा जी जैन-खेरली
72	कृष्णागिरी	-	श्री विमलचन्द जी मुथा-पल्लीपट्ट
			श्री सौरभ जी जैन-खेरली
73	नेलीकुप्पम	-	श्री महावीरप्रसाद जी जैन-गंगापुर सिटी
			सुश्री चित्रा जी जैन-आलनपुर
			सुश्री वैशाली जी जैन-अलीगढ़
			श्री अभयकुमार जी सुराना-चेन्नई
74	पाड़ी	-	श्री आशीष जी सुराना-चेन्नई
			श्रीमती कमलेश जी जैन-चेन्नई
			सुश्री नम्रता जी नाहटा-के.जी.एफ.
75	पल्लीपेट	-	श्री दिलरूपचन्द जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती दिलरूपचन्द जी भण्डारी-जोधपुर
76	श्रीकालाहस्ती	-	श्री सुनील जी जैन-चेन्नई
			श्री पियुष जी जैन-जयपुर
77	शिवाकाशी	-	श्री सौभाग्यमल जी जैन-बजरिया
			श्री कमलचन्द जी ओस्तवाल-चेन्नई
			श्री अशोक जी बाफना-चेन्नई
78	तिरूवन्नामल्लई	-	श्री राजेन्द्र जी पटवा-जयपुर
			श्री निर्मल जी बोहरा-चेन्नई
			श्री पारस जी खिंवसरा-चेन्नई

79	कालाड़ीप्रेठ	–	सुश्री रिंकी जी जैन–अलीगढ़
			सुश्री मोनिका जी जैन–सवाईमाधोपुर
			सुश्री दीपिका जी जैन–सवाईमाधोपुर
			सुश्री टीना जी जैन–सवाईमाधोपुर
			सुश्री सपना जी जैन–सवाईमाधोपुर
80	टिण्डीवनम	–	श्री धर्मेन्द्र जी जैन–चेन्नई
			श्री राजेन्द्रप्रसाद जी जैन–सवाईमाधोपुर
			श्री कुलदीप जी सुराना–चेन्नई
81	उलुन्दुरपेठ	–	श्री मनोज जी जैन–चेन्नई
			श्री नितीश जी जैन–सवाईमाधोपुर
			श्री शुभम जी जैन–जयपुर
82	उत्तरामेयुर	–	श्री बाबुलाल जी जैन–आलनपुर
			श्री दिपचन्द जी रांका–चेन्नई
83	पेरम्बाकम	–	श्री योगेश जी जैन–जयपुर
			श्री कमलेश जी गाँधी–चेन्नई
84	तिरूवनामियूर	–	श्रीमती सुर्यकला जी बाघमार–चेन्नई
85	चेटपेट–चेन्नई	–	श्रीमती कनकमाला जी कुम्भट–चेन्नई
86	चुल्लईमेडु	–	श्रीमती संगीता जी बोहरा–चेन्नई
			श्रीमती उषा जी कवाड़–चेन्नई
			श्रीमती शौभा जी कवाड़–चेन्नई
87	शैनायनगर	–	श्री राजेन्द्र जी बाघमार–चेन्नई
88	चितुर	–	श्रीमती विमला जी चोरडिया–चेन्नई
			सुश्री सपना जी कर्नावट–चेन्नई
89	होसुर	–	श्री रमेश जी जांगड़ा–चेन्नई
			श्री विरेन्द्र जी कांकरिया–चेन्नई
			श्री विरेन्द्र जी ओस्तवाल–चेन्नई
			श्री अजित जी जांगड़ा–चेन्नई
90	कदम्बातुर	–	श्री लीलम जी बाघमार–चेन्नई
			श्री महावीर जी बाघमार–चेन्नई
91	कोंडितोप	–	श्री सुनील जी सांखला–चेन्नई

नवरतन डागा
संयोजक

राजेश भण्डारी
सचिव

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 31 जुलाई 2011 को आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थाई वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो सादा कागज पर प्रार्थना-पत्र व 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 10 नवम्बर 2011 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

अस्थायी वरीयता सूची

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
8063	शीला हीरालाल जी लोढा	परली वैजनाथ	99.75	प्रथम
79467	नेहा उत्तमचन्द जी नखत	गंगाखेड़	99.50	द्वितीय
80513	नीतू धीरज जी शाह	गांधीधाम(कच्छ)	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

71601	सुदर्शना पदमचन्द जी भंडारी	नांदेड़	99.75	प्रथम
71694	मंगला राजेन्द्र जी बनवट	छनेरा	99.50	द्वितीय
74136	प्रतिभा सुधीर जी जैन	महावीर नगर, जयपुर	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

72911	जसराज रावलचन्द जी गोलेच्छा	बाडमेर	97.00	प्रथम
68795	कल्पना सुनील जी संचेती	पुणे	96.50	द्वितीय
69287	रीतू देवेन्द्रकुमार जी जैन	खेरली	95.50	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

62265	प्रेमलता सुभाषचन्द जी कोठारी	विरगमबाक्कम	97.50	प्रथम
62905	विजया रमेशचन्द जी संचेती	चालीसगांव	96.50	द्वितीय
71424	रेखा रविकान्त जी जैन	बजरिया	95.75	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पंचम कक्षा)

62866	छाया पारसमल जी संकलेचा	शिरपुर	99.75	प्रथम
59836	सीमा संतोष कुमार जी लुंकड़	वेस्ट सैदापेट	99.50	द्वितीय
62867	प्राची धनराज जी बाफना	शिरपुर	99.25	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

58594	रेणुका राजीन्दर जी जैन	जम्मू	99.00	प्रथम
59896	संगीता नीरज जी मरडिया	अन्ना नगर, चेन्नई	98.00	द्वितीय
63976	चविता पीयूष जी जैन	सुबोध स्कूल, जयपुर	96.00	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

62701	सारिका राजेन्द्र जी बच्छावत	कोलकाता	99.00	प्रथम
58915	दीपिका हरीश कुमार जी जैन	अलीगढ़	98.50	द्वितीय
57116	सोनाली संदीप जी बोथरा	सुबोध स्कूल, जयपुर	98.00	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

78781	प्रियंका चैनराज जी गोगड़	हुबली	99.00	प्रथम
58057	पूजा पारसमल जी दर्डा	गंगाखेड़	98.00	द्वितीय
80942	धनवन्ती कल्पेश जी चौधरी	धुलिया	97.25	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध (नवमीं कक्षा)

63675	जयश्री सुरेश जी पटवा	मलाड़-मुम्बई	92.00	प्रथम
75052	अनिता प्रकाशचन्द जी गोलेच्छा	अम्बातुर	90.00	द्वितीय
75050	प्रमिला कुशलराज जी विनायक्या	अम्बातुर	88.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-उत्तरार्द्ध (दसवीं कक्षा)

70783	लता अभय कुमार जी लोढ़ा	मधुरान्तकम	96.00	प्रथम
58533	शोभा गौतमचन्द जी तालेड़ा	कुकनुर	95.50	द्वितीय
70782	सपना विजय कुमार जी लोढ़ा	मधुरान्तकम	95.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर (ग्यारहवीं कक्षा)

72245	अरूणा गौतम जी सिंघी	नागपुर	98.00	प्रथम
62879	निहालचन्द गुलाबचन्द जी सेठिया	शिरपुर	94.50	द्वितीय
65616	प्रियंका हेमराज जी जैन	महावीर भवन, जयपुर	93.50	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री (बारहवीं कक्षा)

57585	किरण प्रकाशचन्द जी कोठारी	बोदवड़	96.00	प्रथम
57308	कुसुमबाई परेश कुमार जी पुनमिया	इचलकरंजी	95.50	द्वितीय
57517	छाया मनोहर जी भंडारी	जलगाँव	95.00	तृतीय

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

(I) 80638 (II) 79467 (III) 80513

51912, 54440, 57106, 57271, 57278, 57453, 57470, 57494, 57534, 57764, 57768, 57777, 57789, 57792, 57826, 58068, 58085, 58111, 58193, 58346, 58833, 58867, 58894, 58938, 59108, 59148, 59571, 59646, 59855, 60591, 60935, 60990, 61109, 61506, 61510, 61513, 61596, 61899, 62493, 62536, 62537, 62687, 63429, 63690, 63822, 63888, 63892, 63894, 63908, 64013, 64024, 64093, 64163, 64166, 64560, 64704, 65245, 65255, 65319, 65446, 65605, 65729, 65983, 66026, 66124, 66164, 66302, 66315, 66366, 66473, 66522, 66524, 66628, 66905, 66920, 67291, 67528, 67543, 67592 67648 , 67704 , 67820, 67833,

67853,68011, 68127, 68184, 68247, 68379, 68435, 68640, 68926, 68943, 69068, 69083, 69085, 69089, 69090, 69159, 69353, 69447, 69484, 69546, 69644, 69647, 69669,69759, 69802, 69823, 69830, 69890, 69898, 70066, 70070, 70082, 70104, 70153, 70154, 70204, 70215, 70265, 70272, 70344, 70371, 70449, 70452, 70620, 70673, 71341, 71512, 71543, 71592, 71709, 71736, 71827, 71869, 71890, 71891, 71892, 71937, 71948, 71953, 71959, 71992, 72013, 72042, 72048, 72087, 72090, 72135, 72213, 72265, 72270, 72416, 72572, 72598, 72656, 72938, 73021, 73034, 73039, 73054, 73080, 73247, 73276, 73305, 73414, 73586, 73792, 73872, 73976, 74223, 74269, 74279, 74294, 74300, 74502, 74530, 74531, 74618, 74673, 74688, 74792, 74852, 7486, 74949, 75032, 75063, 75192, 75314, 75369, 75406, 75415, 75417, 75420, 75516, 75674, 75690, 75694, 75698, 75755, 75758, 75764, 75798, 75831,75832, 75846, 75859, 75865, 75868, 75890, 75892, 75902, 75904, 75909, 75920, 75925, 75929, 75941, 75947, 75953, 75954, 75976, 75999, 76002, 76012, 76015, 76017, 76023, 76087, 76160, 76249, 76432, 76497, 76508, 76511, 76583, 76614, 76646, 76649, 76654, 76683, 76684, 76781, 76782, 76785, 76790, 76879, 76897, 76929, 76950, 77003, 77048, 77050, 77078, 77087, 77096, 77164, 77273, 77359, 77362, 77420, 77511, 77513, 77550, 77566, 77681, 77831, 77836, 77838, 77895, 77898, 77917, 77918, 77919, 78083, 78118, 78167, 78168, 78266, 78279, 78295, 78298, 78300, 78301, 78303, 78304, 78312, 78313, 78314, 78326, 78354, 78358, 78366, 78367, 78368, 78370, 78371, 78372, 78373, 78374, 78376, 78377, 78380, 78381, 78382, 78383, 78384, 78392, 78393, 78394, 78395, 78397, 78403, 78404, 78406, 78407, 78408, 78409, 78410, 78411, 78412, 78413, 78414, 78415, 78416, 78419, 78420, 78421, 78430, 78433, 78436, 78437, 78443, 78444, 78445, 78450, 78457, 78458, 78459, 78461, 78477, 78478, 78479, 78485, 78486, 78487, 78488, 78489, 78497, 78500, 78501, 78502, 78505, 78506, 78507, 78510, 78512, 78513, 78514,, 78515, 78522, 78523, 78524, 78526, 78528, 78533,78536, 78538, 78539, 78546, 78547, 78555, 78559, 78561, 78562, 78563, 78564, 78565, 78573, 78574, 78582, 78583, 78586, 78600, 78604, 78605, 78612, 78620, 78624, 78629, 78632, 78634, 78635, 78637, 78639, 78640, 78641, 78642, 78645, 78646, 78647, 78654, 78655, 78656, 78657, 78658, 78660, 78662, 78664, 78665, 78672, 78690, 78691, 78692, 78696, 78697, 78704, 78714, 78722, 78723, 78725, 78732, 78742, 78743, 78744, 78745, 78746, 78749, 78755, 78756, 78757, 78762, 78764, 78765, 78766, 78767, 78768, 78770, 78771, 78772, 78773, 78774, 78775, 78776, 78777, 78778, 78779, 78780, 78786, 78787, 78797, 78804, 78813, 78825, 78826, 78828, 78851, 78855, 78856, 78864, 78867, 78868, 78869, 78870, 78877, 78885, 78887, 78888, 78891, 78896, 78897, 78902, 78911, 78921, 78933, 78942, 78948, 78962, 78975, 78976, 78978, 78979, 78988, 78989, 78991, 78992, 78995, 78998, 79000, 79003, 79004, 79005, 79006, 79030, 79080, 79081, 79083, 79084, 79085, 79094, 79098, 79099, 79100, 79119, 79121, 79122, 79123, 79124, 79127, 79129, 79130, 79131, 79132, 79133, 79138, 79142, 79149, 79153, 79154, 79158, 79163, 79164, 79171, 79172, 79174, 79179, 79181, 79185, 79189, 79195, 79197, 79199, 79201, 79203, 79208, 79221, 79223, 79226, 79230, 79242, 79245, 79249, 79259, 79262, 79263, 79265, 79276, 79277, 79279, 79280, 79285, 79286, 79289, 79291, 79293, 79295, 79297, 79300, 79301, 79305, 79306, 79307, 79308, 79309, 79310, 79311, 79314, 79317, 79318, 79319, 79320, 79322, 79324, 79338, 79339, 79343, 79344, 79345, 79346, 79347, 79349, 79350, 79352, 79353, 79355, 79356, 79358, 79359, 79401, 79402, 79413, 79416, 79425, 79438, 79442, 79445, 79446, 79447, 79448, 79449, 79450, 79451, 79452, 79453, 79457, 79458, 79464, 79466, 79467, 79469, 79474, 79491, 79494, 79495, 79496, 79503, 79504, 79518, 79520, 79521, 79523, 79528, 79531, 79536, 79538, 7540, 79543, 79552, 79557, 79562, 79563, 79564, 7565, 79574, 79575, 79576, 79577, 79578, 79579, 79580, 79582, 79586, 79589, 79590, 79594, 79600, 79608, 79609, 79610, 79611, 79621, 79625, 79627, 79629, 79632, 79633, 79635, 79636, 79639, 79640, 79643, 79644, 79648, 79649, 79650, 79651, 79653, 79654, 79658, 79659, 79677, 79688, 79689, 79690, 79691, 79694, 79696, 79704, 79708, 79710, 79717, 79718, 79721, 79724, 79725, 79726, 79728, 79730, 79756, 79757, 79759, 79766, 79773, 79774, 79785, 79810, 79816, 79832, 79838, 79840, 79841, 79842, 79843, 79847, 79849, 79850, 79852, 79855, 79856, 79857, 79858, 79859, 79862, 79863, 79865, 79867, 79870, 79874, 79886, 79892, 79901, 79913, 79916, 79917, 79921, 79922, 79933, 79940, 79941, 79945, 79947, 79952, 79953, 79955, 79957, 79972, 79974, 79976, 79977, 79979, 79980, 79982, 79984, 79985, 79993, 79998, 80040, 80046, 80047, 80050, 80084, 80093, 80094, 80095, 80097, 80104, 80105, 80109, 80110, 80113, 80115, 80126, 80130, 80132, 80135, 80138, 80144, 80145, 80155, 80164, 80169, 80178, 80181, 80182, 80184, 80185, 80186, 80187, 80188, 80190, 80191, 80192, 80198, 80200, 80201, 80202, 80203, 80207, 80209, 80213, 80215,

80217, 80218, 80219,80224, 80228, 80230, 80239, 80240, 80241, 80242, 80244, 80247, 80249, 80251, 80252, 80258, 80259, 80269, 80276, 80280, 80283, 80286, 80287, 80291, 80294, 80296, 80303, 80304, 80305, 80306, 80308, 80321, 80323, 80324, 80333, 80336, 80337, 80338, 80347, 80348, 80353, 80357, 80358, 80362, 80364, 80365, 80367, 80377, 80378, 80380, 80382, 80383, 80384, 80385, 80386, 80387, 80389, 80390, 80391, 80392, 80393, 80399, 80400, 80405, 80406, 80407, 80408, 80410, 80412, 80417, 80419, 80421, 80422, 80427, 80429, 80430, 80431, 80443, 80444, 80446, 80448, 80453, 80457, 80459, 80460, 80473, 80474, 80477, 80478, 80481, 80483, 80484, 80485, 80488, 80490, 80492, 80496, 80509, 80511, 80513, 80514, 80517, 80518, 80519, 80523, 80524, 80530, 80532, 80555, 80557, 80560, 80561, 80562, 80563, 80570, 80571, 80572, 80573, 80575, 80577, 80578, 80579, 80580, 80581, 80591, 80592, 0593, 80594, 80595, 80601, 80602, 80604, 80605, 80606, 80607, 80608, 80609, 80610, 80611, 80612, 80613, 80614, 80615, 80616, 80617, 80619, 80620, 80621, 80623, 80624, 80625, 80626, 80627, 80630, 80631, 80633, 80638, 80639, 80640, 80641, 80645, 80646, 80648, 80649, 80655, 80656, 80657, 80658, 80659, 80660, 80661, 80666, 80668, 80669, 80672, 80673, 80674, 80675, 80676, 80677, 80678, 80679, 80682, 80683, 80686, 80687, 80689, 80690, 80691, 80693, 80698, 80707, 80712, 80714, 80715, 80718, 80721, 80737, 80755, 80758, 80759, 80785, 80787, 80788, 80789, 80790, 80791, 80792, 80795, 80798, 80801, 80802, 80803, 80804, 80805, 80807, 80812, 80813, 80819, 80824, 80827, 80828, 80829, 80830, 80841, 80842, 80843, 80844, 80845, 80846, 80848, 80849, 80850, 80851, 80852, 80853, 80855, 80856, 80857, 80858, 80859, 80860, 80861, 80862, 80863, 80864, 80865, 80866, 80867, 80868, 80869, 80871, 80872, 80877, 80878, 80881, 80882, 80885, 80892, 80893, 80895, 80897, 80899, 80900, 80929, 80946, 80947, 80948, 80951, 80956, 80957, 80958, 80961, 80966, 80971, 80973, 80975, 80977, 80978, 80982, 80997, 80999, 81000, 81002, 81003, 81009, 81012, 81013, 81014, 81016, 81018, 81019, 81020, 81021, 81023, 81024, 81029, 81030, 81031, 81033, 81036, 81042, 81045, 81056, 81057, 81068, 81069, 81070, 81071, 81074, 81077, 81079, 81080, 81081, 81083, 81084, 81085, 81086, 81087, 81092, 81093, 81095, 81097, 81115, 81118, 81119, 81120, 81128, 81130, 81131, 81133, 81135, 81138, 81141, 81149, 81171, 81177, 81186, 81188, 81202, 81221, 81226, 81228, 81235, 81253, 81255, 81273, 81278, 81281, 81282, 81283, 81284, 81293, 81294, 81302, 813120, 81313, 81315, 81321, 81325, 81327, 81329, 81330, 81332, 81333, 81336, 81338, 81339, 81340, 81342, 81343, 81346, 81347, 81349, 81350, 81353, 81354, 81359, 81361, 81367, 81370, 81371, 81373, 81376, 81377, 81380, 81388, 81391, 81394, 81395, 81396, 81397, 81398, 81403, 81408, 81411, 81414, 81434, 81437, 81456, 81457, 81460, 81466, 81485, 81487, 81494, 81497, 81498, 81503, 81504, 81506, 81509, 81510, 81512, 81513, 81520, 81521, 81522, 81523, 81528, 81529, 81534, 81535, 81536, 81537, 81540, 81541, 81544, 81550, 81556, 81558, 81563, 81569, 81572, 81573, 81582, 81584, 81590, 81591, 81593, 81594, 81595, 81596, 81598, 81599, 81601, 81602, 81607, 81608, 81610, 81611, 81617, 81618, 81624, 81625, 81627, 81628, 81629, 81631, 81632, 81637, 81639, 81642, 81653, 81658, 81659, 81660, 81673, 81675, 81679, 81681, 81682, 81686, 81691, 81694, 81700, 81702, 81714, 81719, 81724, 81725, 81726, 81727, 81728, 81729, 81730, 81731, 81736, 81737, 81739, 81740, 81742, 81743, 81745, 81749, 81750, 81751, 81752, 81753, 81754, 81755, 81756, 81757, 81761, 81762, 81763, 81764, 81765, 81767, 81768, 81769, 81770, 81771, 81773, 81777, 81779, 81780, 81784, 81788, 81790, 81796, 81799, 81805, 81812, 81819, 81820, 81822, 81825, 81826, 81827, 81828, 81829, 81837, 81839, 81843, 81844, 81846, 81861, 81863, 81865, 81867, 81882, 81884, 81889, 81890, 81891, 81893, 81895, 81896, 81897, 81899, 81900, 81903, 81905, 81906, 81909, 81910, 81911, 81912, 81913, 81918, 81919, 81920, 81923, 81925, 81927, 81930, 81934, 81935, 81938, 81939, 81940, 81943, 81944, 81945, 81946, 81947, 81948, 81949, 81950, 81951, 81952, 81953, 81954, 81955, 81956, 81957, 81958, 81962, 81963, 81965, 81981, 81982, 81984, 81987, 81988, 81990, 81991, 81997, 82000, 82001, 82002, 82007, 82010, 82012, 82015, 82018, 82019, 82021, 82022, 82025, 82027, 82030, 82032, 82033, 82035, 82036, 82037, 82040, 82041, 82044, 82045, 82046, 82047, 82048, 82049, 82051, 82052, 82053, 82055, 82056, 82059, 82061, 82062, 82063, 82080, 82081, 82082, 82083, 82084, 82085, 82086, 82087, 8088, 82089, 82090, 82091, 82092, 82094, 82095, 82097, 82102, 82109, 82110, 82112, 82114, 82115, 82116, 82117, 82121, 82123, 82126, 82128, 82129, 82130, 82132, 82133, 82136, 82137, 82138, 82143, 82148, 82149, 82150, 82151, 82153, 82154, 82155, 82156, 82157, 82158, 82160, 82161, 82164, 82165, 82167, 82173, 82174, 82176, 82177, 82178, 82182, 82183, 82185, 82188, 82190, 82192, 82196, 82197, 82198, 82204, 82205, 82206, 82210, 82214, 82219, 82221, 82222, 82223,

82224, 82225, 82228, 82230, 82231, 82232, 82233, 82234, 82235, 82241, 82247, 82250, 82251, 82261, 82262, 82263, 822, 8226, 82271, 82272, 82274, 82276, 82277, 82278, 82279, 82281, 82282, 82283, 82284, 82285, 82286, 82287, 82288, 82289, 82290, 82291, 82292, 82295, 82296, 82297, 82298, 82301, 82302, 82304, 82305, 82308, 82309, 82310, 82311, 82312, 82313, 82314, 82315, 82318, 82321, 82322, 82323, 82327, 82331, 82332, 82337, 82338, 82339, 82340, 82346, (Total Student 1566)

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय)

(I) 71601 (II) 71694 (III) 74136

50635, 51293, 51859, 52046, 53983, 53986, 53993, 53998, 54661, 56163, 56991, 57065, 57068, 57069, 57071, 57073, 57090, 57107, 57120, 57123, 57216, 57218, 57243, 57268, 57280, 57281, 57286, 57397, 57415, 57433, 57656, 57660, 57720, 57797, 57798, 57799, 57868, 57915, 58004, 58034, 58045, 58050, 58060, 58072, 58075, 58083, 58118, 58263, 58290, 58302, 58384, 58550, 58738, 58818, 58819, 58821, 58876, 58883, 59043, 59394, 59553, 59648, 59837, 60018, 60054, 60086, 60330, 60959, 60966, 61156, 61160, 61238, 61259, 61281, 61283, 61329, 61333, 61505, 61527, 61528, 61572, 61590, 61926, 61931, 62131, 62530, 62532, 62558, 62593, 62676, 62694, 62704, 62768, 62848, 62856, 62862, 62865, 62868, 63193, 63219, 63426, 63427, 63692, 63736, 63761, 63767, 63770, 63779, 63899, 63971, 64000, 64026, 64027, 64051, 64053, 64054, 64064, 64170, 64206, 64300, 64506, 64538, 64601, 64621, 64645, 64676, 64690, 64720, 64724, 64731, 64735, 64770, 64788, 64797, 64805, 64840, 64933, 64965, 65111, 65115, 65121, 65184, 65218, 65229, 65445, 65456, 65459, 65462, 65464, 65465, 65469, 65670, 65734, 65807, 65847, 65864, 65901, 65934, 65949, 66161, 66182, 66204, 66304, 66308, 66312, 66364, 66365, 66482, 66483, 66499, 66515, 66518, 66521, 66523, 66531, 66535, 66613, 66615, 66634, 66669, 66693, 66878, 66906, 66910, 66927, 66944, 66960, 66996, 66998, 67002, 67134, 67296, 67317, 67515, 67517, 67536, 67540, 67546, 67552, 67555, 67558, 67563, 67565, 67566, 67597, 67607, 67619, 67690, 67702, 67732, 67750, 67770, 67799, 67805, 67807, 67810, 67811, 67813, 67818, 67867, 67975, 67976, 67987, 67997, 68008, 68012, 68025, 68035, 68038, 68043, 68128, 68158, 68166, 68180, 68244, 68246, 68261, 68359, 68451, 68472, 68475, 68581, 68620, 68623, 68725, 68820, 68873, 68892, 68924, 68958, 68973, 69016, 69018, 69020, 69022, 69024, 69045, 69047, 69116, 69147, 69149, 69167, 69186, 69193, 69204, 69210, 69226, 69263, 69307, 69382, 69398, 69430, 69587, 69608, 69610, 69649, 69659, 69667, 69671, 69677, 69678, 69679, 69700, 69718, 69775, 69778, 69801, 69815, 69832, 69837, 69838, 69854, 69862, 69880, 69883, 69953, 69954, 69974, 70076, 70092, 70126, 70137, 70147, 70238, 70239, 70261, 70268, 70314, 70317, 70397, 70556, 70576, 70619, 70642, 70649, 70652, 70661, 70662, 70664, 70670, 70674, 70675, 70677, 70681, 70697, 70716, 70749, 70757, 70767, 70768, 70950, 70952, 70954, 70955, 71108, 71109, 71111, 71143, 71145, 71165, 71180, 71201, 71312, 71328, 71339, 71343, 71345, 71498, 71509, 71510, 71528, 71536, 71537, 71544, 71567, 71579, 71583, 71591, 71593, 71595, 71598, 71599, 71600, 71601, 71607, 71632, 71633, 71636, 71640, 71642, 71643, 71650, 71686, 71687, 71688, 71689, 71690, 71693, 71694, 71695, 71696, 71697, 71698, 71701, 71702, 71703, 71704, 71705, 71706, 71710, 71717, 71737, 71738, 71739, 71740, 71793, 71805, 71848, 71850, 71884, 71885, 71901, 71902, 71903, 71904, 71905, 71906, 71908, 71990, 71991, 71995, 71996, 71997, 71998, 72021, 72022, 72023, 72024, 72071, 72094, 72096, 72101, 72122, 72128, 72131, 72132, 72140, 72144, 72149, 72150, 72154, 72155, 72157, 72159, 72160, 72169, 72178, 72187, 72206, 72216, 72217, 72221, 72225, 72233, 72236, 72242, 72257, 72263, 72269, 72274, 72275, 72276, 72277, 72278, 72280, 72350, 72370, 72374, 72396, 72398, 72399, 72400, 72401, 72403, 72405, 72411, 72412, 72413, 72414, 72415, 72505, 72506, 72536, 72549, 72552, 72554, 72557, 72560, 72565, 72568, 72571, 72577, 72579, 72580, 72581, 72582, 72584, 72585, 72588, 72590, 72596, 72599, 72602, 72607, 72608, 72612, 72613, 72619, 72623, 72626, 72627, 72628, 72630, 72636, 72638, 72650, 72653, 72654, 72657, 72658, 72659, 72662, 72663, 72673, 72674, 72696, 72714, 72726, 72745, 72756, 72774, 72778, 72789, 72794, 72800, 72805, 72851, 72866, 72871, 72872, 72874, 72904, 72905, 72906, 72909, 72921, 72933, 72935, 72942, 72952, 72973, 72975, 72986, 72987, 72988, 72989, 72990, 72996, 73018, 73019, 73045, 73085, 73092, 73121, 73124, 73133, 73143, 73144, 73147, 73154, 73159, 73160, 73163, 73164, 73182, 73184, 73222, 73235, 73240, 73268, 73270, 73283, 73284, 73285, 73300, 73301, 73306, 73307, 73308, 73336, 73340, 73343, 73346, 73358, 73360, 73361, 73369, 73373, 73376, 73407, 73409, 73410, 73416, 73425, 73433, 73447, 73449, 73457, 73475, 73478,

73479, 73485, 73492, 73534, 73535, 73540, 73541, 73543, 73544, 73549, 73550, 73551, 73554, 73555, 73562, 73566, 73567, 73568, 73570, 73576, 73580, 73581, 73584, 73585, 73607, 73631, 73641, 73648, 73655, 73667, 73672, 73679, 73682, 73685, 73698, 73699, 73712, 73722, 73723, 73724, 73727, 73737, 73739, 73741, 73759, 73760, 73761, 73763, 73764, 73771, 73788, 73789, 73790, 73809, 73810, 73812, 73814, 73834, 73835, 73841, 73874, 73875, 73915, 73927, 73931, 73935, 73937, 73939, 73940, 73941, 73942, 73943, 73947, 73948, 73949, 73953, 73954, 73965, 73966, 73972, 73973, 73975, 74020, 74021, 74038, 74047, 74050, 74058, 74059, 74075, 74077, 74082, 74083, 74086, 74087, 74092, 74095, 74104, 74114, 74117, 74118, 74120, 74134, 74136, 74155, 74168, 74181, 74226, 74236, 74239, 74259, 74261, 74262, 74268, 74270, 74273, 74275, 74285, 74288, 74290, 74348, 74413, 74420, 74434, 74446, 74468, 74479, 74501, 74503, 74504, 74505, 74510, 74512, 74536, 74537, 74538, 74584, 74585, 74612, 74620, 74665, 74674, 74723, 74751, 74771, 74775, 74777, 74833, 74834, 74835, 74848, 74849, 74850, 74860, 74861, 74862, 74883, 74895, 74923, 74948, 74953, 74996, 74997, 75004, 75005, 75006, 75009, 75011, 75012, 75061, 75062, 75067, 75069, 75072, 75090, 75121, 75151, 75152, 75166, 75199, 75204, 75205, 75232, 75236, 75265, 75273, 75285, 75292, 75365, 75372, 75373, 75380, 75381, 75382, 75383, 75387, 75388, 75389, 75416, 75421, 75445, 75452, 75482, 75509, 75548, 75609, 75610, 75643, 75660, 75663, 75667, 75668, 75673, 75680, 75685, 75689, 75692, 75693, 75695, 75696, 75702, 75703, 75704, 75707, 75715, 75718, 75719, 75734, 75735, 75737, 75738, 75744, 75752, 75753, 75761, 75765, 75768, 75771, 75775, 75787, 75793, 75805, 75806, 75807, 75840, 75841, 75850, 75858, 75871, 75876, 75877, 75879, 75881, 75903, 75905, 75907, 75910, 75911, 75912, 75916, 75917, 75918, 75924, 75927, 75928, 75932, 75943, 75948, 75950, 75952, 75962, 75977, 75978, 75983, 75985, 75992, 75994, 75995, 75998, 76000, 76005, 76007, 76009, 76010, 76019, 76020, 76021, 76025, 76026, 76031, 76103, 76110, 76123, 76124, 76142, 76177, 76181, 76188, 76217, 76242, 76244, 76252, 76253, 76273, 76275, 76297, 76299, 76300, 76311, 76319, 76392, 76420, 76428, 76431, 76443, 76447, 76449, 76455, 76483, 76485, 76495, 76496, 76510, 76576, 76577, 76617, 76634, 76637, 76640, 76644, 76645, 76651, 76652, 76660, 76668, 76673, 76674, 76677, 76678, 76681, 76707, 76709, 76733, 76744, 76753, 76757, 76763, 76813, 76826, 76827, 76830, 76831, 76833, 76834, 76835, 76836, 76837, 76838, 76839, 76841, 76843, 76850, 76851, 76870, 76871, 76872, 76873, 76881, 76887, 76888, 76889, 76901, 76909, 76912, 76913, 76914, 76915, 76916, 76917, 76919, 76920, 76927, 76930, 76931, 76933, 76934, 76935, 76936, 76940, 76941, 76948, 76951, 76954, 76955, 76974, 76984, 77000, 77007, 77008, 77010, 77017, 77028, 77029, 77030, 77032, 77035, 77074, 77093, 77094, 77102, 77106, 77107, 77108, 77110, 77136 ,77154, 77155, 77162, 77163, 77166, 77168, 77175, 77176, 77179, 77180, 77182, 77185, 77186, 77189, 77191, 77192, 77194, 77196, 77200, 77201, 77204, 77205, 77206, 77207, 77209, 77211, 77214, 77217, 77220, 77222, 77224, 77226, 77227, 77235, 77236, 77240, 77242, 77244, 77248, 77250, 77252, 77255, 77260, 77266, 77270, 77271, 77291, 77294, 77312, 77315, 77324, 77325, 77326, 77336, 77342, 77344, 77368, 77370, 77372, 77425, 77429, 77430, 77464, 77487, 77498, 77521, 77530, 77537, 77543, 77558, 77562, 77563, 77570, 77571, 77611, 77613, 77615, 77621, 77623, 77625, 77626, 77627, 77657, 77661, 77662, 77666, 77668, 77670, 77674, 77675, 77677, 77687, 77733, 77739, 77740, 77742, 77746, 77771, 77783, 77784, 77808, 77846, 77867, 77869, 77871, 77884, 77885, 77892, 77897, 77900, 77901, 77903, 77906, 77907, 77909, 77910, 77911, 77923, 77929, 77930, 77933, 77938, 77943, 77944, 77955, 77962, 77977, 77995, 77997, 78014, 78016, 78020, 78036, 78037, 78045, 78046, 78057, 78061, 78065, 78067, 78082, 78097, 78098, 78102, 78131, 78132, 78151, 78161, 78162, 78174, 78182, 78192, 78196, 78223, 78302, 78317, 78361, 78362, 78375, 78379, 78386, 78387, 78388, 78389, 78390, 78391, 78426, 78427, 78428, 78438, 78469, 78491, 78492, 78493, 78494, 78495, 78531, 78568, 78571, 78625, 78627, 78681, 78708, 78715, 78717, 78747, 78758, 78814, 78824, 78831, 78835, 78838, 78866, 78904, 78906, 79032, 79033, 79036, 79037, 79039, 79128, 79176, 79177, 79200, 79256, 79273, 79274, 79303, 79325, 79328, 79329, 79332,79333, 79361, 79362, 79363, 79366, 79388, 79389, 79390, 79392, 79403, 79443, 79481, 79490, 79506, 79507, 79508, 79509, 79510, 79511, 79537, 79569, 79595, 79596, 79597, 79602, 79604, 79620, 79712, 79743, 79764, 79765, 79776, 79777, 79781, 79808, 79828, 79894, 79929, 79965, 80014, 80021, 80061, 80062, 80086, 80087, 80096, 80146, 80194, 80195, 80220, 80255, 80278, 80284, 80299, 80316, 80322, 80326, 80371, 80372, 80470, 80504, 80506, 80510, 80526, 80527, 80528, 80538, 80539, 80540, 80545, 80546, 80548, 80549, 80576, 80651, 80652, 80653, 80665, 80694, 80701, 80820,

80870, 80886, 80902, 80905, 80909, 80945, 80969, 80972, 81006, 81048, 81049, 81066, 81144, 81158, 81200, 81219, 81245, 81256, 81455, 81483, 81559, 81614, 81672, 81688, 81689, 81690, 81695, 81806, 81856, 81914, 81921, 81971, 82100, 82104, 82120, 82122, 82171, 82186, 82215, 82216, 82218, 82252, 82253, 82275, 82293, 82294, 82299, 82316, 82334, 82341, 82342, 82347, 81935, 81938, 81939, 81940, 81943, 81944, 81945, 81946, 81947, 81948, 81949, 81950, 81951, 81952, 81953, 81954, 81955, 81956, 81957, 81958, 81962, 81963, 81965, 81981, 81982, 81984, 81987, 81988, 81990, 81991, 81997, 82000, 82001, 82002, 82007, 82010, 82012, 82015, 82018, 82019, 82021, 82022, 82025, 82027, 82030, 82032, 82033, 82035, 82036, 82037, 82040, 82041, 82044, 82045, 82046, 82047, 82048, 82049, 82051, 82052, 82053, 82055, 82056, 82059, 82061, 82062, 82063, 82080, 82081, 82082, 82083, 82084, 82085, 82086, 82087, 82088, 82089, 82090, 82091, 82092, 82094, 82095, 82097, 82102, 82109, 82110, 82112, 82114, 82115, 82116, 82117, 82121, 82123, 82126, 82128, 82129, 82130, 82132, 82133, 82136, 82137, 82138, 82143, 82148, 82149, 82150, 82151, 82153, 82154, 82155, 82156, 82157, 82158, 82160, 82161, 82164, 82165, 82167, 82173, 82174, 82176, 82177, 82178, 82182, 82183, 82185, 82188, 82190, 82192, 82196, 82197, 82198, 82204, 82205, 82206, 82210, 82214, 82219, 82221, 82222, 82223, 82224, 82225, 82228, 82230, 82231, 82232, 82233, 82234, 82235, 82241, 82247, 82250, 82251, 82261, 82262, 82263, 82265, 82267, 82271, 82272, 82274, 82276, 82277, 82278, 82279, 82281, 82282, 82283, 82284, 82285, 82286, 82287, 82288, 82289, 82290, 82291, 82292, 82295, 82296, 82297, 82298, 82301, 82302, 82304, 82305, 82308, 82309, 82310, 82311, 82312, 82313, 82314, 82315, 82318, 82321, 82322, 82323, 82327, 82331, 82332, 82337, 82338, 82339, 82340, 82346, (Total Student 1360)

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय)

(I) 72911 (II) 68975 (III) 69287

49619, 49886, 52047, 52049, 52056, 52058, 52604, 53785, 54056, 54057, 54064, 55378, 55682, 57004, 57011, 57024, 57121, 57125, 57228, 57273, 57275, 57276, 57289, 57290, 57339, 57414, 57437, 57447, 57478, 57520, 57522, 57569, 57601, 57732, 57758, 57766, 57775, 57779, 57783, 57843, 57901, 58023, 58028, 58038, 58056, 58081, 58106, 58158, 58167, 58262, 58350, 58523, 58525, 58543, 58776, 58796, 58802, 58900, 58966, 59094, 59096, 59098, 59112, 59135, 59521, 59642, 59835, 59876, 59893, 59903, 59910, 59975, 60676, 60686, 60688, 60690, 60691, 60806, 60822, 60823, 60830, 60853, 60887, 60897, 60900, 60903, 60904, 60942, 60943, 60944, 60945, 60956, 61087, 61147, 61155, 61161, 61229, 61305, 61404, 61431, 61529, 61558, 61570, 61705, 61722, 61750, 61796, 61837, 62277, 62655, 62657, 62659, 62665, 62767, 62869, 62986, 62988, 63006, 63034, 63036, 63041, 63094, 63100, 63198, 63216, 63358, 63412, 63417, 63420, 63421, 63461, 63556, 63557, 63597, 63602, 63603, 63605, 63607, 63608, 63610, 63611, 63613, 63614, 63616, 63618, 63619, 63620, 63621, 63645, 63647, 63735, 63739, 63743, 63744, 63766, 63768, 63782, 63816, 63864, 63866, 63871, 63878, 63881, 63982, 64048, 64049, 64086, 64113, 64115, 64153, 64210, 64221, 64265, 64483, 64610, 64687, 64689, 64700, 64767, 64783, 64803, 64807, 64809, 64810, 64843, 64846, 64856, 64964, 65031, 65128, 65129, 65154, 65157, 65185, 65186, 65208, 65430, 65431, 65438, 65441, 65458, 65466, 65467, 65479, 65665, 65691, 65842, 65844, 66031, 66091, 66114, 66123, 66153, 66163, 66167, 66170, 66193, 66317, 66321, 66322, 66335, 66336, 66338, 66340, 66342, 66357, 66359, 66361, 66389, 66404, 66410, 66484, 66485, 66489, 66490, 66491, 66500, 66503, 66505, 66546, 66829, 66830, 66831, 66832, 66872, 66882, 66888, 66907, 66939, 66940, 67072, 67261, 67295, 67326, 67332, 67369, 67455, 67567, 67571, 67579, 67611, 67657, 67658, 67669, 67686, 67688, 67773, 67809, 87814, 67829, 67866, 67972, 67974, 68009, 68029, 68030, 68031, 68033, 68036, 68042, 68074, 68136, 68178, 68220, 68221, 68222, 68223, 68226, 68228, 68231, 68248, 68253, 68255, 68269, 68280, 68283, 68287, 68389, 68405, 68480, 68494, 68617, 68707, 68722, 68773, 68779, 68795, 68851, 68901, 68927, 68930, 68944, 68945, 68965, 68972, 68990, 68998, 69002, 69117, 69145, 69148, 69209, 69220, 69228, 69286, 69287, 69288, 69292, 69384, 69385, 69426, 69429, 69485, 69591, 69612, 69645, 69648, 69651, 69657, 69675, 69697, 69710, 69746, 69864, 69868, 69879, 69886, 69956, 69957, 70063, 70088, 70151, 70158, 70160, 70168, 70201, 70206, 70209, 70220, 70244, 70249, 70258, 70259, 70319, 70322, 70399, 70454, 70659, 70879, 70894, 70983, 71147, 71423, 71455, 71456, 71458, 71462, 71521, 71525, 71526, 71609, 71645, 71652, 71653, 71655, 71656, 71657, 71658, 72038, 72054, 72103, 72130, 72139, 72145, 72148, 72152, 72153, 72183, 72229, 72230, 72390, 72465, 72466, 72467, 72468, 72469, 72470, 72474,

72485, 72486, 72539, 72540, 72541, 72547, 72641, 72642, 72676, 72680, 72681, 72683, 72733, 72747, 72748, 72758, 72811, 72829, 72876, 72881, 72910, 72911, 72916, 72964, 73038, 73186, 73359, 73368, 73371, 73372, 73411, 73430, 73463, 73464, 73493, 73496, 73556, 73588, 73658, 73671, 73700, 73708, 73775, 73776, 73969, 74048, 74071, 74102, 74103, 74110, 74122, 74182, 74187, 74352, 74355, 74428, 74463, 74592, 74614, 74671, 74689, 74690, 74724, 74785, 74786, 74787, 74788, 74789, 74893, 74894, 74915, 74916, 74959, 75027, 75029, 75030, 75057, 75091, 75092, 75098, 75116, 75120, 75134, 75141, 75184, 75201, 75231, 75238, 75274, 75281, 75393, 75451, 75649, 75810, 75818, 75819, 75833, 75883, 75963, 76129, 76286, 76287, 76315, 76316, 76444, 76474, 76488, 76575, 76590, 76675, 76741, 76860, 76944, 76966, 77041, 77104, 77181, 77210, 77292, 77337, 77360, 77564, 77589, 77704, 78039, 78042, 78103, 78209, 78296, 78297, 78490, 78521, 78709, 78735, 78736, 78737, 78748, 78782, 78815, 78832, 78833, 78845, 78923, 79018, 79019, 79020, 79027, 79044, 79045, 79047, 79050, 79051, 79053, 79055, 79160, 79161, 79278, 79334, 79335, 79514, 79515, 79556, 79598, 79617, 79622, 79623, 79746, 79748, 79749, 79750, 80256, 80257, 80260, 80262, 80265, 80319, 80320, 80424, 80463, 80475, 80476, 80650, 80726, 80817, 80823, 80915, 80919, 80924, 80950, 80970, 81111, 81112, 81223, 81263, 81274, 81275, 81446, 81459, 81539, 81666, 81667, 81696, 81697, 81732, 81746, 81783, 81786, 81816, 81817, 81855, 81859, 82069, 82077, 82101, 82125, 82135, 82202, 82256, 82317, 82330, (Total Student 628)

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ)

(I) 62265 (II) 62905 (III) 71424

49804, 49887, 50111, 51290, 51291, 51294, 51299, 51798, 52085, 52781, 54264, 55902, 56849, 56987, 56994, 56995, 57014, 57026, 57033, 57034, 57035, 57115, 57313, 57319, 57381, 57480, 57488, 57491, 57521, 57571, 57573, 57575, 57577, 57734, 57833, 57879, 57900, 57903, 58032, 58079, 58109, 58180, 58279, 58281, 58292, 58298, 58327, 58362, 58369, 58373, 58400, 58588, 58697, 58708, 58709, 58715, 58754, 58768, 58775, 58837, 58896, 58901, 59019, 59093, 59113, 59114, 59152, 59333, 59396, 59398, 59421, 59624, 59669, 59670, 59880, 59887, 59889, 60019, 60029, 60061, 60063, 60065, 60332, 60503, 60505, 60521, 60683, 60694, 60807, 60810, 60858, 60886, 60899, 60902, 60907, 60947, 60958, 60974, 61079, 61084, 61098, 61140, 61151, 61167, 61172, 61330, 61395, 61409, 61420, 61480, 61481, 61486, 61491, 61495, 61538, 61544, 61556, 61557, 61753, 61851, 61856, 61864, 61987, 61994, 61996, 62017, 62019, 62022, 62027, 62265, 62266, 62271, 62272, 62274, 62281, 62290, 62297, 62398, 62401, 62509, 62518, 62519, 62587, 62656, 62658, 62660, 62672, 62749, 62838, 62905, 62921, 62928, 62989, 63021, 63068, 63072, 63107, 63108, 63111, 63114, 63200, 63349, 63360, 63453, 63454, 63455, 63458, 63460, 63462, 63554, 63576, 63584, 63587, 63733, 63746, 63752, 63758, 63765, 63921, 64052, 64084, 64085, 64088, 64116, 64176, 64284, 64359, 64368, 64369, 64377, 64443, 64510, 64562, 64565, 64598, 64615, 64673, 64712, 64734, 64772, 64777, 64830, 64876, 64878, 64914, 65046, 65082, 65083, 65142, 65150, 65205, 65267, 65335, 65345, 65355, 65357, 65381, 65444, 65455, 65542, 65546, 65638, 65655, 65656, 65728, 65768, 65826, 65830, 65897, 65951, 65969, 66115, 66154, 66228, 66411, 66448, 66449, 66497, 66528, 66550, 66580, 66626, 66709, 66711, 66786, 66845, 67160, 67330, 67368, 67410, 67412, 67490, 67497, 67623, 67628, 67656, 68041, 68044, 68419, 68433, 68481, 68809, 68826, 68833, 69119, 69129, 69152, 69208, 69304, 69346, 69387, 69542, 69582, 69583, 69656, 69798, 69836, 69843, 69846, 69885, 69909, 69919, 69997, 70007, 70089, 70125, 70183, 70457, 70723, 70946, 71016, 71017, 71329, 71424, 71505, 71623, 71964, 71974, 72105, 72106, 72107, 72189, 72406, 72480, 72524, 72525, 72527, 72528, 72677, 72736, 72751, 72752, 72757, 73273, 73384, 73713, 73716, 73717, 73718, 73774, 73777, 73981, 73982, 74034, 74036, 74037, 74105, 74541, 74617, 74624, 74686, 74706, 74726, 74840, 74870, 74874, 74901, 74960, 74995, 75154, 75156, 75275, 75456, 75854, 76239, 76430, 77503, 77505, 77587, 77590, 77591, 77593, 77701, 77935, 78072, 78081, 78318, 78319, 78320, 78321, 78463, 78849, 78872, 79059, 79062, 79118, 79173, 79478, 79479, 79786, 79931, 80223, 80425, 80426, 81146, 81258, 81393, 81418, 81419, 81511, 81555, 81557, 81574, 82336, (Total Student 384)

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवीं)

(I) 62866 (II) 59836 (III) 62867

49866, 49892, 50282, 50283, 50285, 52629, 53068, 55683, 55862, 56107, 56237, 56618, 57036, 57112, 57113, 57129, 57288, 57291, 57293, 57295, 57490, 57509, 57561, 57780, 57809, 58094, 58096, 58179, 58312, 58393, 58546, 58555, 58556, 58579, 58580, 58593, 58599, 58616, 58659, 58666, 58668, 58673, 58680, 58686, 58695, 58700, 58701, 58704, 58706, 58707, 58710, 58714, 58726, 58765, 58766, 58771, 58780, 58826, 58902, 58904, 58959, 59121, 59336, 59423, 59449, 59451, 59479, 59578, 9690, 59836, 59839, 60066, 60339, 60367, 60695, 60777, 60797, 60833, 60841, 60844, 60856, 60891, 60894, 60895, 61046, 61203, 61303, 61377, 61405, 61419, 61540, 61555, 61588, 61726, 61813, 61815, 61818, 61829, 61865, 61869, 61921, 62030, 62033, 62074, 62078, 62457, 62841, 62866, 62867, 62932, 62951, 62973, 63045, 63056, 63201, 63203, 63260, 63347, 63361, 63413, 63492, 63502, 63559, 63562, 63591, 63753, 63773, 63783, 63792, 63877, 63927, 63934, 63940, 63942,63946, 64171, 64178, 64200, 64356, 64376, 64428, 64429, 64430, 64509, 64513, 64514, 64515, 64518, 64527, 64597, 64604, 64628, 64631, 64671, 64766, 64784, 64794, 64866, 65203, 65204, 65383, 65399, 65426, 65428, 65429, 65447, 65521, 65544, 65652, 65875, 66116, 66135, 66241, 66345, 66685, 66847, 66945, 66967, 67007, 67286, 67374, 67421, 67493, 67501, 67661, 67819, 68046, 68051, 68229, 68230, 68232, 68233, 68236, 68237, 68259, 68338, 68378, 68659, 68904, 68997, 69088, 69098, 69168, 69183, 69577, 70094, 70243, 70398, 70678, 71788, 72281, 72476, 72531, 72735, 72817, 73431, 73691, 73692, 73719, 73803, 74141, 74142, 74194, 74544, 74790, 74791, 74794, 74817, 74935, 74980, 75111, 75112, 75641, 75835, 76291, 76476, 76602, 76710, 76752, 76908, 77172, 77290, 77534, 77580, 77585, 77606, 77697, 78306, 78530, 78580, 78682, 78738, 78816, 78871, 79369, 79529, 79634, 79898, 79906, 80015, 80159, 80272, 80479, 80983, 81027, 81105, 81107, 81108, 81113, 81449, 81551, 81685, 81850, 81888, 82057, 82217, (Total Student 276)

जैन धर्म विशारद (छठी)

(I) 58594 (II) 59896 (III) 63976

52151, 52154, 52678, 55330, 57028, 57048, 57078, 57127, 57130, 57211, 57238, 57526, 57846, 57918, 58092, 58175, 58331, 58367, 58554, 58557, 58558, 58559, 58560, 58562, 58594, 58909, 58912, 59590, 59592, 59702, 59763, 59896, 59918, 60365, 60599, 60622, 60628, 60630, 60839, 60847, 60860, 60892, 60893, 60957, 61169, 61605,61933, 61954, 62077, 62578, 62625, 62849, 62851, 62852, 62935, 62978, 62979, 63073, 63074, 63075, 63080, 63091, 63204, 63472, 63473, 63501, 63521, 63830, 63833, 63976, 64118, 64119, 64174, 64179, 64181, 64189, 64500, 64583, 64605, 64755, 64842, 64982, 65285, 65420, 65523, 65531, 65539, 65554, 65609, 65613, 65877, 66007, 66037, 66118, 66119, 66120, 66121, 66347, 67336, 67337, 67338, 67460, 67679, 68050, 68824, 68968, 68981, 69087, 69122, 69144, 69773, 69983, 70252, 70277, 70323, 70667, 70725, 70903, 71723, 72116, 72239, 72248, 72441, 72533, 72786, 72788, 72816, 72818, 73971, 74030, 74481, 74545, 74709, 74754, 74799, 75040, 75669, 76289, 76295, 76494, 77582, 77583, 78172, 78197, 78323, 78464, 78569, 78740, 78789, 78790, 79066, 79071, 79072, 79073, 79599, 79793, 80174, 80703, 80967, 81450, (Total Student 160)

जैन धर्म कोविद (सातवीं)

(I) 62701 (II) 58915 (III) 57116

52151, 54972, 55367, 55368, 56624, 57101, 57116, 57240, 57297, 57298, 57501, 57576, 57745, 57812, 58098, 58383, 58910, 58913, 58915, 58916, 59024, 60631, 60799, 60861, 61047, 61146, 61353, 61610, 61729, 61772, 62038, 62416, 62417, 62418, 62420, 62423, 62425, 62427, 62430, 62608, 62637, 62697, 62698, 62701, 62702, 62773, 62874, 62930, 62996, 63076, 63081, 63082, 63205, 63206, 63402, 63408, 63409, 63526, 63837, 64120, 64388, 64475, 64498, 64541, 64799, 64801, 64816, 64986, 65044, 65069, 65096, 65262, 65398, 65614, 66013, 66038, 66187, 66552, 67285, 67300, 67340, 67495, 67817, 68563, 68799, 68919, 68985, 69015, 69529, 69721, 70093, 70217, 72490, 72491, 73228, 73355, 73469, 73661, 73861, 74432, 74546, 74547, 74548, 74549, 74670, 75842, 76255, 76292, 76682, 76693, 76867, 76992, 77001, 77086, 77257, 77303, 77424, 77572, 78683, 78819, 78983, 79337, 80273, 80456, 80458, 80704, 80891, 80925, 81032, 81164, 81713, 81860,

82300,(Total Student 133

जैन धर्म भूषण (आठवीं)

(I) 78781 (II) 58057 (III) 80942

53128, 54048, 57241, 57299, 57385, 57741, 57902, 58035, 58057, 58099, 58183, 58374, 58389, 58624, 58773, 58846, 58962, 59445, 59633, 59754, 59759, 59773, 60115, 60236, 61056, 61873, 62221, 62679, 62706, 62783, 63087, 63261, 63503, 63504, 63505, 63671, 63875, 63981, 64194, 64445, 64539, 64542, 64656, 64817, 64869, 64963, 64993, 65724, 66253, 66254, 66416, 66545, 67075, 67459, 67462, 67665, 68921, 69251, 69950, 70008, 70010, 70040, 70103, 70366, 70942, 71331, 71332, 71721, 72026, 72109, 72110, 72182, 72492, 72767, 73310, 73388, 73437, 73466, 73477, 73670, 75966, 76446, 76597, 76863, 77152, 77212, 77764, 78280, 78572, 78781, 78846, 78874, 79078, 79966, 79968, 80568, 80942, 81514, 81967, 82303, (Total Student 100)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - पूर्वार्द्ध (नवमी)

(I) 63675 (II) 75052 (III) 75050

53131,57515, 57751, 57931, 58100, 59891, 59900, 60127, 60962, 61060, 61153, 61861, 62039, 62040, 62041, 62042, 62058, 62069, 62250, 62714, 62873, 63130, 63527, 63675, 63802, 63865, 64123, 64140, 64141, 64405, 64546, 64548, 64550, 64663, 64760, 65067, 65637, 68318, 69469, 70364, 71176, 71638, 72000, 72339, 73659, 75050, 75051, 75052, 75295, 75661, 76257, 77092, 77495, 78274, 78275, 78581, 78685, 78791, 78875, 79624, 80246, 80554, 80587, 80644, 81423, 81519, 81571, 82343, (Total Student 68)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - उत्तरार्द्ध (दसवीं)

(I) 70783 (II) 58533 (III) 70782

57102, 57309, 57579, 57848, 58112, 58315, 58532, 58533, 58628, 58629, 59854, 59999, 61798, 61948, 62051, 62125, 63099, 63804, 64551, 64553, 64556, 64557, 64820, 65331, 65332, 65558, 65559, 65756, 65892, 68052, 70363, 70776, 70777, 70778, 70779, 70780, 70781, 70782, 70783, 70784, 72027, 72143, 72247, 72284, 73394, 73402, 73403, 73404, 73980, 73987, 75167, 78853, 79969, 80699 (Total Student 54)

जैन सिद्धान्त रत्नाकर (ग्यारहवीं)

(I) 72245 (II) 62879 (III) 65616

57003, 57941, 60002, 60868, 62057, 62070, 62073, 62879, 63049, 65286, 65616, 65677, 65879, 70362, 70941, 71795, 72028, 72029, 72245, 78239, 78534, 81008, 81451, 82344, (Total Student 24)

जैन सिद्धान्त शास्त्री (बारहवीं)

(I) 57585 (II) 57308 (III) 57517

57308, 57310, 57312, 57517, 57582, 57583, 57585, 57744, 57954, 57992, 60161, 60874, 60875, 60876, 60877, 60878, 60879, 62054, 62117, 65755, 72409, 73395, 73406, 80160, (Total Student 24)

परिणाम रोका गया

केन्द्र कोड (704) सुरेन्द्र नगर (गुजरात) - 55521, 55685, 58895, 58906, 61388, 61532, 61669, 61840, 62645, 63546, 63558, 63890, 63920, 64063, 64069, 64719, 64742, 64744, 65182, 65705, 66002, 66461, 66525, 67625, 67659, 67984, 68004, 69264, 69660, 69692, 69916, 70169, 70235, 71508, 71533, 71545, 71691, 73244, 73597, 73599, 73807, 73818, 73822, 73831, 74334, 75179, 75187, 76003, 76290, 76691, 76973, 77983, 77993, 78099, 78222

आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
10216	6463	4777	73.91%

सुशीला बोहरा
संयोजक
9414133879

राजेश कर्णावट
सचिव
9414128925

धर्मचन्द जैन
रजिस्ट्रार
9351589694

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर के सान्निध्य में पर्युषण के अनन्तर भी धर्माराधना निरन्तर जारी

श्रावक-श्राविकाओं में अपूर्व उत्साह

29 मासखमण, 200 अठाई एवं 2000 से अधिक तेले एवं उससे ऊपर की तपस्याएँ

महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. मासखमण की ओर

परमाराध्य परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 11 तथा साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवरजी म .सा. आदि ठाणा 12 के चातुर्मास के सुयोग से सूर्यनगरी-जोधपुर के श्रावक-श्राविकाओं को ज्ञानाराधन, धर्माराधन का अनुपम अवसर प्राप्त हुआ है। प्राप्त सुअवसर का सदुपयोग करते हुए भाई-बहिनों में धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप के प्रति निरन्तर उत्साह है।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर अनावश्यक गमनागमन न हो साथ ही गुरुभक्त समीपस्थ-क्षेत्र में धर्माराधना का लाभ ले सकें, इस दृष्टि से आचार्यप्रवर द्वारा तीन स्थानों पर धर्माराधन व्यवस्था की गई।

पूज्य आचार्य भगवंत प्रभृति संत, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका सहित महासती वृंद ने पावटा विराजकर धर्माराधन कराया। तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 शक्तिनगर पधारे तथा व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.आदि ठाणा-3 घोड़ों का चौक पधारे।

आचार्यप्रवर के सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा का प्रवचन सभा स्थल विशाल होते हुए भी आगतों की अत्यधिकता से छोटा पड़ा। रविवार को ऊपर-नीचे दो स्थानों पर व्याख्यान की व्यवस्था की जाती। संवत्सरी महापर्व पर अधिकांश भाई/बहिनों व युवाओं ने उपवास के साथ पौषध का लक्ष्य रखा। 880 प्रतिपूर्ण पौषध हुए। उस दिन उपवास से लेकर पन्द्रह तक की तपस्या के अनवरत प्रत्याख्यान होने का अनूठा दृश्य देखने को मिला। दर्शन-वन्दन हेतु आगतों के आने का क्रम चातुर्मास प्रारम्भ से आज तक बराबर

बना हुआ है। पावटा में समवसरण जैसा परिदृश्य परिलक्षित हो रहा है यह सब पूज्यवर्ग के अतिशय मात्र से ही संभव हुआ है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश के साथ ही तेला, उपवास, आयंबिल, एकाशन की लड़ी निरन्तर चल रही है।

चातुर्मास में अब तक उपवास (अनगिनत), बेले, तेले (एवं उससे अधिक तप लगभग 2000) अठाई (200), नौ (21), दस (4), ग्यारह (8), बारह (2), पन्द्रह (14), इक्कीस (3), बाईस, तेबीस तक की तपस्याओं के साथ अब तक 29 मासखमण आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में सम्पन्न हो चुके हैं। गत अंक में प्रकाशित मासखमण वाले तपस्वी भाई-बहिनों के अतिरिक्त शेष सूची इस प्रकार है:- (17) श्रीमती रेणुका जी दिलीप जी चौपड़ा-42, (18)मनीषजी माधोमलजी लोढ़ा-31, (19)श्रीमती ललिताजी राजाबाबू सा चौपड़ा-31, (20)श्रीमती कमलादेवीजी प्रकाशजी कर्नावट-35, (21)श्री गणपतजी हुकुमचन्दजी चौपड़ा-31, (22)श्रीमती सुनीताजी अरूणजी मेहता-31, (23)श्रीमती लाडकंवरजी सुभाषजी गुन्देचा-31, (24)श्री नरेन्द्रजी मूलचन्दजी बाफना-31, (25)श्रीमती कंचनजी रामनाथजी सिंघवी-35, (26)श्रीमती मंजूजी प्रेमचन्दजी जीरावला-31, (27)श्रीमती इन्दुमतिजी सुमतिचन्दजी बाफना-31, (28)श्री नवरत्नमलजी लुंकड़,जयपुर-30, (29)श्रीमती मनोहरकंवरजी उम्मेदमलजी चामड़-31

कई भाई-बहिनों में एकान्तर तप एवं सिद्धि तप की आराधना चल रही है। एक बहिन ने 74 वें आयंबिल तप के पच्चक्खाण गुरुदेव से प्राप्त किये हैं। गुरुदेव की पावन प्रेरणा से एक धर्मचक्र और दो नवरंगी की आराधना हुई। पर्व-तिथियों पर दया की सामूहिक आराधना के साथ गुप्त रूप से अच्छी संख्या में तप की आराधना करने वाले भी अनेक भाई-बहिन हैं। अष्टमी, चतुर्दशी एवं रविवारीय अवकाश के दिनों में सामूहिक संवर, उपवास, पौषध की साधना-आराधना निरन्तर चल रही है।

बाह्य तप की आराधना के साथ पूज्य गुरुदेव ने आभ्यन्तर तप रूप कषाय विजय की प्रभावी प्रेरणा की, जिससे अनेक भाई-बहिनों ने एक माह, चार माह, बारह माह तथा जीवन पर्यन्त क्रोध से बचने का संकल्प किया। अभी भी निरन्तर कषाय विजय की प्रेरणा जारी है एवं सूर्यनगरीवासी नित्यप्रति क्रोध त्याग के प्रति सजग हैं। गुरुदेव की पावन सन्निधि में निरन्तर अनेक भाई-बहिन आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर रहे हैं। 27 अगस्त, 2011 के बाद 13 दम्पती

आजीवन शीलव्रत ग्रहण कर चुके हैं।

रविवार को शुद्ध सामायिक आराधना रूप ध्यान-साधना शिविर के आयोजन में युवकों का उत्साह प्रेरणादायी है। अनेक साधक भाई-बहिन शुद्ध सामायिक की आराधना में निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। साथ-ही-साथ चातुर्मास के प्रारम्भ से ही गुरुदेव की पावन प्रेरणा से प्रति रविवार बाल संस्कार शिविर का आयोजन व्यवस्थित रूप से चल रहा है। लगभग 650 बच्चे निरन्तर ज्ञानाभ्यास कर रहे हैं। ज्ञान-साधना में शास्त्र वाचन, बोल थोकड़ों का अभ्यास एवं नवीन ज्ञान सीखने वालों का क्रम भी जारी है।

पूज्य गुरुदेव की पावन प्रेरणा से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-जयपुर के अन्तर्गत संचालित वीतराग ध्यान केन्द्र के तत्वावधान में 8 से 15 सितम्बर, 2011 तक ध्यान शिविर का आयोजन ध्यानविशेषज्ञ श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा-जयपुर के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें 25 साधकों ने भाग लिया। आचार्य भगवन्त ने महती कृपा करके ध्यान शिविर के दौरान आठ दिन के लिए तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. को शक्तिनगर पधारने की आज्ञा प्रदान कर ध्यान साधकों को सन्तचरण सेवा का सुअवसर प्रदान किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के तत्त्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय अधिवेशन, गुणी-अभिनन्दन समारोह आदि कार्यक्रमों में पूरे भारत देश से अनेक संघ सदस्य गुरुचरणों में उपस्थित हुए । गुरु सन्निधि का लाभ प्राप्त कर अनेक भक्तों द्वारा ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना के साथ गुरुदेव से नवीन त्याग-प्रत्याख्यान अंगीकार कर गुरु के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्ति की गई।

आचार्यप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग-सेवा की भावना से अनेक क्षेत्रों के श्रीसंघ व श्रद्धालुओं का निरन्तर आवागमन बना हुआ है। श्रद्धालु परिवार गुरुदेव की सन्निधि में उपस्थित होकर धर्माराधना करने में तत्पर हैं। जोधपुर संघ की आत्मीयता अपनत्व के साथ अतिथि-सेवा, आवास-भोजन आदि व्यवस्थाएँ सुन्दर हैं।

उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में धर्माराधन की निरन्तरता

उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री

सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में धर्माराधना एवं तपाराधना निरन्तर जारी है। तेले, उपवास एवं एकान्तर की लड़ी चल रही है। प्रत्येक रविवार को सामूहिक एकाशन एवं दयाव्रत का आयोजन किया जाता है। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी म.सा. के 11 की तपस्या सुखशांतिपूर्वक सम्पन्न हुई। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनि जी म.सा. एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के प्रवचनों से श्रावक-श्राविका धर्म-जागृति का अनुभव कर रहे हैं। कभी श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी एवं श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी भी प्रवचन फरमाते हैं। पर्युषण पर्व के दौरान नवरंगी, ग्यारह, नौ, आठ, सात, छः, पाँच आदि की अनेक तपस्याएँ हुई हैं। लगभग 50 तेले सम्पन्न हुए हैं, जिनमें 10 तेले बारह से सोलह वर्ष की उम्र के बच्चों ने किए हैं। पर्युषण उपरान्त बहनों ने बारह एवं छः की भी तपस्याएँ की हैं। चातुर्मास के प्रारम्भ से अनेक श्रावक-श्राविकाओं के एकाशन तप चल रहा है। पर्युषण में प्रतिदिन कल्पसूत्र वाचन के पश्चात् प्रश्नमंच का आयोजन किया गया, जिसका संचालन श्री नितिन जी हुण्डीवाल-जलगांव ने किया। प्रत्येक रविवार को दोपहर में बाल-संस्कार शिविर आयोजित किया जाता है। पर्युषण पर्व में जयपुर, चेन्नई, बल्लारी, जोधपुर, सूरत, कंवलियास, दिल्ली, गोटन आदि स्थानों से पधारे श्रावक-श्राविकाओं ने धर्म-ध्यान में बढ-चढकर भाग लिया।

साध्वी-मण्डल के सान्निध्य में धर्माराधना

मसूदा- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में छोटे से ग्राम में त्याग-तप का उत्साह दिखाई पड़ रहा है। ग्यारह, नौ, आठ, पाँच आदि की अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। प्रार्थना, प्रवचन आदि में सबका उत्साह बना हुआ है। नवरंगी तप के साथ पर्युषण के आठ दिन अखण्ड शांति जाप का आयोजन हुआ। 500 उपवास तथा 70 तेले की तपस्या उल्लेखनीय है। श्रावण एवं भाद्रपद में तेले, एकासन एवं उपवास की लड़ी निरन्तर चलती रही। अष्टमी एवं चतुर्दशी को जाप का आयोजन होता है। रविवार को बच्चों की प्रतियोगिताएँ होती हैं। यहाँ, भकरी, नसीराबाद, गुलाबपुरा, विजयनगर, जोधपुर, अजमेर आदि के श्रावक-श्राविकाओं ने धर्माराधना का लाभ लिया। भाद्रपद शुक्ला तृतीया को श्रद्धेय श्री पन्नालाल जी म.सा. का जन्म-दिवस तप-त्यागपूर्वक मनाया गया।

भोपाल- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में तपाराधन एवं ज्ञानाराधन के क्षेत्र में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह

बना हुआ है। महासती मण्डल के पधारने से चातुर्मास के प्रारम्भ से ही तपस्याओं का पहली बार अनूठा ठाट लगा है। पौषध, संवर, दया, एकासन की लड़ी, तेले की लड़ी, मासखमण, 15, 11, 9 उपवास तथा अठाई की अनेक तपस्याएँ हुई हैं। मासखमण संगीता जी नाहर ने किया है। अभी तक 45 तेले हो चुके हैं। भोपाल संघ की धर्मभावना उत्कृष्ट है। पर्युषण पर्व में प्रतिदिन पौषध व संवर करने वालों की अच्छी उपस्थिति रही। सम्वत्सरी पर प्रतिपूर्ण पौषध एवं ग्यारहवाँ पौषध करने का 95 भाई-बहिनों ने लाभ लिया। पूज्य श्री सागरमल जी म.सा., आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा., आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की जन्म-तिथि एवं पुण्य-तिथि पर पंच परमेष्ठी की आराधना की गई। पर्युषण पर्व पर आठ दिन का जाप रहा। तेले एवं उपवास की लड़ी निरन्तर चल रही है। प्रत्येक रविवार को दया एवं एकासन का कार्यक्रम रखा जाता है, साथ ही रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। निकट एवं दूरवर्ती दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। आगामी ओली पर्व पर नवकार मंत्र का जाप एवं प्रत्येक घर में एक ओली का अभियान प्रारम्भ किया गया है। भोपाल के महिला मण्डल की सेवाएँ अत्यन्त सराहनीय है।

पाली-मारवाड़- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में पालीवासी धर्माराधन का लाभ ले रहे हैं। महासती मण्डल के प्रवचन में उपस्थिति अच्छी रहती है। पर्युषण पर्व पर अनूठा ठाट लगा रहा। प्रवचन सभा में उत्साह से श्रावक-श्राविकाओं ने धर्मश्रवण किया तथा सभी भाई-बहिन सामायिक में ही विराजे। यहाँ 12 अठाई तप के साथ उपवास, बेला, तेला, दया आदि अनेकविध तप हुए हैं।

जयपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में धर्म-ध्यान का ठाट लगा हुआ है। यहाँ 11 सितम्बर को अनन्त चतुर्दशी के दिन भिक्षु दया का आयोजन रखा गया, जिसमें श्री जैन रत्न युवक परिषद् के सदस्य तथा मालवीय नगर श्रीसंघ के 10 वर्ष से लेकर 60 वर्ष तक के श्रावकों ने भाग लेकर आनन्द का अनुभव किया। लगभग 50 श्रावक सामायिक के वेश में छः टोलियों में जब अलग-अलग दिशा में गोचरी-पानी आदि की गवेषणा हेतु निकले तो ऐसा अद्भुत नजारा दिखाई दिया कि मानों हर गली में साधु विचरण कर रहे हों। श्रावक दो-ढाई किलोमीटर तक गोचरी लेने भरी धूप में सहर्ष गये और किसी ने भी तनिक कष्ट का अनुभव नहीं किया। इस चातुर्मास के दौरान महासती जी की प्रेरणा से सभी श्रावक-श्राविकाओं में विशेषतः युवकों में धर्म-

साधना करने हेतु बड़ा ही जोश है। अनेक युवक हर रविवार एवं चतुर्दशी को उपवास-पौषध संवर आदि करते हैं तथा व्याख्यान में विशेष तौर पर उपस्थित होकर धर्मलाभ लेते हैं। श्राविकाएँ भी साधना के क्षेत्र में पीछे नही हैं, उन्होंने अलग से भिक्षु दया का आयोजन किया तथा आश्विन कृष्णा एकम को सामूहिक आयम्बिल के आयोजन में 50 श्राविकाओं ने लाभ लिया। प्रत्येक सोमवार, मंगलवार और बुधवार को महिलाओं के लिए शिविर का भी आयोजन किया जाता है। पर्युषण पर्व में धर्माराधना का ठाट रहा। यहाँ उपवास के दो मासखमण, एकासन के तीन मासखमण, 300 से अधिक दया-संवर, 200 के लगभग पौषध, 15 अठाई तप हुए। उपवास, चोला, पचोला, दस, ग्यारह, सत्रह एवं परदेशी राजा का भी तप किया गया। दो आजीवन शीलव्रती बने, आठों दिनों में धार्मिक प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं, जिसमें सभी भाई-बहिनों ने उत्साह से भाग लिया।

पीपाड़ शहर- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में त्याग-तप एवं ज्ञानाराधन की निरन्तरता बनी हुई है। 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7,8, 9, 11, 15, 26 एवं मासखमण की तपस्या हुई है। पूर्व में भी मासखमण की तपस्या हो चुकी है। सम्वत्सरी पर्व के दिन लगभग 10 से अधिक भाई-बहिनों ने आठ एवं इससे अधिक की तपस्याएँ की। भाइयों में पचरंगी एवं बहिनों में नवरंगी सम्पन्न हुई है। एक भाई के 24 उपवास एवं एक बहिन के 34 की तपस्या के प्रत्याख्यान हुए हैं। पर्युषण के आठों दिन बहिनों ने अनवरत जाप किया तथा भाइयों ने रात्रि में प्रतिक्रमण के पश्चात् एक घंटे सामूहिक जाप किया। तेले एवं उपवास की लड़ी निरन्तर जारी है। आजीवन जमीकन्द त्याग एवं धोवन पानी पीने के प्रत्याख्यान हुए हैं। ज्ञानाराधन हेतु पर्युषण में दैनिक प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं, जो मुख्यतः कौन बनेगा धर्मवीर, प्रतिक्रमण एवं अन्तगढदसा सूत्र पर आधारित रहीं। अब तक यहाँ 40 तेले एवं 19 अठाई तप हो चुके हैं।

भोपालगढ- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व में तपाराधन के ठाट के साथ दया-पौषध एवं प्रतिदिन प्रतियोगिता के आयोजन हुए। महासती सरलेशप्रभा जी की प्रेरणा से 40 अजैन बालिकाओं ने रात्रि-भोजन न करने का प्रत्याख्यान किया एवं पूर्णतया निभाया। कई भाइयों ने बीड़ी-सिगरेट आदि कुव्यसनों का त्याग किया। पर्युषण में आठ दिन नवकार मंत्र का जाप चला तथा मध्याह्न में प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, जैन

हाऊजी, अन्त्याक्षरी आदि विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई। जन्माष्टमी पर कई बहिनों ने चमड़े एवं रेशम से बने वस्त्रों को उपयोग में न लेने का संकल्प किया। चातुर्मास प्रारम्भ से ही यहाँ तेले की लड़ी चल रही है। 36 तेले की तपस्या के साथ 3, 4, 5, 8, 9, 11 की तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। श्रीमती सुमन जी धर्मपत्नी श्री रविन्द्र जी लुंकड़ ने 33 की तपस्या सम्पन्न की है। छः बहनों ने दो माह एकान्तर उपवास किया है। प्रार्थना के पश्चात् नवयुवकों का ज्ञानार्जन तथा मध्याह्न में शास्त्र वाचन के पश्चात् बालक-बालिकाओं का शिक्षण कार्य नियमित रूप से चल रहा है।

बजरिया-सवाईमाधोपुर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में युवक-युवती, श्रावक-श्राविका सभी धर्माराधन एवं ज्ञानाराधन के साथ आनन्द का अनुभव कर रहे हैं। यहाँ प्रतिदिन नियमित रूप से प्रातःकाल 7 से 8.15 बजे युवकों की कक्षा लग रही है, जिसमें महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. लगभग 100 युवकों को जीवन निर्माणकारी प्रेरणा कर रहे हैं। प्रातःकालीन व्याख्यान में श्रद्धेया महासती श्री इन्दुबाला जी, महासती श्री मुदितप्रभा जी एवं अन्य सतियों का भी लाभ प्राप्त हो रहा है। पर्युषण के दिनों में प्रातः 8.30 बजे से 11 बजे तक उत्साहपूर्वक अन्तगडदशा सूत्र एवं प्रवचनों का सबने लाभ लिया। प्रतिदिन मध्याह्न में प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। श्रद्धेया देवांगना जी म.सा. ने कल्पसूत्र की वाचना की। दया दिवस के दिन 165 श्रावक-श्राविकाओं ने दयाव्रत की आराधना की। सम्वत्सरी का प्रवचन गर्ल्स स्कूल के विशाल प्रांगण में हुआ, जिसमें लगभग 1200 श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। सम्वत्सरी महापर्व पर 12 प्रहर, 8 प्रहर तथा 5 प्रहर के 100 पौषध हुए। आठों ही दिन अखण्ड नवकार मंत्र के जाप हुए। पर्युषण में तीन पचरंगी हुई। अपराह्न में दो बजे से श्राविकाओं की कक्षा में ज्ञानाराधना का कार्य चलता है। सभी साध्वीवृन्द अथक श्रम से ज्ञानार्जन करा रहे हैं। 25 श्राविकाएँ संवर-पौषध के साथ एकान्तर तप कर रही हैं। एकासन एवं आयम्बिल तप की लड़ी चल रही हैं। 18 अगस्त से 22 अगस्त तक महिलाओं एवं बालिकाओं का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 120 श्राविकाओं ने लाभ लिया। शिविर में लगभग 75 महिलाओं ने 12 व्रत ग्रहण किए। बालिकाओं, युवकों की अलग-अलग सामूहिक दया आयोजित हुई। 21 अगस्त से प्रत्येक रविवार को बालक-बालिकाओं का धार्मिक शिक्षण चल रहा है। अनेक युवक-युवती प्रतिक्रमण, 25 बोल आदि सीख रहे हैं तथा कुछ बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण, 25

बोल पूर्ण कर लिये है। युवकों ने 10 दिन संघ-सेवा का, आत्महत्या नहीं करने का, अपने जीवनकाल में 32 आगम पढने का नियम लिया है। यहाँ लगभग 90 तेले और 20 अठाई तप हो चुके हैं।

शूले वैपेरी-चेन्नई- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 11 के सान्निध्य में मरलेचा गार्डन धर्माराधना से आलोकित हो रहा है। 24 तीर्थंकर आराधना, 20 बोलों की साधना का समापन 6 अगस्त 2011 को हुआ, जिसमें विशेष अतिथि के रूप में श्रीमान् मोफतराजजी मुणोत, श्रीमान् रतनलालजी बाफणा, श्रीमान् सुमेरसिंहजी बोथरा एवं श्री कैलाशचन्दजी हीरावत पधारे। श्रीमान् मुणोत साहब ने अपने वक्तव्य में कहा कि इस तरह का देश में यह पहला कार्यक्रम है, जिसमें 96 साधकों ने लगातार 24 दिनों तक आवासीय शिविर के रूप में मरलेचा गार्डन में निवास कर साधना की। समापन दिवस में सभी 96 साधकों को सामायिक उपकरणों एवं विशेष अतिथियों द्वारा अभिनंदन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया । 25 बोल सीखने की कक्षा का त्रिदिवसीय आयोजन 13,14,15 अगस्त को रखा गया जिसमें करीब 350-400 भाई-बहिनों ने ज्ञानार्जन किया । 14, 15 अगस्त को द्विदिवसीय स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें करीब 70 स्वाध्यायियों ने भाग लिया । 21 अगस्त को मरलेचा वाटिका में 8 से 25 वर्ष तक के करीब 1200 बालकों एवं युवाओं को संस्कार दीक्षा प्रदान की गई, जिसमें 1. सप्त कुव्यसनों का त्याग, 2. नवकार मंत्र से जीवन मंगल एवं 3. जैनत्व के संस्कारों के प्रति निष्ठा रखने हेतु महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. द्वारा नियम दिलाया गया। तत्पश्चात् सभी बालकों एवं युवाओं को शपथ ग्रहण के साथ प्रमाण पत्र एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये गये। उसी दिन आस्था ग्रुप ऑफ गर्ल्स द्वारा त्रिशलानंदन की दुकान का आयोजन किया गया । जिसमें धार्मिक उपकरण विभिन्न धार्मिक प्रत्याख्यान ग्रहण करने पर निःशुल्क दिये गये।

चेन्नई के उपनगर अयनावरम संघ की पुरजोर विनति को स्वीकार कर महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने पर्युषण के 8 दिनों तक अयनावरम स्थानक में विराजकर धर्म की महती प्रभावना की। अयनावरम में करीब 120 तेलों एवं 18 अठाइयों के प्रत्याख्यान हुए ।

पर्युषण पर्व के प्रारम्भ से करीब 400 तेलों की तपस्या सम्पन्न हो चुकी है एवं इनमें से ही 100 तेलों के तपस्वी महासतीजी के आह्वान पर चोले तक आगे बढ़े। करीब 125 महिलाओं ने नवरंगी तप की आराधना की। 3,

5,8,9,11,15,21 की अनेक तपस्याओं के साथ एक मासखमण की तपस्या एवं श्रीमती संजु देवी जी बाघमार, धर्मपत्नी श्री बी. नवरतन जी बाघमार पुत्रवधू स्व. श्री भंवरलाल जी बाघमार कोसाणा ने 52 की तपस्या पूर्ण की। पर्युषण पर्व के प्रारम्भ से ही प्रवचन में मरलेचा गार्डन खचाखच भरा रहता था। प्रातः 7.00 से 8.00 बजे प्रत्येक बुधवार एवं रविवार को 'युवा स्वाध्यायी प्रशिक्षण' कक्षा का आयोजन किया जाता है। करीब 30 युवा बन्धु इसमें भाग ले रहे हैं। प्रवचन के तुरन्त पश्चात् श्राविकाओं के लिये प्रत्येक सोमवार एवं शुक्रवार को ज्ञान-ध्यान की कक्षा आयोजित की जाती है। दोपहर 2 बजे से 3 बजे तक बालिकाओं के लिये प्रत्येक गुरुवार एवं शनिवार को ज्ञान-ध्यान की कक्षा आयोजित जाती है। ये सभी कक्षाएं महासतियांजी के सान्निध्य में आयोजित हो रही हैं।

23,24 एवं 25 सितम्बर को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का त्रिदिवसीय शिविर महासती मण्डल के सान्निध्य में आयोजित किया गया, जिसमें जोधपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर आदि से करीब 80 श्राविकाओं ने तथा स्थानीय से करीब 150 श्राविकाओं ने भाग लिया।

इन्दौर- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में जानकी नगर स्थानक में एकाशन के 4 मासखमण तथा आयम्बिल का एक मासखमण हुआ है। एक धर्मचक्र, तीन बार सामूहिक एकाशन एवं एक बार सामूहिक दया के आयोजन हुए हैं। यहाँ 100 बच्चों का शिविर भी आयोजित हुआ है। तेले एवं आयम्बिल की लड़ी निरन्तर चल रही है। बहू मण्डल ज्ञानाराधन में संलग्न है। मासखमण तप के साथ 21, 11, 9, 8, 6, 5, 4 आदि की अनेक तपस्याएँ हुई हैं। यहाँ 32 अठाई तप हो चुके हैं। संवर, दया, पौषध भी अच्छी संख्या में निरन्तर हो रहे हैं। पर्युषण के आठ दिन स्थानक भवन खचाखच भरा रहा। जानकी नगर में ऐसा चातुर्मास पहली बार देखने को मिल रहा है। जानकी नगर का सम्पूर्ण वातावरण धर्ममय बना हुआ है।

गंगापुर सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तप-त्याग की गंगा बह रही है। यहाँ पर उपवास, एकाशन, आयम्बिल एवं अठाई की लड़ी चल रही है। 1, 2,3,4,5,7,8,9,10,11,15, 16 उपवास की अनगिनत तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। 7 आजीवन ब्रह्मचर्य के नियम लिए गए हैं। प्रत्येक रविवार को प्रतियोगिताएँ रखी जाती हैं। पर्युषण के आठों दिनों में अखण्ड जाप पहली बार हुआ तथा आठों दिन प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। छोटे-छोटे बच्चे भी सामायिक, प्रतिक्रमण सीख रहे हैं। कई भाइयों ने 4 माह के

लिए ब्रह्मचर्य व्रत अपनाया है तथा गुटखा, शराब आदि सप्त कुव्यसनों का त्याग किया है। एक बहिन श्रीमती कंचन जी जैन के 21 दिवसीय तप सम्पन्न हुआ है। श्रीमती प्रभा जैन ने 16 तथा श्रीमती आरती जैन ने 11 दिवसीय तप किया है। श्री राधे माली एवं श्री केदारलाल गुजर ने अठाई तप किया है। युवक मण्डल, बालिका मण्डल एवं श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह बना हुआ है। यहाँ आयोजित एक धर्मचक्र में 42 उपवास एवं 186 दया हुई। अभी तक 32 तेले सम्पन्न हो चुके हैं।

माण्डल- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में एक मासखमण के साथ 12, 11, 9, 8, 5, 4 की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। तेले की लड़ी एवं आयम्बिल की लड़ी निरन्तर चल रही है। तेले की लड़ी के अलावा भी 10-12 तेले हुए हैं। एकासन के दो मासखमण एवं दया के छः मासखमण हो चुके हैं। सम्वत्सरी के दिन इस छोटे से ग्राम में महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा. के आह्वान पर लगभग 250 उपवास हुए हैं। जैन-अजैन सभी के योगदान से चातुर्मास की सफलता आश्चर्यचकित कर रही है। 20 जैन घरों की बस्ती में 250 उपवास होना महत्त्व रखता है। सम्वत्सरी के दिन लगभग 60 पौषध हुए हैं।

वैशाली नगर, अजमेर- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व पर बेला, तेला, चोला, पचोला, सात, अठाई, ग्यारह, नौ आदि अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। एक मासखमण, 71 तेले एवं 11 अठाई तप उल्लेखनीय है। एक सतरंगी, पाँच एकाशन के मासखमण सम्पन्न हुए। एक बहिन के 10 की तपस्या है, जिसके आगे बढने की सम्भावना है। आठ दिन नवकार मंत्र का अखंड जाप हुआ तथा विभिन्न विषयों पर प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई। चार दम्पती आजीवन शीलव्रती बने-श्रीमती राजकुमारी-सेवन्तराज जी मुणोत, श्रीमती सुशीलाबाई-लादूलाल जी पीपाड़ा, श्रीमती मिथलेशदेवी-राजेश कुमार जी जैन तथा श्रीमती सुशीलाबाई-विमलकुमार जी नाहर। सम्वत्सरी के दिन 50 भाई-बहिनों ने पौषध किए। तपस्या एवं अठाई करने वाली बहिनों ने आठ ही दिन स्थानक में पौषध किया। सम्वत्सरी के पश्चात् 14 सितम्बर को विशेष धर्माराधना हुई, जिसके अन्तर्गत 235 एकाशन तप हुए तथा 35 बकरों को अभयदान दिया गया। व्याख्यान में लगभग 700 की उपथिति रही। चार दिन बहिनों का शिविर आयोजित हुआ। आयम्बिल तप का एक मासखमण सम्पन्न हुआ तथा एक वर्ष तक आयम्बिल के अभियान को जारी

रखने का संकल्प किया गया। संस्कार दीक्षा, रविवारीय प्रतियोगिता, बालकों की कक्षाएँ 'आओ सीखो तत्त्व ज्ञान, जिससे हो आत्मोत्थान' विषय पर आयोजित की जा रही हैं।

संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं उसकी सहयोगी संस्था, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा शनिवार 17 सितम्बर, 2011 को मध्याह्न 1.30 बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन, छट्ठी गली, शक्तिनगर, जोधपुर में संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

सभा में संघ-सरंक्षक मण्डल के संयोजक श्रीमान मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना-जलगांव, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर सहित संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने मंच को सुशोभित किया।

वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा-ब्यावर द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी ने गत साधारण सभा की कार्यवाही प्रस्तुत की। उपस्थित सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से कार्यवाही की पुष्टि की गई। संघ कोषाध्यक्ष श्री धनपतराजजी भंसाली-मुम्बई ने वर्ष 2010-2011 का आय-व्यय एवं वर्ष 2012-2013 का अनुमानित बजट प्रस्तुत किया। सभा ने बजट की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सर्वसम्मति से आय-व्यय एवं अनुमानित बजट पारित किये। आगामी वर्ष से संघ के एकाउण्ट ऑडिट करने के लिए अंकेक्षक की नियुक्ति के लिए श्री अरविन्दजी सुराणा एण्ड कम्पनी - जोधपुर को सर्वसम्मति से नियुक्त किया गया।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने देश के कोने-कोने से पधारे संघ सदस्यों तथा संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि आज की सभा में हमारे गुरुभ्राताओं की अच्छी संख्या में उपस्थिति देखकर प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। संघ सदस्यों की गुरुभक्ति, संघनिष्ठा और संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं

के कार्यक्रमों की क्रियान्विति में तन-मन-धन से एवं समर्पित भाव से सहयोग के लिए साधुवाद ज्ञापित करते हुए संघाध्यक्ष महोदय ने कहा कि हमारी संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मि-वात्सल्य-सेवा में उत्तरोत्तर भावना वृद्धिंगत होती रहे, यही आपसे अपेक्षा है।

अध्यक्ष महोदय के आह्वान पर साधारण सभा में उपस्थित संघ सदस्यों ने संघ की गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों के उन्नयन एवं विकास के लिए रचनात्मक सुझाव प्रस्तुत किए। संघ हेतु प्राप्त सुझावों का संघाध्यक्ष महोदय ने एवं मण्डल हेतु प्राप्त सुझावों का मण्डल अध्यक्ष ने सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया, साथ ही संघ सदस्यों को विश्वास दिलाया कि प्राप्त सुझावों की समीक्षा कर उपयोगी सुझावों को क्रियान्वित करने का प्रयास रहेगा।

सभा को संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, शासन समिति के संयोजक श्री रतनलालाजी बाफना, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. एस. सुराणा ने मार्गदर्शन प्रदान किया।

अन्त में संरक्षक-मण्डल के सदस्य सर्व श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा एवं डॉ. सम्पतसिंहजी भाण्डावत सहित गत साधारण सभा से अब तक दिवंगत श्रावक-श्राविकाओं को एक लोगस्स के पाठ से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी ने बैठक में पधारे सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया तथा आमसभा की सुन्दर व्यवस्था के लिए श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को धन्यवाद देने के अनन्तर बैठक समापन की घोषणा की गई।

सूर्यनगरी में गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह का भव्य आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के सयुंक्त तत्त्वावधान में सम्मान-समारोह एवं गुणी अभिनन्दन का कार्यक्रम 18 सितम्बर को जयनारायण व्यास टाउन हॉल में मध्याह्न 1.30 बजे प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सर्वोच्च न्यायालय, दिल्ली के न्यायाधिपति माननीय श्री राजेन्द्रमलजी लोढ़ा पधारे, वहीं जयपुर विकास प्राधिकरण के आयुक्त माननीय श्री कुलदीपजी रांका I.A.S. ने विशिष्ट अतिथि पद को सुशोभित किया।

प्रतिष्ठित आचार्य श्री हस्ती स्मृति-सम्मान जयपुर के श्रावकरत्न श्री केवलमलजी लोढ़ा को दिया गया। गुरु हस्ती की सामायिक-स्वाध्याय प्रवृत्ति

को जन-जन तक पहुँचाने एवं संत-सतीवृन्द के अध्ययन में उल्लेखनीय सेवाएं देने के उपलक्ष्य में लोढ़ाजी का माल्यार्पण से स्वागत, शॉल ओढ़ाकर बहुमान एवं रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन और 51 हजार रूपये की सम्मान राशि मुख्य अतिथि के कर-कमलों से प्रदान की गई। युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान चेन्नई के प्रतिष्ठित अधिवक्ता श्री विनोदजी सुराना को प्रदान किया गया। सम्मान में 21 हजार रूपये एवं रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन न्यायाधिपति लोढ़ा साहब ने प्रदान किया।

डॉ. चंचलमलजी चोरड़िया-जोधपुर, सौ. ललिताजी कटारिया-जलगाँव और श्री अशोककुमारजी जैन-जयपुर को क्रमशः विशिष्ट स्वाध्यायी, महिला स्वाध्यायी व युवा स्वाध्यायी के रूप में 21-21 हजार की राशि एवं रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन देकर सम्मानित किया गया।

गुणी-अभिनन्दन सम्मान के अन्तर्गत संघ-सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले श्रावकरत्न श्री रूपकुमारजी चौपड़ा-पाली एवं श्री कांतिलालजी चौधरी-धुलिया का अभिनन्दन किया गया। तप साधना में वीरमाता श्रीमती शशिकलाजी गाँधी-जोधपुर, श्रीमती सूरजकँवरजी पारख-जोधपुर व श्री नवरतनजी लुंकड़-जयपुर का अभिनन्दन हुआ। श्रमणोचित औषधोपचार हेतु डॉ. जे.सी. मालू-जोधपुर का सम्मान किया गया तथा समाज-सेवा हेतु श्री लाभचन्दजी टाटिया-जोधपुर का अभिनन्दन किया गया।

सम्मानित महानुभावों की ओर से युवा प्रतिभा सम्मान से सम्मानित श्री विनोदजी सुराणा ने संघ की सकारात्मक सोच पर हर्ष व्यक्त किया। शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना एवं संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने गुरु हस्ती-गुरु हीरा की सद्शिक्षाओं को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करने पर बल दिया।

विशिष्ट अतिथि श्री कुलदीपजी रांका ने अपने प्रभावी सम्बोधन में कहा कि गुणीजनों के सम्मान-समारोह में आकर मैं कुछ योगदान तो नहीं दे सकता, हाँ यहाँ आकर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति राजेन्द्रमल जी लोढ़ा साहब ने कहा कि जो भीख मांगकर जीवन बसर करता है, जंग खाये लोहे की पेटी पर सोकर रात गुजारता है उस भिखारी को यह नहीं मालूम कि जिस पेटी पर वह सोया है उसमें अपार धन राशि रही हुई है। भिखारी के भीख मांगने पर किसी भले व्यक्ति ने उस पेटी को खुलवाया तो उसमें सोने-चाँदी, हीरे-जवाहरात थे, ऐसे ही हर व्यक्ति की आत्मा में अपार निधि है, जरूरत है उसे पहचानने की। जैन दर्शन में तीन 'अ' अहिंसा, अपरिग्रह और

अनेकान्त इन तीन सिद्धान्तों को दरकिनार करने के कारण भ्रष्टाचार पनप रहा है। आज पैसा सबको चाहिये। बिना पैसे काम नहीं चलता, पर ईमानदारी से कमाये पैसों से काम चल सकता है। जरूरत है हम स्वयं जीवन में परिवर्तन लायें तभी समाज और देश से भ्रष्टाचार मिट सकता है। रत्नसंघ के सम्मान-समारोह में गुणियों का सम्मान अच्छी परम्परा है इस कार्यक्रम की सराहना होनी चाहिये।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि के साथ देश भर से आये संघ सदस्यों के प्रति प्रमोद व्यक्त करते कहा कि हमारे सद्गुरुओं की सद्सीख से संघ समुज्ज्वल हो रहा है। सेवा,त्याग, उदारता और गुणियों के प्रति हमारी भावना उत्तरोत्तर बढ़े। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के जोधपुर चातुर्मास में ज्ञान-दर्शन-चारित्र के सुन्दर आयोजन के लिए अपनी ओर से एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से साधुवाद दिया। संघ महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मीताजी मुल्तानी एवं श्री अनिलजी बोहरा ने किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन 17 सितम्बर, 2011 को छट्ठी गली, शक्तिनगर, जोधपुर में आयोजित हुआ। सर्वप्रथम कार्यक्रम में स्वागत गीत श्राविका मण्डल की सचिव श्रीमती बीनाजी मेहता ने प्रस्तुत किया। महासचिव श्रीमती शशि जी टाटिया ने श्राविका मण्डल की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्रतिवेदन के माध्यम से प्रस्तुत की। माननीय संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने अपने उद्गार में कहा कि बच्चों को संस्कार एक श्राविका ही दे सकती है। मुझे भी मेरी धर्मपत्नी शरदजी ने ही धर्म की ओर उन्मुख किया है जिसकी वजह से आज मैं संघ-समाज से जुड़ा हुआ हूँ। श्री मुणोत साहब ने कहा कि श्राविकाएं पहले अपने बच्चों को संस्कार प्रदान करें, बच्चों में संस्कार होंगे तो वे धर्म से जुड़ेगें।

संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने अपने उद्गार में कहा कि आज की नारी ही घर के सभी सदस्यों को सुधार सकती है। यहाँ जितनी भी श्राविकाएं बैठी है वे आज संकल्प करें कि तीन दिन परिवार के साथ संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन हेतु अवश्य जाएं। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.

एस. सुराणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्राविकाएं संघ की शान है। मुझे विश्वास है श्राविका मण्डल खूब तरक्की करेगा।

श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित प्रश्न व्याकरण खुली पुस्तक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्तकर्ता श्री राजकुमारजी केवलचंदजी बांठिया-पाली, द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता श्रीमती अरूणाजी संजीवकुमारजी जैन-होशियारपुर व तृतीय स्थान प्राप्तकर्ता श्री जेठमलजी मोहनोत-जोधपुर को संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती मधुजी सुराणा ने सभी सदस्यों को बताया कि इस प्रतियोगिता के सौजन्यकर्ता सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी. एस. सुराणा हैं जिनका श्राविका मण्डल हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

कार्यक्रम में अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सर्वश्रेष्ठ शाखा का प्रथम पुरस्कार **चेन्नई शाखा** को, द्वितीय पुरस्कार **जोधपुर शाखा** को तथा तृतीय पुरस्कार **जयपुर शाखा** को प्रदान किया गया। विहार सेवा में सेवाएँ प्रदान करने वाली **पीपाड़ शाखा** को सम्मानित किया गया तथा तपस्या के क्षेत्र में मासखमण करने वाली श्राविकाओं को माला, साड़ी प्रदान की गई। श्रीमती मधुजी सुराणा ने वार्षिक अधिवेशन में पधारे सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का सम्मान-कार्यक्रम सम्पन्न

जोधपुर- 17 सितम्बर 2011 को मध्याह्न में अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् की 21वीं वार्षिक (संयुक्त) आमसभा सामायिक स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर में सम्पन्न होने के पश्चात् इसी भवन में रात्रि 8.00 बजे युवक परिषद् का वार्षिक सम्मान कार्यक्रम आयोजित हुआ। सम्मान कार्यक्रम में युवक परिषद् के चारों राष्ट्रीय कार्यक्रम यथा-चतुर्विधसंघ सेवा, सामायिक स्वाध्याय, धार्मिक शिक्षण तथा स्वधर्मि-वात्सल्य एवं समाज सेवा तथा इसके अन्तर्गत दिवस विशेषों एवं परिषद् के राष्ट्रीय अभियानों के तहत सराहनीय कार्यों के लिए विशिष्ट शाखा पुरस्कार प्रदान किए गए। व्यक्तिगत रूप से सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य के लिए विशिष्ट युवारत्नों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। वर्ष 2011 में राष्ट्रीय कार्यक्रमों, दिवस विशेषों, राष्ट्रीय अभियानों एवं व्यक्तिगत कार्यों के लिए

निम्नांकित युवासाथियों एवं शाखाओं का मंचासीन महानुभावों द्वारा स्मृतिचिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया-

व्यक्तिगत रूप से सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य के लिए सम्मान

तप-2011(मासखमण करने पर)- श्री उत्सव बाफना-जलगांव, श्री मंगलचन्द चौपड़ा-जोधपुर, श्री मनीष पुत्र माधोमलजी लोढ़ा- जोधपुर, श्री नरेन्द्र बाफना- जोधपुर, श्री गणपत चौपड़ा-जोधपुर।

संयम-2011 (ब्रह्मचर्य /12 व्रत धारण करने पर)- श्री अरविन्द जीरावला- जोधपुर, ब्रह्मचर्य धारण करने पर ।

शिक्षा 2011- श्री गौरव बाफना-जलगांव (एमबीबीएस)।

खेलकूद 2011- श्री उमंगकुमार चोरडिया पुत्र श्री प्रदीपकुमारजी चोरडिया पौत्र दशरथमलजी चोरडिया, बैंगलोर का राज्य स्तरीय क्रिकेट टीम में चयन होने पर ।

चातुर्मास दौरान विशेष सेवा देने पर - श्री कौशल बोथरा, जोधपुर।

राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत सराहनीय कार्य के लिए शाखा सम्मान

1.**चतुर्विधसंघ सेवा सम्मान 2011**- श्री जैन रत्न युवक परिषद, जोधपुर।

2.**सामायिक स्वाध्याय सम्मान 2011**- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, सूरत।

3.**धार्मिक शिक्षण सम्मान 2011**- श्री जैन रत्न युवक परिषद, जयपुर।

4.**स्वधर्मि-वात्सल्य एवं समाजसेवा 2011**- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, खेरली।

राष्ट्रीय अभियान के अन्तर्गत उल्लेखनीय कार्य के लिए शाखा सम्मान

आओ 25 बोल सीखें राष्ट्रीय अभियान- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, खेरली।

दिवस विशेष पर उत्कृष्ट कार्य के लिए शाखा सम्मान

1.**तपस्या दिवस सम्मान 2011**-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर।

2.**सामायिक दिवस सम्मान 2011**-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, पीपाड़।

3.**दया दिवस सम्मान 2011**-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अलीगढ़ रामपुरा।

4.**स्वाध्याय दिवस सम्मान 2011**-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, पाली

5.**ज्ञान दिवस सम्मान 2011**-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, मुम्बई

6.**संयम दिवस सम्मान 2011**-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, भोपालगढ़।

7.**अहिंसा/जीवदया दिवस सम्मान 2011**-श्री जैन रत्न युवक परिषद्,नदबई

8.**व्यसनमुक्ति दिवस सम्मान 2011**-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, सवाईमाधोपुर।

श्रावकोचित विहार सेवा में 7 दिन उल्लेखनीय सेवा देने वाले युवारत्न बन्धुओं का सम्मान

जोधपुर- श्री महावीर बोथरा, श्री लोकेश कुम्भट, श्री जितेन्द्र लोढ़ा, श्री हर्षवर्द्धन ललवानी, श्री शैलेष डोसी।

ब्यावर- श्री महेन्द्रकुमार गोलेछा, श्री वैभवकुमार सुकलेचा, श्री आशीष कुमार

सुकलेचा, श्री प्रफुल्लकुमार भण्डारी, श्री शैलेन्द्रकुमार डोसी, श्री ऋषभ गोलेछा, श्री मनीष गोलेछा, श्री गौरव मकाना, श्री संजयकुमार डोसी, श्री मनीष कुमार मेहता, श्री हेमन्तकुमार भण्डारी, श्री ललित कुमार गोलेछा, श्री गौतमचन्द बोहरा, श्री मनोजकुमार सुराना, श्री महावीरचन्द मकाना, श्री सुमित सुराना।

हिण्डौनसिटी– श्री राजेश हुकमचन्द जी जैन, श्री नरेन्द्र प्रेमचन्द जी जैन, श्री राहुल शीतलप्रसाद जी जैन, श्री शैलेन्द्र रामेश्वरप्रसादजी जैन।

पीपाड़ शहर– पदम लुणावत, श्री अभय कटारिया, श्री मणिकुमार चौधरी, श्री दीपककुमार मूथा, श्री विनोदकुमार पांड्या, श्री जितेन्द्र कटारिया, श्री सुरेन्द्र गुन्देचा, श्री महेन्द्र चौधरी, श्री राकेश जैन।

खेरली– श्री मनीष कुमार जैन, श्री मुकेश जैन, श्री अजीत जैन, श्री प्रवीण जैन।

पाली– श्री विपिन बलोता, श्री मनीष पगारिया, श्री धर्मेश रेड, श्री सुरेश धारीवाल, श्री चन्द्रेश सिंघवी, श्री नरपत चौपड़ा, श्री कल्पेश लोढ़ा, श्री राजीव गांधी।

चेन्नई– श्री अशोक बाफना, श्री अशोक लोढ़ा, श्री निखिल बागमार, श्री उपेन्द्र बागमार, श्री सुनिल डी. बागमार, श्री विमल बोहरा, श्री किशोर डाकलिया, श्री अरुण बाघमार, श्री पदम पी. बागमार, श्री सुरेन्द्र कांकरिया, श्री संजय चौधरी, श्री महावीर छाजेड़।

गंगापुर सिटी– श्री धर्मेशकुमार जैन, श्री शीतल प्रसाद जैन, श्री पवनकुमार जैन, श्री अनिलकुमार जैन, श्री शिवचरण जैन, श्री भागचन्द जैन।

नागौर– श्री अजीत भण्डारी।

शाखा द्वारा वर्षभर में 200 किलोमीटर विहार सेवा : शाखा पुरस्कार

श्री जैन रत्न युवक परिषद्– जोधपुर, चेन्नई, पीपाड़शहर, ब्यावर, भोपालगढ़, पाली, सवाईमाधोपुरं एवं जयपुर शाखा।

प्रथम बार स्वाध्यायी सेवा देने पर युवा स्वाध्यायी सम्मान :–श्री पारसमल खिंवसरा–चेन्नई, श्री विरेन्द्र ओस्तवाल–चेन्नई, श्री सोनू जैन–जयपुर, श्री गगन जैन–जयपुर, श्री राजकुमार जैन–जयपुर, श्री गौरव जैन–जयपुर, श्री रितेश जैन–जयपुर।

युवारत्न बन्धुओं के शैक्षिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक उन्नयन हेतु गजेन्द्र निधि के संचालन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना में विशेष आर्थिक सहयोग प्रदान करने पर स्मृतिचिह्न भेंट किया गया।

वर्ष 2011 में राष्ट्रीय कार्यक्रमों, दिवस विशेषों, राष्ट्रीय अभियानों में उत्कृष्ट व सराहनीय कार्य के लिए बड़ी शाखा में श्री जैन रत्न युवक परिषद्–**चेन्नई** को तथा छोटी शाखा में श्री जैन रत्न युवक परिषद–**सूरत** को **सर्वश्रेष्ठ**

शाखा से पुरस्कृत किया गया। सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार 18.09.2011 को श्री जयनारायण व्यास टाउन हॉल में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा आयोजित गुणी-अभिनन्दन समारोह में मुख्य एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा प्रदान किया गया।

सम्मान कार्यक्रम के दौरान कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार गोलेछा-पाली ने युवारत्नों को संघहित में निष्ठापूर्वक कार्य करते रहने का आह्वान किया। सम्मान कार्यक्रम में उपस्थित संघ संरक्षक सर्वश्री रतनलाल जी बाफना-जलगांव ने युवारत्नों द्वारा किए जा रहे कार्यों पर सन्तोष प्रकट किया। युवारत्नों को संघ द्वारा जो भी कार्य सौंपे गए उन्हें युवकों ने तत्परता के साथ कर दिखाया। भविष्य में भी इसी प्रकार के सतत सहयोग की कामना की। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक सर्वश्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई ने अपने उद्बोधनं में बताया कि युवारत्न मेरे प्रिय हैं, इसलिए कि मेरे अध्यक्षकाल में युवक परिषद् का गठन हुआ तथा इसलिए भी कि संघ के जो मूल कार्य हैं उन्हें युवारत्नों ने लेकर सफलता के साथ क्रियान्वित भी किया। कार्यों की सफलता में युवकों का समय का बलिदान भी रहा है। युवारत्नों को अपना निकटस्थ मानते हुए प्रेरणा की कि वे पूर्ण ईमानदारी के साथ, संकल्पबद्ध होकर संघ कार्यों में समर्पित रहें। समर्पण में किन्तु-परन्तु कभी न रखें। संघ को युवकों पर गौरव हो सके इस दिशा में आचार को सुदृढ़ रखते हुए, मर्यादित रहते हुए अपना जीवन धर्ममय बनाने का आह्वान कर आशीर्वचन प्रदान किया। युवक परिषद् को युवकों के लिए करियर काउंसिल के कार्य भी करने हेतु प्रेरणा की। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा-चेन्नई ने युवकों को अपने आशीर्वचन में कहा कि पंचपरमेष्ठी की कृपा से आचार्य हीरा का यह प्रयास कि हर घर में हो अध्यात्म विकास, सफल होवे। युवकों द्वारा न केवल संघ-सेवा के कार्यों के प्रति समर्पण हो बल्कि किए गए धर्म ध्यान एवं तपस्याओं से भी मन प्रफुल्लित हो।

कार्यक्रम के दौरान युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई ने कार्यक्रम में युवारत्नों की अच्छी उपस्थिति पर हर्ष एवं आभार जताया। युवक परिषद् द्वारा आयोज्य कार्यों की सफलता का श्रेय पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा को बताया। युवारत्न श्री जितेन्द्रजी डागा- जयपुर एवं उनकी पूरी टीम को धार्मिक शिक्षण शिविरों के सफल संचालन में असीम सहयोग के प्रति आभार प्रकट किया। संघ पदाधिकारीगण को कार्यक्रम में उपस्थित होकर युवारत्नों का मार्गदर्शन करने के लिए आभार व्यक्त किया। महासचिव श्री मनोज कांकरिया-

जोधपुर ने मंचासीन पदाधिकारियों, युवारत्नों का कार्यक्रम में उपस्थित होने के प्रति आभार ज्ञापित किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर तथा श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा कार्यक्रम में सभी प्रकार की सुन्दर व्यवस्थाओं के लिए आभार प्रकट किया। सम्मान कार्यक्रम का संचालन युवक परिषद् के निदेशक श्री सुमतिचन्दजी मेहता-पीपाड़ द्वारा किया गया।

जोधपुर में वीतराग ध्यान-साधना शिविर सम्पन्न

वीतराग ध्यान-साधना केन्द्र एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 8 से 15 सितम्बर तक वीतराग ध्यान-साधना शिविर आयोजित किया गया। शिविर में ध्यान-साधक श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा एवं श्री संजय जी अग्रवाल-जयपुर ने ध्यान-साधना करवाई। शिविर में 25 साधकों ने भाग लिया। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. का मार्गदर्शन एवं श्री मनीषमुनि जी म.सा. का सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिविर अवधि में जयपुर से श्री डी.आर. मेहता पधारे। शिविर शक्तिनगर के सामायिक-स्वाध्याय भवन में आयोजित हुआ। शिविर संयोजिका श्रीमती शान्ता जी मोदी की देखरेख एवं श्री कुशल जी बाफना की व्यवस्था में ध्यान शिविर सबके लिए उपयोगी रहा। साधकों ने शान्ति, एकाग्रता एवं शुद्धि का अनुभव किया।

चेन्नई में 23-25 सितम्बर तक 'अध्यात्म चेतना-आयाम' शिविर सम्पन्न

रत्नसंघीया व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., तपस्विनी महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 11 के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के तत्त्वावधान में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, चेन्नई के सहयोग से श्राविका मण्डल का 'अध्यात्म-चेतना आयाम' शिविर दिनाँक 23,24 व 25 सितम्बर, 2011 को सफलतापूर्वक सुसम्पन्न हुआ। प्रातः 9.00 से सांयकाल 4.00 बजे तक आस्था, रुचि, प्रतीति, श्रद्धा आदि कक्षाओं के विभाजन द्वारा विभिन्न विषयों व व्याख्यानों के माध्यम से ज्ञानार्जन हुआ। इस शिविर के अन्तर्गत जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर, चौथ का बरवाड़ा, गंगापुर, बैंगलोर आदि कई बाहर क्षेत्र की एवं चेन्नई क्षेत्र की लगभग 225 श्राविकाओं ने सम्मिलित होकर प्रयोगात्मक साधना का सुअवसर प्राप्त किया।

शिविर के अन्तर्गत गुण विकास साधनाविधि, अनुप्रेक्षा-विधि, प्रातः

सायंकालीन साधना-विधि, आगम आइना बनें जीवन, सम्यक्त्व, अदृश्यशक्ति-आत्मा, बलप्राण शक्ति का सदुपयोग आदि विषयों पर महासती श्री चारित्रलता जी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा., महासती श्री भावना श्री जी म.सा., महासती श्री संगीताश्री जी म.सा. का मार्गदर्शन मिला तथा अशोक जी कवाड़, श्री तरूण जी बोहरा एवं श्रीमती सीमा जी भंसाली ने भी कक्षाएँ लीं। प्रतिदिन प्रतियोगिता महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभा जी म.सा., महासती श्री निष्ठाप्रभा जी म.सा. के सहयोग से आयोजित की गई। दोपहर में संध्याजाप का कार्यक्रम नवदीक्षित महासतियाँ जी के द्वारा सुसम्पन्न कराया गया। श्री विनोद जी जैन ने सम्पूर्ण कार्यक्रम की व्यवस्था का कार्य संभाला। दोपहर प्रतिदिन 30 मिनट अनुमोदना सत्र रखा गया, जिसमें ज्ञानियों एवं त्यागियों के अनुमोदन के माध्यम से ऐसी प्रेरणा मिली कि अनेकानेक नये व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण किये गये। जिसके अन्तर्गत ब्रह्मचर्य का पालन, मर्यादित रूप से टी.वी का त्याग (23), रात्रि भोजन का त्याग (50), जमीकंद त्याग (16), कच्चापानी त्याग (13), पटाखों का त्याग (33) आदि प्रत्याख्यान हुए।

अंतिम दिवस 'मेरी समाधि-मेरे हाथ' कार्यक्रम में "बच्चे कहना नहीं मानते, क्या करें?" इस विषय पर चर्चा हुई। महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. द्वारा समाधान प्रदान किया गया। इस बार यह शिविर अधिक प्रयोगात्मक रूप से सुसम्पन्न हुआ। प्रथम दिन 'अहिंसा दिवस' के रूप (दिनभर खुले मुँह से बात नहीं करना), द्वितीय दिन 'प्रमादत्याग' दिवस के रूप में (समय का सदुपयोग) एवं तृतीय दिन 'जय जिनेन्द्र' दिवस के रूप में मनाया गया। शिविरार्थियों ने इस शिविर से अपने जीवन में शान्ति एवं विकास का मार्ग सीखा। संकल्प की दृढ़ता एवं आचरण की उत्कृष्टता के प्रति आत्मविश्वास जागा।

जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा जनवरी 2012 में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा छोटे-बड़े थोकड़ों के माध्यम से जैन तत्त्वज्ञान एवं आगम ज्ञान के प्रचार-प्रसार की महत्त्वपूर्ण योजना "जैनागम स्तोक वारिधि" के नाम से प्रारंभ की गई है। पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष में निम्नांकित 10 थोकड़े रखे गये हैं-

वर्ग अ- 1. 25 बोल, 2. 67 बोल, 3. सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण, 4. संज्ञा, 5. सवणे नाणे का थोकड़ा।

वर्ग ब- 1. कर्म प्रकृति, 2. गति-आगति, 3. चौदह गुणस्थानों का बासठिया, 4. रूपी-अरूपी, 5. उपयोग का थोकड़ा।

परीक्षा से सम्बन्धित प्रमुख जानकारी इस प्रकार है-

1. प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में दो प्रश्न-पत्र होंगे। वर्ग अ का एक प्रश्न-पत्र तथा वर्ग ब का एक प्रश्न-पत्र होगा। दोनों प्रश्न-पत्रों की परीक्षा **15 जनवरी-2012,** रविवार को इस प्रकार होगी- प्रथम प्रश्न-पत्र-प्रातः 10.00 से 12.00 बजे तक, द्वितीय प्रश्न-पत्र- दोपहर 1.30 से 3.30 तक। प्रथम वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक प्रश्न-पत्र में 50 प्रतिशत अंक प्राप्त होना आवश्यक है। दोनों प्रश्न-पत्र उत्तीर्ण होने पर ही द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम की परीक्षा में भाग ले सकते हैं। दोनों प्रश्न-पत्र एक साथ उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों मे से वरीयता सूची तैयार की जायेगी। यथासंभव दोनों प्रश्न-पत्रों की परीक्षा एक साथ दें। कदाचित् कोई एक साथ नहीं दे पायें तो एक-एक प्रश्न-पत्र भी उत्तीर्ण कर सकते हैं।
2. दोनों प्रश्न-पत्र उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कार निम्नानुसार शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रदान किये जायेंगे। वरीयता सूची में प्रथम स्थान- 4000/-, द्वितीय स्थान- 3000/-, तृतीय स्थान- 2000/-
   50 से 59.99 अंक तक - प्रमाणपत्र दिया जायेगा, पुरस्कार नहीं।
   60 से 85 अंक तक - 150/- का नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र।
   85 से अधिक अंक - 200/ का नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र।
3. प्रथम प्रश्न-पत्र की पाठ्यपुस्तक में 25 बोल के थोकड़े का विस्तार से विवेचन परीक्षार्थियों की ज्ञान वृद्धि हेतु दिया गया है। इसमें से परीक्षा में 25 बोलों के प्रश्नोत्तर तथा आधार-संदर्भ नहीं पूछे जायेंगे।
4. प्रश्न-पत्र का प्रस्तावित प्रारूप इस प्रकार होगा-

1. बहुविकल्पात्मक प्रश्न (अ,ब,स,द)-	10 अंक	10 प्रश्न
2. हाँ/नहीं के प्रश्न -	10 अंक	10 प्रश्न
3. जोड़ियाँ मिलान -	10 अंक	10 प्रश्न
4. मुझे पहिचानो -	20 अंक	10 प्रश्न
5. एक-दो पंक्ति में उत्तर दीजिए -	18 अंक	09 प्रश्न
6. तीन-चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए -	32 अंक	08 प्रश्न
	100 अंक	**57 प्रश्न**

5. 10 थोकड़ों का प्रस्तावित जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम प्रथम भाग पुस्तक में देखा जा सकता है।

6. शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा अब केवल जुलाई माह में ही आयोजित की जायेगी।
7. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र व पुस्तकें बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं। जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र जमा कराने की अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर, 2011 है।
8. आवेदन पत्र व पुस्तक प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें- **सुशीला बोहरा**, संयोजक-94141-33879, **धर्मचन्द जैन**, रजिस्ट्रार-93515-89694, **शिक्षण बोर्ड** कार्यालय-0291-2630490

जैनाचार्य जयमल जी पर डाक टिकिट जारी

भारत सरकार के डाक विभाग की ओर से जैनाचार्य जयमल जी म.सा. पर 5 रुपये का स्मारक डाक टिकिट 25 सितम्बर, 2011 को जारी किया गया।

संक्षिप्त-समाचार

न्यूयार्क- 'जैन सेन्टर ऑफ अमेरिका, न्यूयार्क' द्वारा आमंत्रित स्वाध्यायी सुश्राविका डॉ. श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन, चेन्नई, के प्रतिनिधित्व में पर्वाधिराज पर्व पर्युषण में श्रावक-श्राविकाओं ने बड़े मनोयोग से धर्माराधन किया। डॉ. जैन ने प्रवचन, कल्पसूत्र-वाचन, बारह व्रत, तत्त्व-ज्ञान चर्चा, प्रतिक्रमण आदि कार्यक्रम सुचारु रूप से संचालित किए।

आगोलाई- पर्युषण पर्व के अवसर पर श्रीमती प्रियंका चैनराज जी गोगड़ के सुपुत्र अक्षत व सुपुत्री मयूरी तथा श्रीमती मनीषा-लालचन्द जी गोगड़ की पुत्री दिव्या ने लघु वय में अट्ठाई तप की आराधना की।

इन्दौर- बहुश्रुत पं. युवाचार्य श्री मिश्रीमल जी म.सा. की अन्तेवासिनी काश्मीर प्रचारिका, प्रवचन-शिरोमणि उमरावकुंवर जी म.सा. 'अर्चना' का 90 वां जन्मोत्सव दान-शील-तप भाव के साथ हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में मनाया गया। इस अवसर पर श्री उमराव अर्चना डायलिसिस सेन्टर की स्थापना हेतु योजना निर्मित हुई।

बधाई/चुनाव

जोधपुर- राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति एवं धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न माननीय श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया को अभी हाल ही में झारखण्ड उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश

नियुक्त किया गया है। उन्होंने रांची में कार्यभार ग्रहण कर लिया है। हार्दिक बधाई।

जोधपुर- सुश्री कोमल भंसाली सुपुत्री श्रीमती कान्ता जी एवं श्री विरेन्द्र जी

भंसाली (सहमंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) ने Company Secretary परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की एवं सम्पूर्ण भारत में इक्कीसवां स्थान प्राप्त किया है। आपने पूर्व में भी C.S Inter की परीक्षा में पूरे भारत में 9 वां स्थान प्राप्त किया था। आपने C.A. परीक्षा मई, 2011 में उत्तीर्ण की एवं B.Com (Hons.) में स्वर्ण पदक भी अर्जित किया है।

जोधपुर- श्री सुशांत मेहता सुपुत्र श्रीमती मंजू जी एवं श्री विरेन्द्र जी मेहता एवं सुपौत्र स्व. श्री नरसिंहराज जी मेहता ने M.S. USA से उत्तीर्ण की तथा बैंक ऑफ अमेरिका (सारलेट USA) में वर्तमान में कार्यरत हैं।

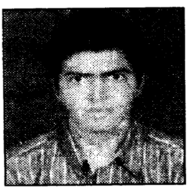

जोधपुर- श्री अजय पारख सुपौत्र सुश्रावक स्व. श्री चांदमल जी पारख एवं सुपुत्र श्री प्रेमचन्द जी पारख (मूल निवासी भोपालगढ़) ने मुम्बई से इंजीनियरिंग (कम्प्यूटर साइंस) में विशेष योग्यता (Distinction marks) के साथ उत्तीर्ण की तथा अमेरिकन M.N.C. कम्पनी Accenture, मुम्बई में कार्यरत हैं।

जयपुर- श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, जयपुर के दिनाँक 21 अगस्त, 2011 को सम्पन्न चुनावों में **अध्यक्ष** पद पर श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन-चौथ का बरवाड़ा, **उपाध्यक्ष-** श्री सतीश चन्द जी जैन-चौथ का बरवाड़ा, श्री निर्मल कुमार जी जैन, **मंत्री-** श्री सुधीर कुमार जी जैन, **कोषाध्यक्ष-** श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन-भेडोला, **सहमंत्री-** श्री विनोदकुमार जी जैन मनोनीत किए गए।

श्रद्धाञ्जलि

बालोतरा- सुश्रावक श्री फतेहचन्द जी छाजेड़ सुपुत्र श्री स्व. श्री रीखबचन्द जी

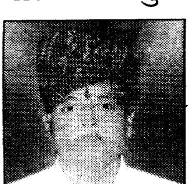

छाजेड़ का स्वर्गवास 27 सितम्बर, 2011 को 64 वर्ष की उम्र में दिल्ली में हो गया। आप नित्य सामायिक करते थे। रत्न संघ के प्रति आपका जीवन समर्पित था। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ कर गये हैं।

मदनगंज-किशनगढ़- तपसाधिका, व्रताराधिका सुश्राविका श्रीमती जतन देवी

धर्मपत्नी श्री जीवराज सिंह जी हींगड़ का 18 सितम्बर 2011 को व्रत प्रत्याख्यान के साथ निधन हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान श्राविका थीं। आपने अपने जीवनकाल में वर्षीतप, मासक्षपण, ग्यारह व अनेक अठाइयाँ कीं। आपने सजोड़े शीलव्रत के प्रत्याख्यान भी कर रखे थे। आप कम से कम पाँच सामायिक नियमित करती थीं।

जोधपुर- धर्माराधिका श्रीमती सरोज भण्डारी धर्मपत्नी श्री चैनरूपचन्द जी भण्डारी का 28 सितम्बर, 2011 को युवावय में अकस्मात् देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्राविका थीं। आप विविध धार्मिक परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानार्जन के साथ निरन्तर साधना-आराधना में संलग्न रहती थीं। आप प्रतिदिन सामायिक स्वाध्याय की आराधना करती थी। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री मुन्नालाल जी भण्डारी की आप पुत्रवधू थीं।

समदड़ी- शांत स्वभावी सुश्राविका श्रीमती काजूदेवी धर्मपत्नी श्री प्रकाशकरण जी संचेती का स्वर्गवास 30 जुलाई 2011 को 42 वर्ष की वय में बैंगलोर में हो गया। आपके पिताजी श्री जेठमल जी श्रीश्रीमाल (कानाना) रत्नसंघ के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आचार्य श्री और उपाध्यायश्री के कानाना प्रवास में आप पूर्ण सेवारत रहे।

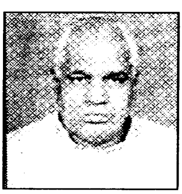

विजयापुरा- सरलमना, धर्मनिष्ठ एवं कर्मठ सुश्रावक श्री हंसराज जी कांकरिया का 5 अगस्त, 2011 को देहावसान हो गया। रत्नसंघ के सुप्रतिष्ठित गुरुभक्त श्री गणेशमल जी भण्डारी,बैंगलोर के आप साला जी थे। श्री कांकरिया जी के मरणोपरान्त नेत्रदान किए गए।

अहमदाबाद- वीरमाता श्रीमती चम्पादेवी जी चौपड़ा धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी चौपड़ा का 3 सितम्बर 2011 को 77 वर्ष की वय में मरण हो गया। आपकी आचार्य एवं उपाध्याय श्री के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आपकी दो पुत्रियाँ महासती सुमित्रा श्री जी एवं लक्षिता श्री जी के रूप में जिनशासन की सेवा कर रही हैं।

मैसूर- त्यागनिष्ठ, धर्मानुरागी सुश्राविका श्रीमती सुशीलाबाई जी सुराना धर्मपत्नी स्व. श्री सुदर्शनमल जी सुराना का 30 अगस्त, 2011 को देवलोक-गमन हो गया। आप सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में सदैव सहयोग करती थीं तथा नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती थीं। उन्होंने अपने जीवन में रात्रि भोजन त्याग, द्रव्यों की मर्यादा, पर्व तिथियों पर हरी सब्जी एवं जमीकन्द का त्याग आदि प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। रत्नसंघ के प्रति उनकी एवं सुराना परिवार की समर्पित सेवाएँ अनुकरणीय हैं।

काकेलाव- संघ-सेवी, वीरमाता श्रीमती तीजाकंवरजी धर्मपत्नी श्री रामबक्स

सिंह जी राजपुरोहित का 8 सितम्बर, 2011 को देहावसान हो गया। संघ-समर्पित, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त तीजाकंवरजी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा व भक्ति थी। आपके पुत्र श्री शुभेन्द्रमुनि जी म.सा. ने जिनशासन एवं रत्नसंघ की खूब जाहोजलाली की। कुछ दिन पूर्व ही पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. अपनी शिष्यमण्डली सहित आपकी भक्ति भावना को देखते हुए काकेलाव पधारे तब आपने एवं आपके परिवार ने गुरु सेवा के साथ आतिथ्य सेवा का भी लाभ लिया।

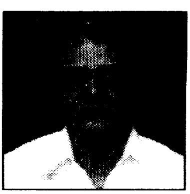

उदयपुर- स्वाध्यायी श्री गौतमचन्द जी सिंघवी सुपुत्र श्री उम्मेदचन्द जी सिंघवी का 19 अगस्त 2011 को निधन हो गया। आप संत-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपश्री जैन स्थानक हिरणमगरी के उपाध्यक्ष रह चुके हैं।

हिण्डौन सिटी- श्रीमती जैनमति धर्मपत्नी स्व. श्री लखमीचन्द जी जैन (निवासी फाजिलाबाद) का 3 अगस्त, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन तीन सामायिक एवं सुबह-शाम प्रार्थना करती थीं। आप आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा एवं उपाध्याय मान के प्रति श्रद्धाशील थीं।

कारंजा- दृढ़धर्मी, तपस्वीसाधिका श्रीमती प्रमिलाबाई बोरा धर्मपत्नी श्री उत्तमचंद बोरा का 7 जुलाई, 2011 को 68 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपने अपने जीवनकाल में मासखमण, ग्यारह, नौ, अठाई, बेले, तेले, आयंबिल

ओली, वर्धमान तप आदि कई तपश्चर्याएँ कीं। आप नियमित सामायिक एवं पौरसी करती थीं। पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का आपने स्थानक- निर्माण, अन्नदान, परोपकार, दीन-दुःखियों तथा सामाजिक अनुष्ठानों में मुक्तहस्त से सदुपयोग किया।

बैंगलोर- कर्मठ कार्यकर्ता, गुरुभक्त सुश्रावक श्री अशोक कुमार जी बागमार (कासाणा वाले) पुत्र श्री स्व. माणकचन्द जी बागमार का 46 वर्ष की वय में 28 जुलाई, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कर्मठ कार्यकर्ता थे तथा जैन युवा संगठन में भी सक्रिय थे।

बारडोली (सूरत)- सरलहृदयी, मृदुभाषी सुश्रावक श्री हेमराज जी सुपुत्र श्री

हीरालाल जी कुकड़ा का 25 अगस्त, 2011 को 50 वर्ष की वय में असामयिक देवलोकगमन हो गया। प्रातः श्रद्धेय श्री सिद्धार्थमुनिजी म.सा. ने संलेखना संथारा ग्रहण करवाया। 24 अगस्त 2011 से ही नवकार मंत्र का अखण्ड जाप एवं प्रार्थनाएँ प्रारम्भ की गईं, जिससे वातवारण धर्ममय बन गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति के श्रावक थे।

जोधपुर- संघ-सेवी, सुश्राविका श्रीमती बिदामकंवर जी मूथा धर्मपत्नी स्व. श्री

सुगनचन्द जी मूथा (गोटन हाल मुकाम जोधपुर) का 28 सितम्बर, 2011 को देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्राविका थीं। अपने माता-पिता द्वारा प्राप्त सुसंस्कारों के कारण त्यागी-वैरागी संत-सतियों के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप सदैव गुरुभगवन्तों के चरणों में उपस्थित होकर उनसे त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर साधनामय जीवन जीने में अग्रणी थीं। उनका जीवन धार्मिक संस्कारों से युक्त था। पारिवारिकजनों की सेवा करने के साथ अपनी स्वयं की साधना में वे जागरूक थीं। वे प्रतिदिन सामायिक स्वाध्याय की आराधना करती थीं। आप रत्न संघ के वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं सुश्रावक श्री अनराज जी बोथरा की बहिन थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- साहित्य की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

732 Jitendra Kumar ji Kankaria, Nijhar, Tapi. (Gujrat)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

13184 श्री प्रवीण जी धारीवाल, केशव नगर, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
13185 Shri Dinesh ji Kothari, Bodakdev, Ahmedabad (Gujrat)
13186 श्री जयप्रकाश जी कोटड़िया, तिलक रोड़, नन्दुरबार (महाराष्ट्र)
13187 श्री भूरालाल जी कोठारी, विश्वेश्वर विस्तार नगर, जयपुर (राजस्थान)
13188 श्री शांतिलाल जी सोनी, बरकतनगर, टोंक फाटक, जयपुर (राजस्थान)
13189 श्री सुशील जी भण्डारी, 12/18, मालविया नगर, जयपुर (राजस्थान)
13190 श्री रविजी जैन,पावटा सी रोड़,आयकर भवन के सामने,जोधपुर (राज.)
13191 श्रीमती सुनीताजी बरड़िया,सरदारपुरा,प्रथम सी रोड़, जोधपुर (राज.)
13192 श्री विवेक जी बाफणा, ईमरतिया बेरा के पास, जोधपुर (राजस्थान)
13193 Shri Amrit Lal ji Lunked, Koppal (Karnataka)
13194 श्री मयंककुमार जी रायसोनी, रामाधीन मार्ग गली, राजनाँदगाँव (छ.ग)
13195 Smt. Aruna ji Jain, Kurushetra Sultanpur, Lodhi (Punjab)
13196 श्री मुकेश कुमार जी गोखरू, गोखरू सदन, दूनी,जिला–टोंक (राज.)
13197 Shri Yash Kumar ji Bhandhari, Surat (Gujarat)
13198 Shri Ankit ji Jain, Kandiwali (East), Mumbai (M.H.)
13199 श्री अजीत जी छाजेड़, वर्धमान मेडिकल, नायडोंगरी, नाशिक (महा.)
13200 श्री सचिन् जी बोरा, रविन्द्र क्लॉथ सेन्टर, नायडोंगरी, नाशिक (महा.)
13201 श्री मनोज जी मुथा, मनोज किराणा, नायडोंगरी, नाशिक (महाराष्ट्र)
13202 श्री धर्मेन्द्र जी रूपडा, महावीर उपहार गृह, नायडोंगरी, नाशिक (महा.)
13203 श्री माँगीलाल जी दुगड, जैन मन्दिर के पास, नायडोंगरी, नाशिक (महा.)
13204 Shri Gautam Chand ji Bhandari, Bangaluru (Karnataka)
13205 Shri Ambika Prasad ji Bhoot, Block A, Kolkatta (W.B.)
13206 Shri Kanwar Lal ji Vinaykiya, Chennai (Tamilnadu)
13207 श्री चन्द्रप्रकाशजी मेहता,अरिहन्त टैक्सटाईल मार्केट,रिंग रोड़,सूरत (गुज.)
13208 Smt. Pooja ji Singhvi, Borivali (West), Mumbai (M.H.)
13209 श्री नरपतराज जी चौपड़ा, पद्मावती नगर, जालमविलास, जोधपुर (राज.)
13210 श्री सुमेर जी संचेती, शास्त्री नगर, लाचु कॉलेज के पास, जोधपुर (राज.)
13211 श्री मोतीचन्दजी जैन,राजपूत सभा भवन के सामने, पावटा बी-रोड़, जोधपुर
13212 श्री राकेश जी जैन, दिलीपनगर, लाल सागर, जोधपुर (राजस्थान)
13213 श्री धर्मीचन्द जी जैन, झड़वासा, जिला–अजमेर (राजस्थान)
13214 श्री सिद्ध कुमार जी रांका, पावटा सी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)

13215 श्री सुमेरचन्द जी लुणावत, इण्डियन गैस गोदाम के पास, जोधपुर (राज.)
13216 श्रीमती अनिता जी धारीवाल, तीसरी पोल मेन रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
13217 श्री दिलीप कुमार जी रांका, शक्ति नगर, पावटा सी रोड़, जोधपुर (राज.)
13218 Shri Shrenik ji Mehta, Maninagar, Ahemdabad (Gujarat)
13219 श्री रविजी मेहता, सैण्ट्रल स्कूल, एयरफोर्स नं. 1 के सामने, जोधपुर (राज.)
13220 श्री सुनील जी खाबिया, अजमेर रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13221 श्रीमती मंगला जी वेदमुथा, वाघली, चालीसगाँव, जिला–जलगाँव (महा.)
13222 सौ.कां. सुजाता जी पारख, अक्षयधन, वाघली, जिला–जलगाँव (महाराष्ट्र)
13223 श्री छगनभाई जी प्रजापति, नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुजरात)
13224 श्री राजूप्रसाद जी चक्रवर्ती, चांगोटोला, नगरवाड़ा, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
13225 Shri Veerendra Raj ji Bhandari, Chennai (Tamilnadu)
13226 Shri Padam Chand ji Betala, Chennai (Tamilnadu)
13227 Shri Gautam ji Khariwal, Chennai (Tamilnadu)
13228 श्री विजय कुमार जी बोहरा, छप्रू चौक, नागपुर (महाराष्ट्र)
13229 श्री सुरेशचन्दजी पगारिया,मेन रोड़,स्टेट बैंक के पास, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
13230 श्री अरूणकुमार जी मेहता, सी-96, सुभाष मार्ग,सी-स्कीम, जयपुर (राज.)
13231 Shri Rajendra Kumar ji Bohra, Chennai (Tamilnadu)
13232 Shri Jitesh ji Sri Srimal, Chennai (Tamilnadu)
13233 Shri Saurabh ji Mehta, Bangalore (Tamilnadu)
13234 Shri Ashok ji Mehta, Jodhpur (Rajasthan)
13235 Smt. Sajjan Bai ji, T.Nagar, Chennai (Tamilnadu)
13236 Shri Ramendra ji Bhandari, Bangalore (Karnataka)
13237 Shri J. Bhoormal ji Karnawat, Chennai (Tamilnadu)
13238 श्री आशीष जी चोरड़िया, प्रताप मार्केट के पास, गाँधी पथ, जयपुर (राज.)
13239 श्री राजकुमार जी नाहर, घारपुरेघाट, अशोक स्तम्भ, नाशिक (महाराष्ट्र)
12340 श्री अशोकचन्द जी कोठारी, रंगनादन नगर, सेल्यूर, चेन्नई (तमिलनाडु)
13241 श्री दिलीप जी भटेवरा, भगवा चौक, धुलिया (महाराष्ट्र)
13242 श्री विजय कुमार जी साण्ड, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
13243 श्री सुरेन्द्रकुमार जी जैन, पेट्रोल पम्प के पास, बजरिया,सवाईमाधोपुर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11111/- श्रीमती उगमकँवर जी श्रीमाल, श्री श्रेयांस जी लुणावत-मेहता, जोधपुर, सप्रेम भेंट।

5000/- श्री विजयराज जी, जवाहरलाल जी, आनन्द कुमार जी, गौतमचन्द जी, वर्धमान जी बाघमार, बैंगलोर, पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन सान्निध्य में जोधपुर में आठ दिवस पर्युषण पर्वाधिराज पर परिवार सहित दर्शन, वन्दन एवं पर्युषण मनाये जाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

3100/- श्रीमती प्रियंका जी गोगड़, हुबली, घर के नन्हे-मुन्ने बालक-बालिकाओं द्वारा पर्युषण पर्व पर अल्पायु में अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

3001/- श्री राजेन्द्र कुमार जी, सन्तोष जी लुणावत, सतारा, जिनवाणी के प्रचार-प्रसार हेतु सप्रेम भेंट।

2501/- श्री प्रदीप कुमार जी, राजेन्द्र कुमार जी चोरड़िया, बेंगलुरू, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में।

2500/- श्री मोहनलाल जी, पारसमल जी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में ।

2121/- श्री जौहरीमल, शैलेषकुमार, बंसतकुमार जी डोसी, जोधपुर, आचार्यप्रवर एवं साध्वीप्रमुखा के जोधपुर चातुर्मास तथा श्रीमती मोहनकंवर जी धर्मपत्नी श्री जौहरीमल जी के छः की तपस्या, श्रीमती मंजू जी धर्मपत्नी श्री शैलेष जी डोसी के अठाई की तपस्या, श्रीमती शशी जी धर्मपत्नी श्री बंसत जी डोसी के नौ की तपस्या एवं सुश्री प्रिया सुपुत्री श्री शैलेष जी डोसी के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री बाबूलाल जी, तपस्वीलाल जी जैन कौसाणा वाले हाल मुकाम जबलपुर, आचार्यप्रवर, साध्वीप्रमुखा आदि संत-सतीदर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री जैन श्वेताम्बर युवक संघ, चाकसू-जयपुर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में जिनवाणी के प्रचार-प्रसार हेतु सप्रेम भेंट।

2100/- शाह सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराजी, राजेन्द्र कुमार जी बाघमार, मैसूर, संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री अंशोक कुमार जी सुराणा, दिल्ली, श्री अनुज जी सुराणा (इंजीनियर), सुपुत्र श्री अशोक जी-सोहिनी जी, सुपौत्र स्व. श्री सूरतराज जी सुराणा (जोधपुर वाले) के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री धर्मचन्द जी, कमलकुमार जी, संजयकुमार जी मेहता, दुदु-जयपुर, जिनवाणी में सहयोग हेतु।

2100/- श्री रणजीतकरण जी संचेती,इचलकंरजी के द्वारा भेंट।

2100/- श्री पदमचन्द जी, अमित जी, आशीष जी मेहता, बैंगलोर हाल मुकाम जोधपुर, अपने पुत्र अमित मेहता के अठाई के उपलक्ष्य में भेंट।

1500/- श्री राजेश कुमार जी, विमलचन्द जी, पवन कुमार जी बोहरा, चेन्नई (श्रद्धेय श्री दर्शनमुनि जी म.सा. एवं महासती श्री सुभद्रा जी म.सा. के सांसारिक वीरपुत्र) पर्वाधिराज पर्युषणपर्व परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के पावन सानिध्य में विमलचन्द जी राजकँवर जी बोहरा द्वारा नागौर में मनाये जाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1500/- श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शान्तिनगर-बेंगलोर सप्रेम भेंट।

1101/- श्री दानमल जी जैन, जयपुर, सुपुत्र डॉ. दीपक जी जैन द्वारा एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज से डी.एम. न्यूरोलोजी परीक्षा उत्तीर्ण कर संतोकबा दुर्लभ जी मेमोरियल हॉस्पिटल में न्यूरोलोजिस्ट के पद पर नियुक्त होने की खुशी में भेंट।

1101/- श्री भागचन्द जी जैन सुपुत्र श्री रामदयाल जी जैन (फाजिलाबाद वाले) गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर, प्रिय विकास जी जैन का दिनांक 25 जुलाई 2011 को अल्पायु में देवलोकगमन होने जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- शाह सुभाषचन्द जी, अशोक कुमार जी धोका, मैसूर, संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती उगमकंवर धर्मपत्नी श्री रतनलाल जी बोथरा, श्री अन्नराज जी बोथरा एवं बोथरा परिवार, जोधपुर, श्रीमती बिदामकंवर जी मुथा धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचन्द जी मुथा गोटन वालों की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री किस्तूरचन्द जी, इन्दरचन्द जी सिंघवी, जोधपुर, श्री राजेन्द्रचन्द जी सिंघवी के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री विनयचन्द जी सेठ, जयपुर, अपनी दोहित्री सुश्री पलक जी खिंवसरा सुपुत्री श्रीमती विनीता जी निर्मल जी खिंवसरा, मुम्बई के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री भीकमचन्द जी, उत्तमचन्द जी बोरा, कारंजा लाड-वाशिम, सुश्राविका सौ. प्रमिलाबाई जी धर्मसहायिका श्री उत्तमचन्द जी बोरा का दिनांक 07 जुलाई 2011 को 68 वर्ष की आयु में देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- शाह शान्तिलाल जी, राजेश कुमार जी, महावीरचन्द जी खाबिया, मैसूर, श्री शान्तिलाल जी के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री दलपतराज जी, अरविन्द कुमार जी, अभिषेक कुमार जी सिंघवी, मैसूर, संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री देवेन्द्र कुमार जी, योगेन्द्र कुमार जी, उमेन्द्र कुमार जी जैन (फाजिलाबाद वाले) हिण्डौनसिटी-करौली, माताश्री श्रीमती जैनमति जी धर्मपत्नी स्व. श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन का दिनांक 04 अगस्त 2011 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती सकुनदेवी जी, मदनलाल जी बाघमार, जबलपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में एवं सवाईमाधोपुर, जयपुर, पिपाड़सिटी, भोपालगढ़ में विराजित सतीमंडल के दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र जी बाघमार (कोसाणा वाले), मैसूर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री संदीप जी, ध्रुव जी धारीवाल, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी एवं दादाजी स्व. श्री नरेन्द्रराज जी धारीवाल की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री शान्तिलाल जी, राजेश कुमार जी, महावीरचन्द जी खाबिया, मैसूर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री माणकलाल जी, ललितकुमार जी चौपड़ा, बालोतरा, अपनी दोहित्रियों सुश्री श्वेता एवं सुश्री दीपिका के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री महेन्द्रकुमार जी, राजकंवर जी डाँगी, मदनगंज-किशनगढ़, अपने सुपुत्र पवन कुमार के पाँच उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री जीवराज सिंह जी, कमलसिंह जी हींगड, मदनगंज-किशनगढ़, सुश्राविका श्रीमती जतनदेवी जी धर्मपत्नी श्री जीवराज जी हींगड का दिनांक 18 सितम्बर 2011 को आकस्मिक निधन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री राजाबाबू सा चौपड़ा, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती ललिता जी चौपड़ा के 31 उपवास के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री रूपकुमार, मोहनराज, मदनराज, धर्मेशकुमार जी चौपड़ा कवास वाले, पाली, चिरंजीव प्रमोद सुपुत्र मोहनराज एवं श्रीमती सरोज धर्मपत्नी श्री प्रमोद की अठाई तप के उपलक्ष्य में भेंट।

1011/- श्री कुशलदास जी, सोहनराज जी कटारिया, पीपाड़ वाले हाल मुकाम भोपाल, आचार्यप्रवर, साध्वी प्रमुखा आदि संत-सतीदर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्री राजेन्द्रकुमार जी जैन, जोधपुर, आचार्य श्री के चातुर्मास के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्रीमती वन्दना धर्मपत्नी श्री सुभाष जी भण्डारी, जोधपुर, अपने पुत्र श्री प्रतीक भण्डारी के एम.बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर इग्लैण्ड में बैंक में नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्री पुखराज जी, भागचन्द जी पारख, जलगाँव, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर में एवं उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में पर्युषण पर्व के आठ दिवस सानन्द मनाये जाने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री प्रकाशचन्द जी, शान्तिलाल जी, महावीर जी लोढ़ा, नाडसर, पूज्य आचार्य भगवन्त के पावटा-जोधपुर में सपरिवार दर्शन-वन्दन की खुशी में तथा श्री प्रकाशचन्द जी की सुपुत्री श्रीमती सुनीता जी धर्मपत्नी श्री पंकज जी कटारिया, निवासी बिलाडा के नौ की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

551/- श्रीमती पदमा महीपाल जी मेहता, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री भव्या मेहता के 4 उपवास के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री उम्मेदमल जी, इन्दरमल जी जैन (चौथ का बरवाडा वाले) मानसरोवर-जयपुर, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर में, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में दर्शन, वन्दन का लाभ होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री प्रकाशचन्द जी, किस्तूरचन्द जी मेहता एवं पारिवारिकजन, उम्बरगाँव रोड-गुजरात, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर में पर्युषण पर्व के आठ दिवस सानन्द मनाये जाने की खुशी में।

501/- श्री शान्तिलाल जी, मेघराज जी जैन, चौरू वाले, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में तथा श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. के 10 दिवसीय तपस्या की आराधना सुख-साता पूर्व सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री गिर्राज जी, प्रवीण कुमार जी पंचोली, कुण्डेरा-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री रामप्रताप जी पंचोली (भूतपूर्व सरपंच) की दिनांक 1 सितम्बर 2011 को प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री अशोक कुमार जी जैन सुपुत्र श्री रामदयाल जी जैन (फाजिलाबाद वाले), गंगापुरसिटी-सवाईमाधोपुर सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती शकुन्तलादेवी जी, सतीश कुमार जी, विजयप्रकाश जी जैन, मानसरोवर-जयपुर, पूज्य श्री कस्तूरचन्द जी जैन (खोह वाले) की द्वितीय पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री नेमीचन्दजी नाहर, जयपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री कुन्दनमलजी नाहर की 25 वीं पुण्यतिथि (आसोज बदी दूज) दिनांक 20 सितम्बर 2011 के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री धर्मचन्द जी, छीतरमल जी जैन (चौरू वाले), कोटा, चि. सौरभ जी सुपुत्र श्री धर्मचन्द जी का शुभ विवाह सौ.कां. अर्पिता जी सुपुत्री श्री प्रेमचन्द जी जैन (गाडोली वाले), मुम्बई के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री अरुणकुमार जी, दशरथमल जी भंडारी, अहमदाबाद, 33 उपवास के उलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री हीरालाल जी जैन, भरतपुर, अपने पौत्र के जन्मोपलक्ष्य पर भेंट।

500/- श्री उनियारा श्री संघ, उनियारा, सप्रेम भेंट।

500/- श्री नाथूलाल जी सुराणा, दरीबा-राजसमन्द, सप्रेम भेंट।

500/- श्री एस. मोहनलाल जी मूथा (जैन), बेंगलोर, सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रेमसुख जी सुराणा, अजमेर, पूज्य श्री सौभागमल जी कर्णावट का स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्रीमती इन्द्रा जी, नरेश कुमार जी कोठारी, दूदू, सुपुत्री सुश्री प्रियंका जी का शुभ विवाह दिनांक 24 जून 2011 को चि. पंकज जी बरड़िया के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री सतीशचन्द जी, अनन्त कुमार जी जैन, भरतपुर, नवदीक्षित महासती श्री विजयाश्री जी म.सा. के सांसारिक ताऊजी एवं ताईजी द्वारा महासती श्री सौभाग्यवती म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- शाह प्रकाशचन्द जी, सुभाषचन्द जी बाघमार, मैसूर, संवत्सरी महापर्व के

उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- शाह मोतीलाल जी, दिनेश कुमार जी दरला, मैसूर, श्रीमती संगीता जी धर्मपत्नी श्री दिनेश जी दरड़ा के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- शाह सुरेश कुमार जी खिंवसरा, मैसूर, श्री सिद्धार्थ जी सुपुत्र श्री सुरेश जी, सुपौत्र श्री देवीचन्द जी खिंवसरा के आठ की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- शाह पारसमल जी, महावीरचन्द जी धोका, मैसूर, संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- शाह आनन्दराज जी, सुनील कुमार जी पटवा भंसाली, मैसूर, संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री सरदारसिंह जी, सुरेन्द्र कुमार जी नाहर, दूदू, श्रीमती सूरजकँवर जी धर्मसहायिका श्री सरदारसिंह जी नाहर की पुण्य तिथि पर नागौर में विराजित उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दर्शन-वन्दन हेतु संघ ले जाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री विजय कुमार जी, श्रीमती प्रमिला जी, सुश्री दीक्षा जी जैन, जयपुर, सुश्री रक्षा जी जैन द्वारा प्रथम उपवास करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती रेखा जी, निर्मल कुमार जी जैन, हिण्डौनसिटी-करौली, सुपुत्री माला जी द्वारा पूज्य महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई चातुर्मास में पर्युषण पर्व पर प्रथम बार अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री विमल कुमार जी जैन, उनियारा, अपने सुपौत्र चि. प्रणीत जी सुपुत्र श्री ऋषभ कुमार जी जैन का जन्मोत्सव दिनांक 4 अगस्त 2011 को मनाये जाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री रिखंबचन्द जी, उदयराज जी, संदीप जी धोका, मैसूर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावटा-जोधपुर, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नागौर में दर्शन, वन्दन करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री भूरमल जी कर्णावट, चूले-चेन्नई, सुपुत्री सौ.कां. भावना का शुभ विवाह दिनांक 09 जून 2011 को चि. हेमन्त कुमार जी सुपुत्र श्री महावीरचन्द जी जैन (बम्ब), आवडी-चेन्नई के साथ सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री दीपक जी मेहता, सुनील जी मेहता, जोधपुर, स्व. श्री शान्तिमल जी मेहता की पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री पारसमल जी जैन, मण्डली, आचार्यश्री, उपाध्यायश्री के दर्शन-वंदन के उपलक्ष्य में भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

100000/- श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली, मुक्ति का राही प्रतियोगिता हेतु।

43000/- श्रीमती जयविजयाजी मेहता एवं परिवार-चेन्नई, शिक्षा-दीक्षा, स्वधर्मी

वात्सल्य, जीवदया हेतु।

20000/- श्रीमती चन्द्रकलाजी पत्नी श्री पवनलालजी नागसेठिया-होलनांथा,जिला-धुलिया,(महा.), शिक्षा-दीक्षा हेतु।

12000/- श्रीमती कमलाबाईजी बम्ब-निमाज वाले, बैंगलोर, छात्रवृत्ति सहायता।

12000/- श्री अनुरागजी मेहता-जोधपुर, छात्रवृत्ति हेतु।

12000/- श्रीमती सुशीलाजी सोहनलालजी पितलिया-रतलाम, छात्रवृत्ति हेतु।

12000/- श्री वैभवजी लोढ़ा-जोधपुर, छात्रवृत्ति हेतु।

12000/- श्री हरकचन्दजी मेहता एवं परिवार-जोधपुर, छात्रवृत्ति हेतु।

11000/- श्री मुकेशकुमारजी शांतिलालजी पींचा-जोधपुर, शिक्षा-दीक्षा हेतु।

11000/- श्री विजयराजजी आनन्दकुमारजी बाघमार-बैंगलोर (कर्नाटक), जीवदया हेतु।

10000/- श्री मोतीचन्दजी जैन-जोधपुर, शिक्षा-दीक्षा हेतु।

5001/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-धुलिया (महा.), संघ सहायतार्थ।

5000/- श्री सोहनलालजी पितलिया-रतलाम, संघ सहायतार्थ।

3100/- श्री प्यारचन्दजी रांका-सैलाना, जिला-रतलाम(मध्यप्रदेश),परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन के उपलक्ष्य में संघ सहायतार्थ।

3000/- श्री हुकमचन्दजी मोतीलालजी नागसेठिया-होलनांथा, जिला-धुलिया (महा.), परम श्रद्धेय आचार्यश्री-परम श्रद्धेय उपाध्यायश्री आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन के उपलक्ष में संघ सहायतार्थ।

2100/- श्री मोहनलालाजी पारसमलजी बोहरा-तिरूवन्नमलाई,(तमिलनाडु) जीवदया हेतु।

2100/- श्रीमती सिनगारबाईजी लोढ़ा-जोधपुर, शिक्षा-दीक्षा हेतु।

2000/- सौ. शोभाजी स्वरूपचन्दजी मेहता-मुम्बई, जीवदया हेतु।

2000/- श्री नैलेशजी स्वरूपचन्दजी मेहता-मुम्बई, जीवदया हेतु।

2000/- श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन-जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी किस्तूरचन्दजी मेहता-उम्बरगांव रोड़ (गुज.), जीवदया हेतु

1000/- श्रीमती नगीनादेवी पत्नी श्री किशनचन्दजी -दिल्ली, संघ सहायतार्थ।

1000/- सौ. रेखाबाईजी अशोककुमारजी बोरा-निफाड़, जिला-औरंगाबाद (महा.), परम श्रद्धेय आचार्यश्री-परम श्रद्धेय उपाध्यायश्री आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन के उपलक्ष में संघ सहायतार्थ।

501/- सौ. शोभाजी मदनलालजी बोकड़िया-ब्यावर वाले, उम्बरगांव (गुज.), जीवदया हेतु।

500/- श्री सुरेशजी मरलेचा-तिरूतन्नई (तमिलनाडु), जीवदया हेतु।

500/- श्री निर्मलकुमारजी मनोहरलालजी बम्ब-निमाज,जिला-पाली(राज.),जीव दया हेतु।

500/- श्रीमती शैलाजी सुशीलजी लुंकड़-जलगांव (महा.), शिक्षा-दीक्षा हेतु।

500/- श्रीमती दीनाजी संजयजी गाला-कच्छ (गुज.), शिक्षा-दीक्षा हेतु।

500/- श्री राजेशजी सुरेशजी रांका-चेन्नई, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

21000/-	श्री कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर, साहित्य अनुदान हेतु भेंट।
1111/-	श्री हरकचंद जी लुंकड़, वाकोद, पयुर्षण सहायता।
1000/-	श्रीमती वन्दना धर्मपत्नी श्री सुभाष जी भण्डारी, जोधपुर, अपने पुत्र श्री प्रतीक भण्डारी के एम.बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर इंग्लैण्ड में बैंक में नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में भेंट।
500/-	श्री विनोद जी सूर्या, चलथान, पयुर्षण सहायता।
500/-	श्री विजयराज जी चौधरी, चलथान, पयुर्षण सहायता।
366/-	श्री अशोक जी वानगोला, वालुज, पयुर्षण सहायता।

पयुर्षण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
10000	कोलकाता	7100	कानपुर	4101	विदिशा
3101	चलथान	3100	पीह	3100	जोबनेर
3100	दोपोली	2500	लखनऊ	2101	सतारा
2100	केलशी	2100	जबलपुर	2100	खेड़
2100	अलीगढ़(टोंक)	2100	बाड़मेर	1501	नसीराबाद
1500	अजड़	1500	चालीसगांव	1500	मण्डनगढ़
1100	महारानी फार्म,	1100	खलना	1100	कासमपुरा
801	वरखेड़ी	700	बेटावाद	500	कालुखेड़ा
500	जुणदा-राजसमंद	500	भराड़ी	500	सुरपुर
250	सुमेरगंज मंडी				

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को प्राप्त पयुर्षण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
2501	बुहारी	1521	बजरिया	1501	सिद्धिगंज मगरदा
1100	आकोदियामण्डी	1100	देई		

महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ को प्राप्त पयुर्षण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
7100	नरड़ाणा	5100	जामनेर	5000	डोम्बिवली
3001	वाकोद	3000	भंडारा	2500	अंबोजगाई
2100	सिल्लोड़	2100	चांगोटोला	2100	कामठी
1500	बडवानी	1500	आलेगांव	1111	वालुज
1111	तोंडापुर	1111	चिंचाला	1100	नायडोगरी
1100	सौंदाणा	1100	मुक्ताईनगर	1100	मुक्ताईनगर
1100	मेहकर	1100	दुसरबीढ़	1100	विटनेर
1100	कजगांव	1001	इच्छापुर	1001	बोरकुंड

801	चांदुर रेलवे	700	मांगलादेवी	501	वरणगांव
501	शेलवड़	500	लोहारा	500	कासारे
500	लासुर	500	जायखेड़ा	500	भराड़ी
500	पिलखोड़	200	पिलखोड़		

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्त

11000/- श्री लाभचन्दजी, राजीव जी नाहर, सूरत (गुजरात)

11000/- श्रीमती शान्ता जी मोदी- जयपुर (राजस्थान)

11000/- श्रीमती पूजा जी जैन सोमानी-कोलकात्ता (पश्चिम बंगाल)

11000/- श्री सोहनलालजी, महावीरचन्दजी, अनिलजी, अर्पितजी, मंथनजी बोथरा- भोपालगढ़ (राजस्थान)

11000/- श्री किरोड़ीमल उमरावमल सुराणा ट्रस्ट-चेन्नई (तमिलनाडू)

11000/- श्रीमती मंजू प्रसन्न जी भण्डारी-बैंगलोर (कर्नाटक)

11000/- श्रीमती बसन्ता दिनेश जी सुराणा-चेन्नई (तमिलनाडू)

1100/- श्रीमती किरणजी, नवनीत कुमार जी जैन-होशियारपुर (पंजाब)

1100/- श्री संजय जी हरकचन्द जी बोरा-धुले (महाराष्ट्र)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को साभार प्राप्त

1100/- श्रीमती किरण जी धर्मपत्नी श्री नवनीत जी जैन, होशियारपुर (पंजाब) , अपने बच्चों के (श्री खेमन एवं दीपिका जैन) के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

48000/- श्री उगमराज जी सुरेन्द्र जी मेहता, मुम्बई (महा.)

24000/- श्री सोहनराज जी भूरी बाई धार्मिक पारमार्थिक लोक न्यास, पाली, महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के अडयार आगमन पर भेंट।

24000/- श्री पी.बी. भण्डारी, जयपुर (राज.)

24000/- श्री उमरावमल जी सुराना, चेन्नई (तमि.)

12000/- श्री सागरमल जी महावीरजी, राजेश जी छाजेड़, चेन्नई (तमि.)

12000/- श्री अजीतराज जी पदमचन्द जी सिंघवी, पनरुटि (तमि.)

12000/- श्री किशोर कुमार जी जैन, चेन्नई (तमि.)।

12000/- श्री लालचन्द जी चौधरी, मुम्बई (महा.)

12000/- श्री विजयराज जी कोठारी, जोधपुर (राज.)

12000/- श्रीमती पुष्पा जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री ए.आर. लोढ़ा, जोधपुर (राज.)

12000/- श्रीमती विजया जी मेहता, चेन्नई (तमि.)

12000/- श्रीमती प्रेमलता जी जैन धर्मपत्नी श्री सोहनलाल जी जैन, जोधपुर, स्व. श्री जीतराज जी जीरावला की स्मृति में भेंट।

12000/- श्री उतमचन्द जी, सम्पतराज जी, श्रेणिकराज जी, धर्मचन्द जी, अशोकचन्द जी, ज्ञानचन्द जी, महावीरचन्द जी भण्डारी, चेन्नई, श्री ज्ञानलता जी म.सा. की प्रेरणा से श्रीमती राजकंवरजी भण्डारी के अठाई की, श्रीमती निर्मला जी चोरडिया के ग्यारह की, श्रीमती श्वेता जी विनायिका के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

12000/- श्री उतमचन्द जी, सम्पतराज जी, श्रेणिकराज जी, धर्मचन्द जी, अशोकचन्द जी, ज्ञानचन्द जी, महावीरचन्द जी भण्डारी, चेन्नई, स्व. श्री सज्जनराज जी भण्डारी एवं भूरीबाई जी भण्डारी की स्मृति में।

12000/- श्री मोतीलाल जी, मोहनलाल जी, ज्ञानचन्द जी, हरीशकुमार जी तातेड़, चेन्नई, श्री ज्ञानलता जी म.सा. की प्रेरणा से श्री ज्ञानचन्द जी के 5 दिवसीय उपवास के उपलक्ष्य में भेंट।

12000/- श्रीमती रेणु गौतम जी जैन, मुम्बई, अपनी माताश्री श्रीमती विमला आनन्द जी चोरडिया के 24 तीर्थंकर आराधना, मरलेचा गार्डन, चेन्नई में भाग लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

12000/- श्री सीमा विकास जी भंसाली, चेन्नई, अपनी माताश्री श्रीमती विमला आनन्द जी चोरडिया के 24 तीर्थंकर आराधना, मरलेचा गार्डन, चेन्नई में भाग लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

12000/- श्री रूपचन्द जी धारीवाल, पाली, अपनी पौत्री स्वर्गीय गरिमा धारीवाल की स्मृति में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

कार्तिक कृष्णा 8	गुरुवार	20.10.2011	आचार्य पूज्य श्री गुमानचन्द्र जी म.सा. की 210 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा 14	मंगलवार	25.10.2011	चतुर्दशी
कार्तिक कृष्णा 30	बुधवार	26.10.2011	पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 5	सोमवार	31.10.2011	ज्ञानपंचमी
कार्तिक शुक्ला 6	मंगलवार	01.11.2011	आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 49 वां दीक्षा-दिवस
कार्तिक शुक्ला 8	गुरुवार	03.11.2011	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14	बुधवार	09.11.2011	चतुर्दशी
कार्तिक शुक्ला 15	गुरुवार	10.11.2011	पक्खी, चातुर्मास पूर्ण, वीर लोंकाशाह जन्म-दिवस
मार्गशीर्ष कृष्णा 8	शनिवार	19.11.2011	अष्टमी

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।

- आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

प्लॉट नं. 170 ललवाणी भवन, आस्था हॉस्पीटल के पीछे
द्वितीय पोलो, पावटा, जोधपुर 342001 फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है ।

Opening Ceremony

of

BAGHMAR TOWER

C/o CHANARMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

BAGHMAR TOWER
218, Ashoka Road 1, Mohalla, Mysore-570001
(Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 4265431 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी ।।

With Best Compliments From :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

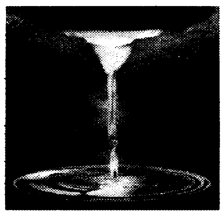
Electric Arc Furnace

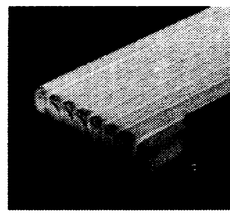
Billets

Rolling Mill

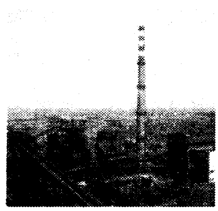
Captive Power Plant

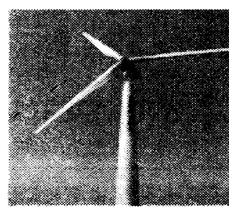
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

•●•

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आओं प्रत्याख्यान करें

जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाने और गतिशील बनानें के लिए व्रत नियम का पालन अत्यन्त आवश्यक है। मन को वश में करने का एकमात्र उपाय है - **व्रत नियम**। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में छोटे-छोटे व्रत नियम को ग्रहण कर सफल बना सकें, इस उद्देश्य के लिए ही अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा "आओं प्रत्याख्यान करें" पुस्तक का प्रकाशन विगत वर्षों से किया जा रहा है। इस वर्ष भी किया गया है। आप अपने क्षेत्र में आओं प्रत्याख्यान करें पुस्तक मंगवाने के लिए सम्पर्क करें -
राजकुमार गोलेच्छा, पाली (9829020742), **मनोज कांकरिया,** जोधपुर (9414563597), **मनीष जैन,** चैन्नई (09543068382/044-42728476)

ज्ञान का दीया जलाईये, सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डाफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097),
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729),
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164),
4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065),
5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597),
7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932),
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411),
11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

ISSN 2249-2011
आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अक्टूबर, 2011 ★ आश्विन, 2068

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।